शायरी के नये दौर

तीसरा दौर

गोयलीय

ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला
सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

प्रथम संस्करण
१९६० ई०
मूल्य [illegible] रुपये

प्रकाशक
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थाङ्क—१०४

शाइरीके नये दौर

तीसरा दौर

उर्दूके ख्याति-प्राप्त क़ौमी शाइर [राष्ट्र-कवि]

हज़रते साग़र निज़ामीका सर्वश्रेष्ठ

कलाम और परिचय

भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

उल्फ़त है मेरी नस्ल, मुहब्बत मेरा मज़हब
अफ़ग़ान हूँ, हिन्दी हूँ, न तुर्की हूँ न शामी

इक आग़ोशे-तमन्ना वा, ज़मींसे आस्माँ तक है
मुहब्बत ही मुहब्बत है मेरा क़ब्ज़ा जहाँ तक है

यह भी ज़िन्दाँ, वह भी ज़िन्दाँ
क्या यह मस्जिद, क्या यह शिवाले

बग़ावत जवानोंका मज़हब है 'साग़र'!
ग़ुलामी है पीरी, बग़ावत जवानी



मैं 'साग़र' हूँ अपने वतनका पुजारी

परम आदरणीय श्री राहुल सांकृत्यायनकी
पुनीत सेवामें

सहायक-सामग्री

रस-सागर—अदबी मरकज़ मेरठ-द्वारा १९३५ ई० में प्रकाशित। डबल क्राउन अठपेजी आकारके २५९ पृष्ठोंमें ३८ नज़्म, १९ गीत, १४ कविताएँ, २९ ग़ज़लें।

रंग-महल—इदारए-इशाअते-उर्दू, हैदराबाद-द्वारा १९४३ ई० में प्रकाशित। डबल क्राउन अठपेजी आकारके २०८ पृष्ठोंमें २४ नज़्म, ८ गीत-कविताएँ, ४६ ग़ज़लें।

मौज-ओ-साहिल—ताज आफ़िस कराची द्वारा १९४८ में प्रकाशित। डबल क्राउन सोलहपेजी आकारके ११९ पृष्ठोंमें ३६ नज़्में।

एशिया—(मासिक पत्र) अदबी-मरकज़ हिन्द-पब्लिशर्ज़ बम्बई-द्वारा प्रकाशित। जून १९४१ से जनवरी १९५० ई० तक उपलब्ध कुल २२ अंक, पृष्ठ २२०० के लगभग।

हस्तलिखित—अप्रकाशित नवीन कलाम, परिचय आदि फुलिस्केप साइज़के १२५ पृष्ठ।

सहयोग-प्राप्त

सहृदय मित्र हज़रत मुहम्मद इस्माइल साहब चित्रकारने हस्तलिखित १२५ पृष्ठोंकी हिन्दी लिपि की है।

ज्योतिपाचार्य्य पं० देवीशरणजी शास्त्रीने प्रेस-कापी तैयार की है।

आयुष्मान् श्रीकान्त, स्नेहशील और ज्ञानपीठके मैनेजर श्री बाबूलाल फागुल्लके लगातार तक़ाज़ोंने पुस्तकको प्रकाशित कराया है।

डालमियानगर, बिहार
२६ नवम्बर १९५९ ई०



विषय-सूची

प्यारा भारत

मीठी बोली

ग़ज़लें और रुबाइयाँ

नाटक

सागरका परिचय

सागरकी शाइरी

प्यारा भारत

•

८-३-१

तुलूए-आज़ादी[1]

१५ अगस्त १९४७ ई० में भारत परतन्त्रताके बन्धन काटकर स्वतन्त्र हुआ तो 'सागर'के रोम-रोमसे उत्साह-उमंग छलक पड़े। उसी भावावेशमें आपने यह नज़्म कही है। जिसके एक-एक शब्दसे आपकी अन्तरात्माके भाव प्रस्फुटित हो रहे हैं—

आजकी सुबह है शबहाए-तमन्नाकी सहर[2]
यह नये साग़रो-मै, जामो-सुबू लाई है
आजकी सुबह! मेरे कैफ़का[3] अन्दाज़ न कर
दिले-वीराँमें[4] अजब अंजुमन-आराई[5] है
आजकी सुबह है शबहाए-तमन्नाकी सहर
आजकी सुबह मेरे कैफ़का अन्दाज़ न कर

रूहे-मुतरिबमें[6] नये रागने अँगड़ाई ली
साज़[7] महरूम[8] था, जिस धुनसे वह धुन जाग उठी
पर्दए-साज़से तूफ़ाने-सदा फूट पड़ा
रक़्सकी[9] तालमें इक आलमे-नौ[10] झूम उठा
हँस पड़े नग़मए-शादाबसे टूटे हुए साज़
हो गई आबरुए-साज़ शिकस्ते-आवाज़

१. स्वतन्त्रताका सूर्योदय, २. आशा-रजनीका प्रभात, ३. उमंगका, मस्तीका, ४. उजाड़ हृदयमें, ५. महोत्सव, जलसा, ६. संगीतज्ञकी आत्मामें, ७. वाद्य, ८. रिक्त, ९. नृत्यकी, १०. नवीन संसार।

जाग उठे ज़ह्ने-मुसव्विरमें[1] नये ख़त नये रंग
नये ख़ाके, नये इज़हार, निराले अरज़ंग[2]
फ़िक्रे-मेमारमें[3] सोये हुए ख़ाके उभरे
दिले-शाइरमें नई हिस[4], नये जज़्बे[5] उभरे
रूहे - तख़रीबमें[6] महराबो-दरो - बाम[7] ढले
पर्दए-ख़ाकमें मीना-ओ-मै-ओ-जाम ढले

बर्क़के हाथमें नक़्शा है चमनबन्दीका[8]
कफ़े - तूफ़ानमें साहिलरसांका मुज़दा[9]
यह ज़मीं ख़ित्तए-फ़िरदौसको[10] शर्माने लगी
गुले-अफ़सुर्दासे[11] नौख़ेज़ महक[12] आने लगी
ख़ुश्क सहराओंसे पैग़ामे-बहार[13] आने लगे
खेत मुसकाने लगे, झूम उठे, गाने लगे
रूए-इफ़लासपै[14] हँसती हुई सुर्ख़ी दौड़ी
रुख़पै आसूदगियोंके[15] नई मस्ती दौड़ी
आज सदियोंके अँधेरेको मिला ख़िलवते-नूर[16]
आज किरनोंकी तमन्नाका[17] है नौरोज़ ज़हूर[18]

१. चित्रकारके मस्तिष्कमें, २. चित्रकला सम्बन्धी ग्रन्थ, ३. मूर्तिकारके चिन्तनमें, ४. चेतना, ५ भाव, ६. वीरानेमें, ७. महल बने, ८. बिजली जो उद्यानको उजाड़नेमें तत्पर रहती थी, आज उसके निर्माणमें उद्यत है, ९. नदीकी बाढ़ किनारेपर पहुँचानेका विचार रखती है, १०. जन्नतको, ११. मुर्झाये फूलोंसे, १२. ताज़ा सुगन्ध, १३. बहार आनेके संकेत, १४. दरिद्रताके मुखपर, १५. खुशहालीके गालोंपर, १६. प्रकाशका परिधान, १७. पुरानी इच्छाओंका, १८. नवीन उदय।

नई किरनें, नई ख़ुशबू, नई ज़ौ[1] लाई है
नई धरती, नये आकाश, नये शम्सो-क़मर[2]
आजकी सुबह है, शबहाए-तमन्नाकी सहर
आजकी सुबह ! मेरे कैफ़का अन्दाज़ न कर

नग़मए-सुबहसे[3] सहराओ-जबल[4] गूँज उठे
झोंपड़े गूँज उठे, रंगमहल गूँज उठे
बादाकश[5] अब तेरे मजबूर कहाँ है साक़ी !
है यह आलम कि ज़माँ और मकाँ[6] है साक़ी !
ख़ारो-गुल[7], शम्सो-क़मर दश्तो-दअ्‌न हैं साक़ी !
बाग़ो-सहराओ-सबा, सरवो-समन हैं साक़ी !
ज़िन्दगी रक़्समें[8] है दोशपै मैख़ाना[9] लिये
तिश्नगी[10] ख़ुद है छलकता हुआ पैमाना लिये
आजकी सुबह है रंगीन मनाजातकी[11] रात
आजकी सुबह है मैराजे-ख़राबातकी[12] रात
मौजे-बादा[13] मेरी टूटी हुई अँगड़ाई है
हर नफ़स[14] जाम[15] है, हर गाम[16] है दौरे-साग़र
एक नया मैकदए-फ़िक्रो-नज़र लाई है
आजकी सुबह मेरे ज़र्फ़का[17] अन्दाज़ा न कर
आजकी सुबह है शबहाए-तमन्नाकी बहार

---

१. प्रकाश, २. सूर्य-चन्द्र, ३. प्रातःकालीन संगीतसे, ४. जंगल और पर्वत, ५. मद्यप, ६. युग और देशमें नवीन वातावरण, ७. काँटे-फूल, ८. नृत्यमें, ९. कन्धेपर मधुशाला लिये हुए, १०. प्यास ११. प्रार्थना करनेकी, दुआएँ माँगनेकी, शुभकामनाओंकी, १२. उन्नतिकी चरमसीमा, १३. शराबकी लहर, १४. साँस, १५. मद्यपात्र, १६. क़दम, चाल, १७. पात्रताका।

इक जहाने-मै-ओ-मीना-ओ-सुबू[1] है इसमें
जादए-हक़के[2] शहीदोंका लहू है इसमें
सरफ़रोशीए-मुसलसलके यह जश्नोंकी अमीं[3]
लाख नौरोज़े-शहादतकी यह तक़वीम हसीं[4]
कितने पुरशोर सलासिलकी मुसलसल[5] झंकार ?
कितने हल्क़ोंकी सदा[6], कितनी सदाओंका निसार[7] ?
कितने रख़शन्दा-ओ-मख़मूर सुहागोंकी[8] बहार ?
कितने नग़मोंका[9] लहू कितने सितारोंकी पुकार ?
कितने फूलोंकी महक, कितने रबाबोंकी[10] सदा ?
कितने अंजुमकी[11] चमक, कितने चिराग़ोंकी ज़िया[12] ?
कितनी रातोंके अँधेरोंने सँवारा है इसे ?
कितने ख़्वाबोंके तलातुमने[13] उभारा है इसे ?
कितने ज़ुल्मतसे[14] निकलकर यह किरन आई है ?
कैसे गरदाबसे[15] टकराई है यह कश्तीए-ज़र[16]
चोट हर यादे-गुज़िश्ताकी[17] उभर आई है
आजकी सुबह है शबहाए - तमन्नाकी सहर
आज हंगामए-अहसासका[18] अन्दाज़ा न कर

—स्वयं 'साग़र' द्वारा प्रेषित

१. मदिरा और मदिरापात्रोंका एकीकरण, २. सत्य-मार्गपर बलिदान होनेवालोंका, ३. सर कटवाते रहनेके लगातार प्रयत्नोंकी धरोहर, ४. लाखों बलिदानोंकी सुन्दर कृति, ५. क़ैदियोंके हाथ-पाँवकी बेड़ियोंकी क्रमबद्ध झंकार, ६. आवाज़, ७. बलिदान, ८. हँसते हुए नशीले सुहागोंकी, ९. गीतोंका, १०. वाद्ययन्त्रोंकी (एक विशेष वाद्यका नाम) ११. नक्षत्रोंकी, १२. चमक, रोशनी, १३. उलट-फेरने, जोशने, उत्साहोंने, १३. अँधेरेसे, १५. भँवरसे, १६. सोनेकी नाव, १७. भूतकालीनकी, १८. भावनाओंकी तीव्रताका ।

हिन्दोस्ताँ

यह नज़्म १९५४ ई० में कही थी—

हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान
मेरा मान, मेरी आन, मेरी शान
मेरा बल, मेरा कस, मेरा मन, मेरा दहन[1], मेरा ध्यान, मेरा ध्यान,
मेरा सत, मेरा मत, मेरी लै, मेरा गीत, मेरा गान, मेरा गान
मैं क़ुर्बान, मैं क़ुर्बान, मैं क़ुर्बान
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान
यह गगन, यह जमन, यह समन[2], यह चमन, यह बहार, यह बहार, यह बहार
मोरकी सावनी यह पपीहे की पी, यह निखार, यह निखार, यह निखार
हल उठाये हुए यह किसान
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान
मेरा आज, मेरा कल, मेरा दुःख, मेरा सुख, मेरी जान, मेरी जान
मेरा साज़, मेरा गीत, मेरी ताल, मेरा सुर, मेरी तान, मेरी तान
ऐ महान, ऐ महान, ऐ महान
हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान
जब तलक जलकी इक बूँद सागरमें है
जब तलक इक सितारा भी चक्कर में है

---

१. मुख, २. चमेलीके फूल।

जब तलक ज़िन्दगी मुसकराती है याँ
जब तलक चाँदनी खिलखिलाती है याँ
तेरा झंडा उठाये रहेंगे जवाँ

हम जवान, हम जवान, हम जवान
ज़िन्दाबाद हिन्दोस्तान, हिन्दुस्तान
मेरा मान, मेरी आन, मेरी शान

'साग़र'-द्वारा

सुबहे-वतन

[२६ जनवरी १९५५ के गणतंत्र दिवस पर]

ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन[1] !!
ऐ रूहे-बहार[2] ! ऐ जाने-चमन !!
ऐ मुतरिबे-मा[3] ! ऐ साक़ी ए-मन ! ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!
ले जोशे-जुनूँ की ज़र्बोंसे[4] ज़ंजीरे-ग़ुलामी तोड़ ही दी
जमहूरके संगी पंजेने[5] शाहीकी[6] कलाई मोड़ ही दी
तारीख़के[7] ख़ूनी हाथोंसे छीना है तेरा सीमीं दामन[8]
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !
फिर लौटके आया सदियोंमें, इक़बालो-तरबका सैयारा[9]
क़रनोंमें[10] उफ़क़पर[11] फिर चमका, पस्तीके अँधेरोंका मारा[12]
हैराँ-हैराँ, ख़न्दाँ-ख़न्दाँ, नाज़ाँ-नाज़ाँ, रोशन - रोशन
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!
सोये हुए ज़र्रे[13] जाग उठे, अनवारे-सहर बेदार[14] हुए
अहसासे-ज़मीं[15] बेदार हुआ, अफ़कारे-बशर[16] बेदार हुए
बिस्तरसे ख़ज़फ़रेज़े[17] उट्ठे, और लालो-गुहर[18] बेदार हुए
आँखोंको मला गुलज़ारोंने शाखों पै समर[19] बेदार हुए
नैनोंसे मस्ती बरसाती लो जाग उठी हस्तीकी दुलहन
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!

---

१. मेरे देशका प्रातःकाल, २. बहारोंकी आत्मा, ३. हमारा गायक, ४. उमंगों और उत्साहतकी लगन रूपी प्रहारोंसे, ५. प्रजातन्त्रके फ़ौलादी हाथोंने, ६. बादशाहतको, ७. इतिहासके, ८. मूल्यवान परिधान, ९. कीर्ति-मुखका नक्षत्र, १०. बहुत असेंमें, मुद्दतोंमें, ११. आकाशपर, १२. पतन रूपी अँधेरे द्वारा छिपाया हुआ, १३. कण, १४. प्रातःकालीन प्रकाश जाग उठा, १५–१६. पृथ्वीकी चेतना और मानवकी संज्ञा जागृत हो गई, १७. मार्गके ठीकरे-कंकर, १८. लाल और मोती, १९. फल ।

सुनसान बयाबानोंमें है इक, जज़्बए-गुलशन आराई[1]
वीरान खण्डहरोंमें लेता महलोंका तसव्वुर[2] अँगड़ाई
सीपीकी रुपहली झोलीमें हैं आज हज़ारों दुर्रे-अदन[3]
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!

ज़र्रोंमें[4] करवट लेने लगे सौ लाला रुख़ानो-माहेज़बीं,[5]
संगीन चटानोंमें जागे, इसनामके ख़द्दो-ख़ाले-हसीं[6]
है दैर[7] कि काबा क्या जाने, है कौन-सा आलम ज़ेरे-ज़मीं
मसजूद[8] नहीं है कोई भी, सज्देमें मगर झुकती हैं जबीं[9]
नक़्क़ाश[10] है तेरी परछाईं, आज़ार[11] है तेरे सूरजकी किरन
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!

आहनकी सलाबतमें[12], उभरा इक नाज़ुक जज़्बा[13] नर्मीका
फूलोंकी लताफ़तमें[14] उमड़ा आहन[15] बन जानेका जज़्बा
झरनोंकी ख़मोशीको हसरत[16] है सैले-बयाँ[17] बनजानेकी
सदियोंकी उदासीको ज़िद है, इक नुत्क़े-जवाँ[18] न जानेकी
हर साँसमें पैहम[19] ग़ल्ताँ है तग़ईरके[20] सीनेकी धड़कन
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!

---

१. उद्यान-निर्माणकी भावना, २. चिन्तन, ख़याल, ३. मोती, ४. रेतके कणोंमें, ५. रक्त कपोल और चन्द्र जैसे मुख, ६. कलाके आकार-प्रकार, ७. मन्दिर, ८. उपास्य, ९. मस्तक, १०. कलाकार, ११. एक प्रसिद्ध मूर्तिकारका नाम, १२. लोहेकी सख्तीमें, १३. कोमल भाव, १४. सौन्दर्यमें, कोमलतामें, १५. लोहा, १६. पुरानी चुप्पी, इच्छा, बहुत दिनोंके मौनको अभिलाषा है, १७. वार्त्तालाप रूपी बाढ़ बन जानेको, मौन तोड़ देनेकी, १८. युवकोचितवाणी, १९. लगातार, २०. क्रान्तिके ।

परबत-परबत, सागर-सागर, परचम[१] अपना लहराता है
महलोंपै, मिलोंपै, क़िलओंपर अज़मतके तराने[२] गाता है
गुलबार रदाएँ[३] - आज़ादी, सरशार जवानीका परचम[४]
यह अम्नके नग़मोंका मुतरिब[५], ख़ामोश बग़ावतका यह अलम[६]
तहज़ीबका यह ज़रीं आँचल[७], नग़मेका यह रंगीं दामन
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!

क़न्दीले-सफ़र[८], नूरे-मंज़िल[९], ख़ुर्शीदे-सहर[१०], शमए-साहिल[११]
यह ख़ूने-शहीदाँका मख़ज़न[१२], यह दर्दे-रफ़ीक़ाँका हासिल[१३]
यह अम्नका लहराता गैसू[१४], यह सिद्क़े[१५]-मुहब्बतका दरपन[१६]
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!

अब खेतोंमें गन्दुम[१७] ही नहीं, सोना भी उगेगा ऐ साक़ी !
बख़्शेगा तग़य्युर[१८] भूकोंको इकरोज़ फ़राजे-रज़्ज़ाक़ी[१९]
अब हीरे-मोती उगलेंगे यह बाग़ो-सहरा, कोहो-दमन[२०]
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!

---

१. झंडा, २. प्रतिष्ठाके गीत, ३. फूलोंकी चादर ओढ़े हुए, ४. नशीले यौवनका झंडा, ५. सुलह-शान्तिके संगीतका गायक, ६. शान्त विद्रोहकी यह ध्वजा, अहिंसक लड़ाईकी ध्वजा, ७. सभ्यताका सुवर्ण आँचल, ८. सफ़रकी लालटेन, ९. लक्ष्य मार्गका प्रकाश, १०. सुबहका सूरज, ११. दरिया किनारेका दीपक, १२. शहीदोंके ख़ूनका भण्डार, १३. हितैषियोंकी उमंगोंका धन, १४. सुख शान्तिकी लहराती ज़ुल्फें, १५–१६. सत्य और प्रेमका दर्पण, १७. अन्न, १८. इन्क़िलाब, १९. आजीविका देनेकी व्यवस्था, २०. रेगिस्तान, पर्वत, जंगल।

गाँवोंको सुनायेंगे मुज़दा[१] इमसारे-हसीं[२] बनजानेका
ज़र्रोंको[३] संदेसा देंगे तड़पकर महरे-जबीं[४] बनजानेका
और तेरे उफ़क़की[५] लालीसे होते हैं सितारे भी रोशन
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!

अब ख़ाके-क़दम मजबूरोंकी[६] बरसायेगी दुनियापर सोना
अब अतलसकी[७] क़िस्मत होगी, पैराहने-महनतकश[८] होना
पड़ते ही निगाहे-साइक़ो[९] ज़न जल उट्ठेगा हर नज़्मे-कुहन[१०]
ऐ सुबहे वतन ! ऐ सुबहे-वतन !!

खेतोंकी ज़मीं ऊँची होकर फ़िरदौससे[११] रिश्ता जोड़ेगी
अब हलकी अनी सरमस्तीमें आकाशके तारे तोड़ेगी
वह दिन भी अब कुछ दूर नहीं जब होंगे सैयारे[१२] आँगन
ऐ सुबहे-वतन ! ऐ सुबहे-वतन !

'साग़र' द्वारा

१. खुशख़बरी, २. सुन्दर शहर, ३. धूलके कणोंको, ४. चन्द्रमा, ५. आकाशकी, ६. असहायोंके पाँवकी धूल, ७. एक क़ीमती कपड़ेका नाम, ८. श्रमिकका परिधान, मज़दूरका लिबास, ९. बिजलीकी नज़र, १०. पुरानी व्यवस्था, ११. जन्नतसे, १२. नक्षत्र ।

भारत-विभाजनके दिनोंमें जब कि समूचा भारत साम्प्रदायिक हत्या-काण्डोंसे रक्तरंजित हो रहा था, भारतकी प्राचीन प्रतिष्ठा और कीर्ति मज़हबी दीवानों द्वारा अपवित्र हो रही थी, महल और झोपड़े ही नहीं, मन्दिर-मस्जिद भी नष्ट-भ्रष्ट किये जा रहे थे। माता-पिताओंकी आँखोंके सामने उनके नूरे-नज़र छीने जा रहे थे, भाइयों और पतियोंके समक्ष बहनों और पत्नियोंका सतीत्व-हरण हो रहा था, समस्त वातावरण साम्प्रदायिक उत्पातोंसे दूषित एवं विषाक्त हो चुका था, करोड़ों नर-नारी, आबाल-वृद्ध, रोगी एवं अशक्त, मौलवी और पण्डित, नेता एवं अनुयायी, मनुष्य और शैतान सभी विभाजनके अभिशाप स्वरूप शरणार्थी-शिबिरोंमें जानेको विवश हुए थे और अपनी जन्म-भूमिका ममत्व त्यागकर निर्वासित हो रहे थे।

'साग़र'को भी अपने परिवारके साथ बम्बईके एक शरणार्थी कैम्पमें बाध्य होकर जाना पड़ा था। उनके हिन्दू पड़ोसियोंने ही सुरक्षाकी दृष्टिसे वहाँ जानेको मजबूर कर दिया था, ताकि साग़र-जैसी भारत-विभूतिपर किसी तरहकी आँच न आने पाये और वहाँ वे सुरक्षित रह सकें। साग़रके व्यक्तित्वसे कैम्प-अधिकारी परिचित नहीं था। अतः जब उसने देखा कि कैम्पमें आनेवाले हज़ारोंकी संख्यामें रोज़ाना पाकिस्तानको प्रस्थान कर रहे हैं और ये हैं कि कैम्पमें अनेक कष्टों और असुविधाओंके बावजूद बेफ़िक्र पड़े हुए हैं और यहाँसे टलने तकका नाम नहीं लेते। तब वह स्वयं आकर बोला—"आप पाकिस्तान किस रोज़ जा रहे हैं?"

साग़रने अचम्भेमें पूछा—"हम पाकिस्तान क्यों जायेंगे? हमारा वतन तो हिन्दुस्तान है।"

कैम्प-अधिकारी जवाब सुनकर सटपटाया, फिर भी उसने कहा—"अब आपका वतन पाकिस्तान है। हिन्दुस्तानमें आपके लिए अब जगह नहीं।"

साग़रने तड़पकर जवाब दिया—"मेरे हिन्दुस्तानमें मेरे लिए जगह नहीं तो फिर किसके लिए होगी ? मरनेके बाद क़ब्रको भी अगर यहाँ दो गज़ ज़मीन नसीब न होगी, तब भी मैं अपने वतनमें रहूँगा। जीते जी इसीके नग़मे गाऊँगा और मरकर भी इसीकी ख़ाकमें मिल जाऊँगा।"

कैम्प-अधिकारी अपना-सा मुँह लेकर चला गया और जब उसे साग़र-की खोज करके सुरक्षित रखने और यथोचित बँगला आदि देनेके सम्बन्धमें डाक्टर राजेन्द्रप्रसादजी (वर्तमान राष्ट्रपति) का तार मिला तो वह सकतेमें आ गया कि मैंने भारतकी इस विभूतिको कहाँ कूड़ेमें डाल रक्खा था।

जिस व्यक्तिने उस संकटके समय भी अपना मानसिक सन्तुलन बनाये रक्खा और पाकिस्तान जाकर बसना जिसने हेय समझा, उसका देश-प्रेम किसी क्षणिक आवेश या आन्दोलनका परिणाम नहीं हो सकता। उसका देश-प्रेम तो गो-बच्छके समान स्वाभाविक और निष्काम है।

साग़रने जीवन-भर देशके गीत गाये हैं। उनके हर रोमसे, हर साँससे देश-प्रेम प्रस्फुटित होता रहा है। साग़र भारतीय जागरणमें उर्दूका अकेला क़ौमी शाइर है। उनकी सैकड़ों नज़्मोंमें-से चन्द नज़्मोंको संक्षिप्त रूपमें यहाँ दिया जा रहा है—

वतनियत

[४ में-से १ बन्द]

सागरका विश्वास है कि जो देश-भक्त नहीं, उसे अपने देशमें मरने-जीनेका अधिकार नहीं।

आदमीको वतनियतका अगर पास न हो,
उल्फ़ते-बाग़की फूलोंमें अगर बास न हो,
फूलको फूल ना इन्सानको इन्साँ कहिए
इसे हैवाँ[1] उसे मरदूदे-गुलिस्ताँ[2] कहिए,
ख़िल्कतन[3] उसका महल[4] सहने-गुलिस्ताँ में नहीं
फ़ितरतन[5] उसकी जगह आलमे-इमकाँमें[6] नहीं,
हम उसे ख़तरए-तहज़ीबे-मुदन[7] कहते हैं,

-रस साग़र

१. पशु, २. उद्यानका अभिशाप, कलंक, ३. जन्मतः, ४. स्थान ५. स्वभावतः, ६. संसारमें, ७. सभ्यताके लिए खतरा।

नया पुजारी

[६ में-से २ बन्द]

ऋषिकेशमें कोई बैठा हुआ है
कोई हरकी पैड़ीके गुन गा रहा है
बनारसकी गलियोंमें फिरता है कोई
मज़ारों पै जाके कोई नाचता है
कलीसामें[1] है, महवे-तसलीस[2] कोई
कोई दैरमें[3] मूर्ती पूजता है,
मगर मेरा ज़ौक़े-परस्तिश[4] जुदा है
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतनका पुजारी

वतन वह वतन वह महकता शिवाला
वह राहतका[5] मन्दिर मुहब्बतका काबा,
ख़तीबे-हिमालाका[6] ज़रकार-मिम्बर[7],
वह जमनाकी गोदी, वह गंगाका झूला,
वह मन्दिर है मेरा वतन जिसके अन्दर
हज़ारों ख़ुदा हैं तो लाखों कलीसा
मगर मेरा ज़ौक़े-परस्तिश जुदा है
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतनका पुजारी

---

१. गिरजामें, २. क्रासकी उपासनामें लीन, ३. मन्दिरोंमें, ४. उपासनाका लक्ष, शौक़, ५. सुख-चैनका, ६. प्रेम-मन्दिर, ७. हिमालय रूपी उपदेशकका, ८. व्याख्यान देनेका सुवर्ण मंच ।

वहाबी[१] है कोई, कोई सोमनाती[२],
मआबिद[3] किसीने बनाये हैं ज़ाती

हर-इकसे मुहब्बत, हर-इकसे अख़्वत[४]
मैं हिन्दी हूँ मज़हब मेरा कायनाती[५]

मुहब्बतसे ऊँचा नहीं कोई मज़हब,
मुहब्बतसे ऊँची नहीं कोई ज़ाती

मगर मेरा ज़ौक़े - परस्तिश जुदा है
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतनका पुजारी

—रस-सागर

१. मुसलमानोंका वह फ़िर्क़ा, जो मज़हबी उसूलोंका कट्टर पाबन्द होता है, २. शैव, (हिन्दूसे अभिप्राय है) ३. उपासनास्थल, ४. भ्रातृभाव, ५. विश्वबन्धुत्व ।

हिन्दुस्तान

[१३ में-से २ बन्द]

....

अब हमारे हाथ हैं, तेरी हिफ़ाज़तके लिए
अब हमारा ख़ून है, तेरी हिमायतके लिए
रूह[1] अब तैयार है, अहसासे-ग़ैरतके[2] लिए
ऐ वतन! अब वक़्फ़[3] हैं, हम तेरी ख़िदमतके लिए
कर चुके हैं अज़्मे-रासिख़[4] आज अपने दिलमें हम
सदरे-महफ़िल[5] बनके बैठेंगे तेरी महफ़िलमें हम

....

ख़ूनसे सींचेंगे बर्गो-बार[6] तेरे ऐ वतन!
ख़ुद बनेंगे ख़ादिमो-दिलदार[7] तेरे ऐ वतन!
लूट सकता है बहारे-मस्तिए-गुलज़ार कौन?
हम अभी ज़िन्दा हैं हो सकता है फिर हक़दार कौन?

—रस-सागर

१. प्राण, २. आत्म-सम्मानके लिए, ३. समर्पित, ४. पक्का इरादा, ५. सभाध्यक्ष, ६. फूल-पत्ती, ७. सेवक और भक्त (प्रेमी)।

परचम

[२६ में-से ३]

तेरी बुनियादें वतनमें अब हिला सकता है कौन ?
तुझको औजे-कामयाबीसे[1] गिरा सकता है कौन ?

....

तेरी ख़ातिर ख़ाक और ख़ूँ तकमें अट जायेंगे हम
तेरी इज़्ज़तके लिए मैदाँमें कट जायेंगे हम

....

अपनी लाशोंपर तुझे क़ायम करेंगे एक बार,
तेरे दामनको बना देंगे फ़ज़ाए - लालाज़ार[2]

—रस-सागर

१. सफलताकी ऊँचाईसे, उत्थानसे, २. उद्यान-जैसा शोभायुक्त वातावरण ।

आज़ादीका तराना

[१० में-से १]

हम आजसे हैं आज़ाद·····आज़ाद·····आज़ाद
ले अपना क़फ़स[1] सय्याद[2]·····सय्याद·······बर्बाद
हाथोंपै है सर और जान
आँखोंमें हैं, सौ तूफ़ान
इंसान हैं हम इंसान
अब होशमें आ सय्याद·····सय्याद······बर्बाद
हम आजसे हैं, आज़ाद·····आज़ाद·····आज़ाद

—रस-सागर

१. पिंजरा, २. अहेरी।

आफ़ताब

[१५ बन्द में-से १]

सागर उन राष्ट्र-वादियोंमें या साम्यवादियोंमें नहीं, जो स्वयं तो आज़ाद रहना चाहते हैं, परन्तु दूसरे देशोंको पराधीन बनानेके प्रयास करते रहते हैं। वे अपने देशको ही नहीं, समूचे विश्वको स्वतन्त्रताका सुख भोगते देखना चाहते हैं—

ग़ुंचओ-गुल[1] हों, रिहा और आशियाँ[2] आज़ाद हो,
बुलबुलें आज़ाद हों, और गुलसिताँ आज़ाद हो,
एशिया आज़ाद हो, हिन्दोस्ताँ आज़ाद हो,
पंजये-ज़ुल्मो-सितमसे कुल जहाँ आज़ाद हो,

हम भी हों आज़ाद तेरी ही शुआओंकी[3] तरह
और दुनियामें रहें ज़िन्दा शुजाओंकी[4] तरह

—रस-सागर

१. फूल और कली, २. नीड़, ३. किरणोंकी, ४. वीरोंकी।

मैं चाँद न देखूँगा

[१२ मैं-से ७]

भारतकी पराधीनतासे 'साग़र' इतने अधिक व्यथित हैं कि वे ईदका चाँद देखना भी उचित नहीं समझते। ग़ुलामोंका कोई दीन-धर्म नहीं, कोई मान-प्रतिष्ठा नहीं। इसलिए साग़र पहले ग़ुलामीसे निजात चाहते हैं—

करूँ ऐ हमनफ़स[१] ! नज़्ज़ारए-बज़्मे-फ़लक[२] क्योंकर
कि फ़ुरसत ही नहीं ज़ानूए-ग़मसे[३] सर उठानेकी

अक़ीदतकी बलन्दीपर[४] नई दुनिया बनाऊँगा
मैं सिजदोंमें उठा लाया हूँ ख़ाक इक आस्तानेकी
वह दुनिया आस्माँ जिसपर न हो और चाँद हों लाखों
जिन्हें क़िस्मत न हो आदत निकलकर डूब जानेकी
चमन हों, वह चमन जिसमें ख़िज़ाँ आते हुए लरज़े
इरम[५] बन-बनके झूमें जिनमें शाख़ें आशियानेकी
जहाँ वहदत[६] ही वहदत हो, मुहब्बत ही मुहब्बत हो
ज़रूरत ही न हो आईने-ख़ैरो-शर[७] बनानेकी
जहाँ हर साँसमें बूए-बक़ाए-जा-विदानी[८] हो,
जहाँ बाक़ी न हों यह ज़हमतें[९] मिटने-मिटानेकी
ग़ुलामी और पामालीको[१०] जिस दिन माँद[११] देखूँगा
तो फिर ऐ हम-नशीं ! मैं सर उठाकर चाँद देखूँगा

—रस-सागर

१. मित्र-सहयोगी, २. आकाशरूपी सभाका अवलोकन, ३. दुःखरूपी घुटनेसे, ४. विश्वासकी ऊँचाईपर, ५. स्वर्ग, जन्नत, ६ एकता, ७ नेकी और बदीके क़ानून, ८. अमर जीवनकी सुगन्ध, ९. तकलीफ़ें, परेशानियाँ, १०. परतन्त्रता और हीनावस्थाको, ११. मिटते हुए, निरीह, मन्द।

वही कहो तो फिर ज़रा

[१५ में-से ५ बन्द]

वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम अगर दिलेर हो
तो उट्ठो अपने साथ नौजवान एक फ़ौज लो
तमाम देस उठ खड़ा हो इस स्वभावसे उठो
वतनकी राहमें बहाओ अपने गर्म ख़ूनको
वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम बड़े दिलेर हो

हँसी-हँसीमें क्यों वतनका ज़िक्र तुमने कर दिया
मेरी रगोंमें गर्म-गर्म ख़ून दौड़ने लगा
मेरी बहादुरीमें एक, जज़्बए-जवाँ[1] बढ़ा
जल उट्ठा फिर बुझा हुआ, चिराग़ मेरी रूहका
वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम बड़े दिलेर हो

ज़मींसे आसमान तक, इक आग-सी लगाऊँगा
सिपाहे-दुश्मनाको[2] काहकी[3] तरह जलाऊँगा
फ़ज़ामें परचमोंकी ख़ूब धज्जियाँ उड़ाऊँगा
वतनको ग़ासिबोंके[4] हाथसे मैं छीन लाऊँगा
वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम बड़े दिलेर हो

१. युवकोचित उत्साह, २. शत्रु-सेनाको, ३. घासकी, ४. ज़ालिमोंके।

फ़ज़ा[१] तमाम मेरे नूरे-ख़ूँसे जगमगायगी
न आया मैं तो मेरी लाश तो ज़रूर आयगी
तुम्हारे सामने इन्हीं लबोंसे मुसकरायगी
यही कहोगी बार-बार और तुम्हें रुलायगी
वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम बड़े दिलेर हो

हुई जो मुझको फ़तह फिर तो सरफ़राज़[२] आऊँगा
मैं अपनी नुसरतोंके[३] गीत मस्त होके गाऊँगा
रबाबे-शौक़[४] झूमकर सुरूरमें[५] बजाऊँगा
बतौर इन्तक़ामे-इश्क़ तुमको मैं बनाऊँगा
वही कहो तो फिर ज़रा कि तुम बड़े हसीन हो
हसीन[६] हो, लतीफ़[७] हो, जमील[८] हो, मतीन[९] हो

—रस-सागर

१. वातावरण, २. उन्नत मस्तक लिये हुए, ३. विजयोंके, ४. उत्साहका सितार, ५. मस्तीमें, ६. रूपवान, ७. कोमल, सुरुचिपूर्ण, ८. सुन्दर, ९. शिष्ट।

मवाज़ना

[१४ में-से २]

ताजो - नगींकी आबरू[1] सुर्मए - चश्मे - आर्ज़ू[2]
दुर्रे-अदन गुहर सही,[3] ख़ाके-वतन कुछ और है

तेरे ख़यालमें फ़क़त महरो-क़मरसे है बुलन्द[4]
मेरी नज़रमें अज़मते-ख़ाके-वतन[5] कुछ और है

—मौजो-साहिल

१. ताज और जवाहरातकी इज़्ज़त, २. इच्छाओंकी आँखोंका काजल, ३. अदन समुद्रका मोती, मूल्यवान मोती सही, फिर भी वतनकी धूल इन सबमें श्रेष्ठ है, ४. चन्द्र-सूर्यसे श्रेष्ठ, ५. लेकिन मेरी दृष्टिमें वतनकी ख़ाककी प्रतिष्ठा अकथनीय है।

मादरे-वतनका फ़र्मान

[८ में-से ६]

उट्ठो मेरे बेदारो जवाँ अज़्म सपूतो !
मर्दाना बढ़ो नींदके मातोंको जगा दो
जो हिन्दका बाग़ी है वह संसारका बाग़ी
संसारसे संसारके बाग़ोंको मिटा दो

तामीरे-ग़ुलामीके सतूँ[1] हैं यही ग़द्दार[2]
तामीरे-ग़ुलामीके सतूनोंको मिटा दो
जो पाँव न क़ाइम रहें, मैदानमें, काटो
जो शमअ न रोशन रहे आँधीमें, बुझा दो

पंडितका अजब रंग है मुल्लाका अजब ढंग
दोनोंको कहीं बन्द करो क़ुफ़्ल[3] लगादो
टकराए अगर जज़्बए - मर्दाने - ख़ुदासे
बातिल[4] ही नहीं हक़[5] भी अगर हो तो मिटादो

—मौजो-साहिल

१. परतन्त्रता रूपी महलके स्तम्भ, २. देश-द्रोही, ३. ताला, ४. झूठ, ५. वास्तविकता, सत्य ।

मेरा महबूब वतन

[२९ में-से १७]

क्या यही है ? मेरा महबूब वतन[1] ?
जिसपै है ज़ोम[2] मुझे, फ़ख़्र[3] मुझे, नाज़[4] मुझे
क्या यही है ? मेरा महबूब वतन ?

यह सुलगती हुई, जलती हुई, फ़िरदौसे-बदन
ख़ूने-इंसाँमें नहाई हुई गुलरंग ज़मीन
क़हतो-इद्‌बारके[5] हर घरमें जहाँ हैं डेरे
लाख बंगाल सिसकते हैं जहाँ फ़ाक़ोंसे
कालकी आँधियाँ चलती हैं जहाँ शामो-सहर[6]
पारए - नाने - शबीना है[7] जहाँ शम्सो-क़मर
जिसमें तूफ़ान हैं, इफ़्लास[8] है, सैलाब[9] है, भूक
जिसकी ले-देके फ़क़त दौलते-एहसास है भूक
जिसकी आँखोंसे बरसता है मुसलसल[10] सावन
क्या यही है ? मेरा महबूब वतन ?

बाग़बाँ जिसके बहारोंमें ख़िज़ाँ चाहते हैं
हालकी[11] गोदमें माज़ीके[12] निशाँ चाहते हैं
जिसके पैरोंमें ग़ुलामी ही की ज़ंजीर नहीं
इक रवायातकी[13] बख़्शी हुई ज़ंजीर भी है

१. प्यारी जन्मभूमि, २–३–४. अभिमान, गर्व, घमण्ड, ५. अकाल और परेशानियोंके, ६. रात-दिन, ७. सूर्य-चन्द्रकी तरह रोटियाँ भी जहाँ मनुष्योंकी पहुँचसे दूर हैं, ८. दरिद्रता, ९. बाढ़, १०. बराबर, लगातार, ११. वर्तमानकी, १२. भूतकालका युग, १३. अन्ध परम्पराओंकी।

और रवायातकी बख़्शी हुई ज़ंजीरे-गराँ[1]
अपने हल्क़ोंसे[2] बनाती है हज़ारों ज़िन्दाँ[3]
नस्ल और रंगों-वतन फ़िरक़ा-ओ-दीनो-मज़हब
रजअतो - रस्मो - रवायातो - निज़ामो - तरतीब
अहदे-माज़ीका हर-इक साँसमें मातम करना
रात-दिन अगले गुनाहोंकी हवसमें मरना
आज तक हो न सकी हमसे हिफ़ाज़त जिसकी
वक़्त रक्खेगा वोह अजदादकी[4] दौलत बाक़ी?
क़ाफ़िला नूरका जारी है सबेरेकी तरफ़
इर्तिक़ा[5] अब नहीं देखेगा अँधेरेकी तरफ़
चादरे-नूरे-सहर है शबे - रफ़्ताका कफ़न[6]
क्या यही है? मेरा महबूबे वतन?
क्या यही हैं? मेरे महबूब वतनके रहबर[7]
ख़ुद ग़रज़[8] ख़ुद निगरओ[9]-फ़ितना-ओ-शरके पैकर[10]
कुफ़्रो-इस्लामके ताजिर[11] यह मुहज़्ज़िब रहज़न[12]
जिनके किरदारसे[13] मरऊब थीं अक़वामो-उमम[14]
उन्हीं अस्लाफ़की[15] औलाद हैं यह अहले-सितम[16]
गो यह इख़लाको-मुसावातसे[17] घबराते हैं
फिर भी स्टेज़ पै तहज़ीबके गुन गाते हैं

१. भारी जंजीर, २. कड़ियोंसे, ३. क़ैदख़ाने, ४. पूर्वजोंकी, ५. उत्थान प्रगति, ६. जानेवाली रातका प्रातःकालीन प्रकाशरूपी चादर क़फ़न है, ७. नेता, ८. स्वार्थी, ९. स्वयंकी चिन्ता करनेवाले, १०. दंगा-फ़िसादके रूपक, ११. सौदागर, व्यापारी, १२. सभ्य लुटेरे, १३. आचरणसे १४. क़ौम और उम्मतें प्रभावित, १५. पूर्वजोंकी, १६. ज़ालिम, १७. सदाचार और सबको समान समझनेवाली भावनासे।

अपनी पेशानिए-अज़मतके[1] दमकनेके लिए
अपनी ख़ुर्शीदे-तमन्नाके[2] चमकनेके लिए
अपने मस्मूम तनफ़्फ़ुससे[3] बुझा देते हैं
सैकड़ों बेकसो - मासूम घरानोंके चिराग़
एक तूफ़ान-सा तूफ़ान है मंज़िलके क़रीब
ग़र्क़ हो जाये न किश्ती कहीं साहिलके क़रीब
हमनफ़स ! गर्मिए-पैग़ामे-रिहाई मत पूछ
हल्क़े लौ देने लगे और भी ज़ंजीरोंके
लाये जाने लगे ज़िन्दाँमें नये दारो-रसन
क्या यही है ? मेरा महबूब वतन ?

—सागर-द्वारा

१. महान् मस्तकके, २. अभिलाषा रूपी सूर्यके, ३. ज़हरीले साँसोंसे ।

आज़ादीका कोरस

बढ़े चलो, रुके न अब यह कारवाँ, बढ़े चलो
क़दम जवाँ है, तुम जवाँ हो, दिल जवाँ बढ़े चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो

गुलामीको पिछाड़ दो
पुराना झंडा फाड़ दो
हिमालयाको चोटी पै निशान अपना गाड़ दो
तुम्हारे पाँव चूम लेगा आस्माँ बढ़े चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो

जला दो तख़्तो - ताजको
हिला दो सामराजको
यही है जड़ फ़िसादकी, मिटा दो इस समाजको
मिटाके फिर बसायेंगे नया जहाँ बढ़े चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो

क़दम रुकें न तुम रुको
वह मंज़िल आ गई बढ़ो
हथेलियों पै सर लिये बढ़े चलो, बढ़े चलो
ज़माना है तुम्हारे साथ, बे-गुमाँ बढ़े चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो

—मौजो-साहिल

रूहे-इन्क़िलाबका तराना[1]

[१० मैं-से ६]

उठो और उठके निज़ामे-जहाँ[2] बदल डालो
यह आस्माँ, यह ज़मीं, यह मकाँ बदल डालो

यह बिजलियाँ हैं पुरानी यह बिजलियाँ फूँको
यह आशियाँ है क़दीम[3], आशियाँ बदल डालो

न कर सकेंगी यह तूफ़ाने-नौसे[4] आवेज़िश[5]
ज़माने-नूहकी[6] यह किश्तियाँ बदल डालो

गुलोंके रंगमें हो आग, पंखड़ीमें शराब
कुछ इस तरह रविशे-गुलसिताँ[7] बदल डालो

निज़ामे-क़ाफ़िला[8] बदला तो क्या कमाल किया
मिज़ाजे राहबरे-कारवाँ[9] बदल डालो

हयात[10] कोई कहानी नहीं हक़ीक़त[11] है
इस एक लफ़्ज़से कुल दास्ताँ बदल डालो

—मौजो-साहिल

१. क्रान्तिकारियोंका गीत, २. विश्व-व्यवस्था, ३. पुराना, ४. नये तूफ़ानसे, ५. मुक़ाबिला, ६. बाबा आदमके वक़्तोंकी, ७. उद्यानकी क्यारियाँ, ८. क़ाफ़िलेका प्रबन्ध, ९. यात्री दलके पथ-प्रदर्शकका स्वभाव, १०. ज़िन्दगी, ११. वास्तविकता ।

नया तराना

[११ में-से ४]

उठाओ साग़र, बजाओ बरबत, नया ज़माना नया ज़माना
वह दिन गये जब निगाहे-साक़ीपै नाचता था शराबख़ाना

कभी दबे हैं, न दब सकेंगे, मिज़ाज अपना है बाग़ियाना
कुछ अपना नुक़सान ही करेगा जो हमसे टकरायेगा ज़माना

न तुझको क़ाबू दिलो-नज़रपर, न अपनी परवाज़े-बेख़तरपर
क़फ़सको बदनाम करनेवाले ! क़फ़स तो है सिर्फ़ आबो-दाना

जुनूँने-तामीर है सलामत तो बर्क़ो-बाराँका हमको क्या ग़म
चमनकी हर शाख़को बना लेंगे फिर बहाराँका आशियाना

—मौजो-साहिल

मेरा भी लो सलाम

भारतीय जल-सेनाने फरवरी १९४६ ई० में तत्कालीन बृटिश हुकूमतसे विद्रोह किया तो उन वीर सेनानियोंका अभिनन्दन 'सागर'ने इन शब्दोंमें किया—

मेरा भी लो सलाम जिगरदार बाग़ियो !
रूठे हुओंको तुमने गलेसे मिला दिया
गूँगोंको इत्तहादका[1] नग़मा[2] सुना दिया
सोतोंको तुमने अपनी नवासे[3] जगा दिया
ज़र्बे-नवासे[4] काँप उठा जब्रका[5] निज़ाम
मेरा भी लो सलाम

तुम ज़लज़लोंकी रूह हो, तूफ़ाँका पेचो-ताब
महताबे-हुर्रियत[6] हो, बग़ावतके आफ़ताब[7]
महबूबे-रोज़गार हो, फ़र्ज़न्दे-इन्क़िलाब
आँखें मिलाके मौतसे तुमने किया सलाम
मेरी भी लो सलाम

---

१. एकताका, २. गीत, ३. वाणीसे, ४ विद्रोही वाणीकी चोटसे, ५. अत्याचारी शासन, ६. स्वतन्त्रताके चाँद, ७. विद्रोहके सूर्य ।

रूहोंमें हैं तुम्हारे ही झंडे गढ़े हुए
तारीख़[1] तक रही है तुम्हें फ़ख़्रो-नाज़से[2]
वह नग़्में[3] फूटनेको हैं जनताके साज़से
जिनमें समन्दरोंके तलातुमका[4] था पयाम[5]
मेरा भी लो सलाम

ऐ राज़दाने कश्ती-ओ-तूफ़ाँ[6]! सलाम लो
ऐ क़ौमे-बर्क़[7]! उम्मते-बाराँ! सलाम लो
बरतर्ज़े - क़ैद गबरू - मुसलमाँ सलाम लो
तुम पर निसार इशरते - दौराँ सलाम लो
ऐ साकिनाने-क़िलए-गरदाब ! लो सलाम
ऐ रहरवाने ख़ित्तए-सैलाब ! लो सलाम
मेरा भी लो सलाम जिगरदार बाग़ियो !

—मौजो-साहिल

१. इतिहास, २. अभिमानसे, ३. संगीत, ४. तूफ़ानका, ५. सन्देश, ६. जहाज़ों और तूफ़ानोंके भेदोंसे परिचितो, ७. बिजली-जैसी स्फूर्ति रखनेवालो ।

ईद

'साग़र' ईदके आगमनपर प्रफुल्ल न होकर व्यथित हो उठते हैं। क्यों व्यथित हो उठते है, इसका समाधान इन दो नज़्मोंमें मिलेगा।

[८ में-से ३]

ईद आई है लेकिन ऐ मुतरिब[1]! लिल्लाह बता किस दुनियामें ?
उस दुनियामें ? जो मक़तल[2] है कमज़ोरोंका, मक़हूरोंका[3]
उस दुनियामें ? जो दोज़ख़ है मासूमोंका[4], माज़ूरोंका[5]
उस दुनियामें ? जो मरकज़[6] है बेवाओंका, मजबूरोंका
उस दुनियामें ? जो मसकन[7] है हलवालोंका[8], मज़दूरोंका

उस दुनियामें ? उस दुनियामें ? जो ज़िन्दा है[9] मजबूरोंका
ईद आई है लेकिन ऐ मुतरिब ! लिल्लाह बता किस दुनियामें ?

१. क़व्वाल गायक, २. वधस्थल, ३. कोप-भाजनोंका, ४. भोले-भालोंका, ५. लाचारोंका, ६. केन्द्र, ७. स्थान, ८. किसानोंका, ९. क़ैदख़ाना।

मज़दूरकी कुटियामें तो नहीं, इस ईदके जलवोंका परतव[1]
उजड़ी हुई दुनियामें तो नहीं, इस ईदके जलवोंका परतव
दुनियाए-तमन्नामें तो नहीं, इस ईदके जलवोंका परतव
हाँ मनकी नगरियामें तो नहीं, इस ईदके जलवोंका परतव

दुखियारी जनतामें तो नहीं, इस ईदके जलवोंका परतव
ईद आई है लेकिन ऐ मुतरिब ! लिल्लाह बता किस दुनियामें ?

याँ आज भी लाखों दीवाने तक़दीरका रोना रोते हैं
याँ आज भी लाखों अश्कोंसे[2] आँखोंका काजल धोते हैं
याँ आज भी लाखों ताक़तवर इज़्ज़तकी दौलत खोते हैं
मौहूम मसर्रतकी[3] धुनमें उम्मीदकी खेती बोते हैं

याँ आज भी प्यासे जागे हैं, याँ आज भी भूके सोते हैं
ईद आई है लेकिन ऐ मुतरिब ! लिल्लाह बता किस दुनियामें ?

—मौजो-साहिल

१. छाया, २. आँसुओंसे, ३. झूठी खुशीकी

बेरहम रवायत [ईद]

[२४ मैं-से ६]

....

कुहन-ओ-ख़स्ता रवायातका[1] रिसता नासूर
आज़माई हुई ख़ुशियोंका पुराना दस्तूर
रोशनी हो कि अँधेरा यह चली आती है
रात हो या कि सवेरा यह चली आती है
सैकड़ों सालसे यह मुतरिबा[2] आती है युँ ही
आके यह साज़े-रवायात[3] बजाती है युँ ही

....

भाईको भाई यहाँ देख नहीं सकता है
शाइर इस नफ़रते-अफ़रादका मुँह ताकता है
ईद आई है, मगर ईद मनाऊँ क्योंकर ?
अपने एहसासे-मसर्रतको जगाऊँ क्योंकर ?
इसका आना मगर ऐ दोस्त ! नई बात नहीं
यह मेरे जुर्मे-ग़ुलामीकी मुकाफ़ात[4] नहीं

—मौजो-साहिल

---

१. जीर्ण-शीर्ण परम्पराओंका, गले-मड़े रस्म-रिवाजोंका, २. मीरासन गानेवाली, ३. रीति-रिवाजोंका बाजा, ४. प्रतिकार, बदला ।

फ़िरक़ा-परस्त

'सागर' सम्प्रदायवादियोंको देशोन्नतिमें सबसे बड़ा बाधक समझते हैं—

[१५ में-से ६]

न मज़हबसे इसे मतलब, न मशरबसे[1] इसे मतलब
न अपनी क़ौमियतके[2] अस्ल मतलबसे इसे मतलब
यह इक वारफ़्तए-एज़ाज़[3] और इज़्ज़तका दीवाना
यह इक फ़ानूसे - शमए - दौलतो - हशमतका[4] परवाना
यह नामूसे - वतनकी[5] जिन्सका[6] सौदागरे - अरज़ल[7]
यह दुनियामें मताए - हुर्रियतका[8] ग़ासिबे - अव्वल[9]
ग़ुलामी पर जो मरता है, ग़ुलामी जिसपै मरती है
यह जिसकी रूह[10] पाए-अहरमनपर[11] सिज्दे[12] -करती है
ग़रज़का यह पुजारी, यह मुरीदे - नफ़्से - अम्मारा[13]
वतनके आस्मानोंपर यह इक मनहूस - सय्यारा[14]
यह इक ख़ूंख़्वार बेटा मादरे - गेतीके[15] सीनेपर
मुसिर[16] है जो बजाये - शीर[17] माँका ख़ून पीनेपर

—रस-सागर

१. उमूल, उद्देश्यसे, २. राष्ट्रीयताके, ३. प्रतिष्ठा और इज़्ज़तका इच्छुक, ४. धन और बड़ाई रूपी दीपशिखापर न्योछावर होनेवाला, ५–६–७. देशकी इज़्ज़त-जैसी वस्तुको बेच देनेवाला पतित व्यापारी, ८–९. स्वतन्त्रता-जैसी निधिका पहला लुटेरा, १०–११–१२. जिसकी आत्मा शैतानके पाँवों पर नतमस्तक रहती है, १३. इन्द्रियासक्त, वासनाओंका दास, १४. पुच्छलतारा, धूमकेतु, १५. धरती माताके, १६. ब-ज़िद, हठी, १७. दूधके बजाय।

इत्तहाद

संगठन और मेल-मिलापमें कितनी अक्षय शक्ति और चमत्कार है, इसे 'सागर' यूँ नज़्म करते हैं—

दामे-नफ़रतसे[1] हो ऐ नाज़िशे-दौराँ[2]! आज़ाद
कि तनफ़्फ़ुरपै[3] नहीं फ़ितरते-हस्तीका[4] मदार[5]
किसको बख़्शा है यहाँ जज़्बए-नफ़रतने सकूँ[6]?
कि तुझे आयगा इस आगके पहलूमें क़रार?
और यही जज़्बए-नफ़रत जो मुहब्बत बन जाये
तेरी जलती हुई दुनियामें फिर आ जाये बहार
यह वह रिश्ता है, कि है जिससे तअल्लुक़को सबात[7]
यह वह महवर[8] है, कि है जिसपै तरक़्क़ीका मदार

कुंजे-गुलमें[9] यह चहकते हुए मासूम तयूर[10]
जिनके नग़्मोंसे[11] है, ईवाने-तरन्नुम[12] गुलज़ार
लाल-ओ-गुलकी ख़मोशीके हरीफ़े-नातिक़[13]
यह परो-बालके बरबत[14] यह फ़िज़ाओंके[15] सितार
मिलके गाते हैं, तो शाहींका[16] जिगर हिलता है
साथ उड़ते हैं तो होता है कफ़स ज़ेरे-ग़ुबार[17]

१. पारस्परिक घृणाके वातावरणसे, २. घमण्डी युग, ३. नफ़रतपर, ४. जीवनके स्वभावका, ५. आसरा, भार, ६. चैन, ७. सम्बन्धोंमें स्थिरता, ८. धुरी, ९. उद्यानमें, १०. परिन्दे, ११. संगीतसे, १२. संगीतका महल, १३. बोलनेवालोंके प्रतिद्वन्द्वी, १४. वाद्य, १५. बहारोंके, १६, बाज पक्षीका, १७. पिंजरा धूल-धूसरित।

ख़ारो-गुल[१] एक ही टहनीपे बसर करते हैं,
बादए - क़ुर्बसे[२] सरशार[३] हैं अज़दादे-बहार
जूए-पुरजोशमें[४] मौजें हैं रवाँ दोश-ब-दोश[५]
जुर्म है इनकी ख़ुदाईमें जुदाईका शुआर[६]
गर बरसना है तो मिल-जुलके बरस अब्रे[७]-कमाल
कोई सुनता नहीं बिखरी हुई बूँदोंकी पुकार
यह परा बाँधके मुर्ग़ाबियोंकी ग़ोताज़नी
सीनए-आबपै[८] यह सोज़े-अख़ुव्वतके शरार[९]
ग़ोल-दर-ग़ोल बयाबाँमें यह हिरनोंका ख़राम
सोच इस क़ाफ़िलए-रमके रमूज़ो-इसरार[१०]
दामे-नफ़रतसे हो ऐ नाज़िशे-दौराँ ! आज़ाद
कि तनफ़्फ़ुरपै नहीं फ़ितरते-हस्तीका मदार
सोज़े - क़ुरबतसे दहकते हैं सितारोंके कँवल
कशिशे-क़ुर्बसे है, महफ़िले-अंजुमकी बहार
क़तरे मिलते हैं तो होता है समन्दर पैदा
वस्ले - ज़र्रातका[११] मरहूने[१२] है तुग़याने-ग़ुबार[१३]
सदियों पैवस्तगिए-ख़ाकने[१४] पाया है फ़रोग़[१५]
मुस्तक़िल क़ुर्बका[१६] संगीन अमल हैं कुहसार[१७]

१. काँटे और फूल, २. एकताकी मदिरासे, मेल-मिलापकी शराबसे ३. मस्त, ४. जोशीले दरियामें, ५. लहरें कन्धेसे कन्धा मिलाकर बढ़ रही हैं, ६. व्यवहार, ७. बादल, ८. पानीके सीने पै, ९. भ्रातृ-भावरूपी अंगारें, १०. भेद, ११. कणोंके मिलनका, १२. आभारी, १३. गुबारकी बाढ़, १४. अन्दर दबी हुई मिट्टी-रजने, १५. उत्थान, १६. लगातार एकेका, १७. परिणाम, पर्वत है ।

इत्तहाद - आशना[1] कीड़ेसे सबक़ ले नादाँ !
सीख इस सोज़े - फ़ज़ाईसे मुहब्बतका शुआर
मिलके हँसते हैं तो बनता है चमन बज़्मे-नजूम[2]
कहीं इक जुगनूसे होता है चराग़ाने - बहार ?
काटदीं वक़्तने नादाँ असबीयतकी जड़ें
सिर्फ़ इक वाहमा[3] है, नफ़रते-क़ौमीका शुआर[4]
आदमीके लिए आसाँ नहीं इन्साँसे गुरेज़
ज़िन्दगीके लिए मुमकिन नहीं हस्तीसे फ़रार[5]
इस तरह कुहने-अक़ाइदका[6] है ज़हनोंमें हजूम
जैसे तूफ़ाँके पछाड़े हुए खोखल अशजार[7]

दामे-नफ़रतसे हो ए नाज़िशे-दौराँ ! आज़ाद
कि तनफ़्फ़ुरपै नहीं फ़ितरते-हस्तीका मदार
किसको बख़्शा है यहाँ जज़्बए नफ़रतने सकूँ ?
कि तुझे आयेगा इस आगके पहलूमें क़रार ?

—सागर-द्वारा

१. एकताके प्रेमी, २. नक्षत्र मण्डल, ३. वहम, ४. क़ौमोंकी, नफ़रत-का कारण, ५. भागना, ६. पुराने अन्धविश्वासोंका, ७. खोखले पेड़ ।

नई मौजे-तूफ़ान

'साग़र'को रोने-झींकनेसे बेहद चिढ़ है। वे ग़मके अँधेरेमें भी सुखकी किरन खोजनेके अभ्यासी हैं।

शिकवे[1] कब तक हों मशीयतकी तही - दस्तीके[2]
मुअ़्जिज़े[3] क्यों न दिखायें खिरद-ओ-मस्तीके[4]
क्यों न हम ख़ुद ही बसैया हों नई बस्तीके
अपने अक्सोंसे नये जाल बुनें हस्तीके
  और हस्तीको[5] हरीफ़े-ग़मे-दुनिया[6] कर दें
  आ कि हस्तीके अँधेरोंमें उजाला कर दें

छनछनाती हुई बाहें हों, धड़कते हुए दिल
लड़खड़ाती हुई साँसें हों, बहकते हुए दिल
कपकपाते हुए पैकर हों, फड़कते हुए दिल
इत्र मलते हुए सीने हों, महकते हुए दिल
  और यह मिलजुलके दो आलम तहो-बाला कर दें
  आ कि हस्तीके अँधेरोंमें उजाला कर दें

ख़ुद भी सरशार[7] हों दुनियाको भी सरशार करें
हो सके तो इसी वीरानेको गुलज़ार करें

१. उपालम्भ, शिकायतें, रोना-झींकना, २. ईश्वरीय कृपाके न होनेका, ३. करामात, ४. अक़्ल और उत्साहके, ५. ज़िन्दगीको, ६. विश्वके दुःखोंका शत्रु, संसारके दुःखोंको नष्ट करनेमें जीवन लगा दें, ७. ख़ुश, मस्त।

फ़ाश इस क़ुदरते-फ़रसूदाके इसरार करें[1]
मौतको दामे-मुहब्बतमें[2] गिरफ़्तार करें
और बक़ाको[3] अब्दीय्यतका[4] इशारा कर दें
आ कि हस्तीके अँधेरोंमें उजाला कर दें

अहद लें[5] ज़लज़लोंसे आँधियोंसे साज़ करें
बहरके क़ल्बमें[6] इक बाबे-असर बाज़[7] करें
आ कि रक़्साँ[8] हों, बपा महशरे-आवाज़[9] करें
ग़र्के-तूफ़ाँमें नई ज़ीस्तका आग़ाज़ करें[10]
किश्तीको मौज करें मौजको दरिया कर दें,
आ कि हस्तीके अँधेरेमें उजाला कर दें,

बेकसो[11]-बेबसो[12] मज़्लूमे-सरापाका[13] इलाज
ग़मसे कुचली हुई, मसली हुई बेवाका इलाज
नक़्स और जब्रकी मदक़्क़ मरीज़ाका[14] इलाज
दीनसे[15] हो न सका इल्लते-दुनियाका[16] इलाज
आ कि दुनिया ही को दुनियाका मदावा[17] कर दें
आ कि हस्तीके अँधेरेमें उजाला कर दें

—रंगमहल

१. प्रकृतिके जीर्ण-शीर्ण-भेदोंका भंडाफोड़ करें, २. प्रेमजालमें, ३. भ्रातृ-प्रेमका ऐसा व्यूह बनायें कि मौत आये तो फँसकर रह जाये, ३. ज़िन्दगीको, ४. अमरत्वका, ५. प्रतिज्ञा करें, ६. दरियाके हृदयमें, ७. प्रभावशाली युग, ८. नृत्य करें. ९. प्रलय लानेवाला घोष, नवयुग लानेवाला जयघोष, १०. तूफ़ानमें घिरे हुए भी नवजीवनका प्रारम्भ करें, ११. मजबूर, १२. लाचार, १३. पूर्ण रूपेण अत्याचार पीड़ितोंका, १४. बुराई, अत्याचार रूपी क्षयरोग पीड़िताका, १५. मजहबोंसे, १६. दुनियाके दुःखोंका, १७. इलाज।

वफ़ा

[१० में से १]

जहाँ अब भी जारी है, बुर्दह - फ़रोशी[1]
बनामे - तरक़्क़ी, ब - तर्ज़े - ग़ुलामी
जहाँ मुफ़लिसोंकी मुहब्बत है तुलती
ब - अन्दाज़ए - ज़ौक़े - सरमायादारी
यह गूँगी तमन्ना यह अरमान बहरे
मुहब्बतपै बैठे हैं सिक्कोंके पहरे
मुहब्बतकी क़ीमत अदा मुझसे होगी ?
वफ़ा मुझसे होगी !—नहीं मुझसे होगी—वफ़ा इस जहाँमें !

—रंगमहल

१. स्त्रियाँ बेचनेका व्यापार ।

शाइरका नग़मा

[१० में-से २ बन्द]

शगुफ़्ते-गुल इशारा है मेरे लहजेके फूलोंका
नसीमे - सुबह ख़न्दा है, मेरे नग़मेके फूलोंका
मेरे जज़्बेके फूलोंका

सुबूही पीके नग़मेको अगर झपकी-सी आती है
तो गागर छीनकर शबनमकी ऊषा मुँह धुलाती है
रुबाबे- गुल बजाती है

मेरे नग़मेकी[1] लहरोंसे चमन बेदार[2] होते हैं
नसीमे-गुलके[3] नाज़ुक क़ाफ़िले तैयार होते हैं
चमन सरशार[4] होते हैं

मगर यह हिन्दियोंके क़ल्बको[5] गरमा नहीं सकता
जहाँबानीका परचम[6] रूहमें लहरा नहीं सकता

---

१. संगीत-स्वरोंसे, २. जागृत, ३. फूलोंकी सुबासोंके, ४. मस्त, ५. दिलको, ६. प्रजातन्त्रका झण्डा ।

मेरे नग़मेकी धुनसे सीनए-फ़ितरत धड़कता है
मेरी तानोंमें सुबहे - ज़ीस्तका तारा झमकता है
धड़कता है फड़कता है

जो दोशे - वक्तपर जोशे - तलव्वुनसे बिखरते हैं
वह गेसूए - मशैय्यत मेरे नःमेसे सँवरते हैं
सँवरते हैं निखरते हैं

मगर यह गेसुए-मज़दूरके काम आ नहीं सकता
किसी उलझी हुई तक़दीरको सुलझा नहीं सकता

—रंगमहल

कारवाने-इन्क़िलाब

[७२ में-से ४१ शेर]

देखना वह आईं उनकी औरतें ब्रा-हाले ज़ार[1]
ज़िन्दगानीका जनाज़ा, नौजवानीका मज़ार,
जिनकी दोशीज़ा तमन्नाओंको[2] फ़ाक़ा खा गया,
भूकके शोलोंसे[3] जिनका गुलसिताँ[4] मुरझा गया
जिनकी आँखें कासए-साइले[5], निगाहें दुख भरीं
हर नज़रमें हाथ फैलाये हुए हैं कमतरीं[6]
जिनकी आँखें नूरसे[7] ख़ाली हैं और बैठी हुईं
मौतके ख़ूंख़्वार शोलोंसे मगर दहकी हुईं
ख़ौफ़ आगीं[8] सुर्ख़ लरज़ा आफ़रीं[9] वहशतज़दा[10]
मौतके तारीक-ग़ारोंकी[11] तरह दहशतज़दा[12]

जिनके बालोंकी लटें उलझी हुईं चिकटी हुईं
जिस तरह बीमार नागिन दुःखसे हो सिमटी हुईं
जिनके रुख़ आलामकी शिद्दतसे हैं सरसोंके फूल[13]
और इन फूलोंपै बेदादे-ज़मानाकी[14] है धूल
जिनकी सूजी पिंडलियोंमें ख़ैरसे ज़ेवर यह है
ख़ूँज़दा[15] छालोंके घुँघरू आबालोंकी[16] छागलें[17]

---

१. फटे हाल, २. अछूती कामनाओंको, ३. चिनगारियोंसे, ४. उद्यान, ५.भिकारीका पात्र, ६.दुखियारी दरिद्र, ७. ज्योतिसे,प्रकाशसे, ८. भयभीत, ९. कपकपा देनेवाली, १०. पागल-सी, ११. अँधेरी गुफाओंकी, १२. भयानक, १३. दुःखोंके भरमारसे कपोल सरसोंकी तरह पीले हो गये हैं, १४. दुनियाके ज़ुल्मोंकी, १५.रक्तरंजित, १६.छालोंकी; १७. पायज़ेब ।

जिनके कूल्होंपर घड़ों और बोरियोंके हैं निशाँ
इन निशानोंसे भी सुनिए नाज़ुकीकी दास्ताँ
मस्त हो सकते थे शाइर इनके हर अन्दाज़से
यह भी चल सकता था सौ-सौ लोच सौ-सौ नाज़से

आह लेकिन भूकने इनकी नज़ाकत लूटली
क़ुदरते-फ़ैयाज़ने[1] दी थी जो दौलत लूटली
जिनकी कमरें बारसे[2] फ़ाक़ेके हैं, टूटी हुई
बेगमों और रानियोंके नाज़की लूटी हुई
जिनके सीनोंपर है उरियानीकी[3] चादर तार-तार
भूकमें मलफ़ूफ़[4] जोबन, प्यासमें लिपटी बहार
दर-बदर साइल[5] जवानी सर-बसर मुफ़लिस शबाब
मरहबा सद मरहबा[6] ऐ कारवाने-इन्क़िलाब !

देखिए वह छटता जाता है ग़ुबारे-कारवाँ[7]
क़ुर्बे-मंज़िलसे[8] नुमायाँ[9] मशअ़लोंका[10] है धुआँ
अपनी-अपनी शक्ल ख़ुद हर शख़्स समझाने लगा
साफ़ मंज़रका हर-इक पहलू नज़र आने लगा
भीड़में इक सिम्त कंकर कूटनेवाली भी है
हाथमें डण्डा लिये बूढ़ी पिसनहारी भी है

---

१. उदार प्रकृतिने, २. बोझसे, ३. नग्नताकी, ४. लिपटा हुआ, ५. भिकारी, ६. सैंकड़ों बार शाबास, ७. यात्री दलकी धूल, ८. मंज़िलके पाससे, ९. प्रकट, जाहिर, १०. मशालोंका।

नागफ़न है मालिनोंके पास फूलोंके बजाय
झाड़ हैं हाथोंमें गुलशनके रसूलोंके बजाय[१]
दीदनी[२] है आज तो कम उम्र मामाका[३] सुहाग
अधजली चूल्हेकी लकड़ी हाथमें, और मुँहमें झाग
रस्सियाँ डोलोंकी हाथोंमें हैं, और पनहारियाँ
सारियोंके चीथड़े हैं चीथड़ोंकी सारियाँ

तेज़ ख़ुरपे हैं उन्हीं घसियारिनोंके हाथमें
शहरके बाँके रहा करते थे जिनकी घातमें
इस तबाही ख़स्तगी[४] और भूकमें यह इनका हाल
आँखसे शोले[५] बरसते हैं निगाहोंसे जलाल[६]
सुन्दरीके हाथमें देखो वह रड़केका अलम[७]
तेग़को शरमा रहा है आज तो पंजेका ख़म[८]
"मरहबा ऐ दौरे-इशरत[९] ! मरहबा सद मरहबा
बाबुओं और सा'ब लोगोंसे मेरा पीछा छुटा"
[हाय, यह कैसी सदा[१०] है, चुप रहो, ठहरो, रुको
छुपके इस टीलेके पीछे इसकी बातें भी सुनो
महतरानी रानियोंसे वीर - बाला हो गई
ख़ाक जस्ते-शौक़में उड़कर सितारा हो गई[११]]
"मरहबा ऐ दौरे-इशरत ! मरहबा सद मरहबा

१. उद्यानको सन्देश देनेवाले (फूलोंसे अभिप्राय है) २. देखने योग्य, ३. नौकरानीका, ४. खस्ता हालत, ५. अंगारे, ६. क्रोध, तेज, ७. झण्डा, ८. हाथका खम, ९. खुशीके जमाने ! १०. आवाज़, ११. पाँवकी धूल उड़कर आसमानपर चढ़कर नक्षत्र बन बैठी ।

बाबुओं और सा'ब लोगोंसे मेरा पीछा छुटा
लाओ मुझको भी शराबे-अर्ग़वांका[१] एक जाम
ए रफ़ीको[२]! मैं थी सदियों और क़रनोंकी[३] ग़ुलाम
दानकी उम्मीदमें शामो-सहर[४] होती रहीं
ईदके इनआममें उम्रे बसर होती रहीं
यूँ तो मैं यकसर[५] नजासत[६] थी गिलाज़तका निशाँ
मुझको छू जाना क़यामत था क़यामत अल-अमाँ

हाँ मगर दस्ते-हवसको[७] शर्मो-ग़ैरत कुछ न थी,
मुझको सीनेसे लगानेमें कराहत[८] कुछ न थी
मेरे भंगीने नहीं लूटी जवानीकी बहार
ख़ान साहबका हदफ़[९] थी, सेठ साहबका शिकार
आह वह उतरनके कपड़े, वह पुरानी सदरियाँ
मैलसे मामूर वह चिथड़े, वह जूँओंके मकाँ
शहरमें हर रात वह दौरे-शराबे-अर्ग़वाँ
सुबहको दोपाईपर अशराफ़की[१०] वह झिड़कियाँ

वह डपट, वह डाँट, वह धुतकार और वह झिड़कियाँ
ख़ुश्क बासी रोटियोंके साथ ताज़ा गालियाँ
वह सड़े सालन[११], वह जूठी पत्तलें, वह दाल-भात
अनगिनत नस्लोंने जूठन खाके काटी है, हयात[१२]

१. लाल शराबका, २. साथियो, ३. सैकड़ों वर्षोंको, ४. सन्ध्या, प्रातःकाल, ५. प्रायः, ६. अशुच, ७. कामुकोंको, ८. घृणा, ९. लक्ष्य, १०. भद्र कहे जाने वालोंकी ११. साग, १२. जिन्दगी।

फ़ातिहाकी रोटियाँ भूलेसे भी मिलती न थीं
मेरी परछाईं जो पड़ जाती तो धुलती थी ज़मीं
लेकिन अब तैयार हो जायें ख़ुदा - याने - समाज[1]
एक-एक जल्लादसे बदला लिया जायेगा आज
आज घूँघट है न सूखी रोटियोंका इन्तिज़ार
गालियाँ देता नहीं अब तिफ़्लके - सरमायादार[2]

पेटसे बँधती नहीं अब रोटियाँ सूखी हुईं
मरहबा है रूहे-इंसाँ[3] क़ैदे-इंसाँसे बरी

जगमगायेगा जहाँमें अब हमारा आफ़ताब
मरहबा, सद मरहबा, ऐ कारवाने-इन्क़लाब"

रस-सागर

१. समाजके ख़ुदा, ठेकेदार, २. धनिक-पुत्र, ३. मानव-आत्मा ।

शाइर और महबूबा

[५७ में-से १२ बन्द]

महबूबा—

नज़र-नज़रमें मुझे बे-नक़ाब देखते थे,
क़दम-क़दमपै उम्मीदोंके ख़्वाब[1] देखते थे,
निगाहे-शेबमें[2] बर्क़े-शबाब[3] देखते थे,
कभी तुम आँचमें मौजे-शराब[4] देखते थे
वही तिलस्मे-नज़र[5] आज क्यों नहीं शाइर ?

तुम्हारे दिल पै तहैय्युरकी[6] क्यों हुकूमत है,
तुम्हारे दिलपै तहस्सुरकी क्यों हुकूमत है,
तुम्हारे दिलपै तफ़क्कुरकी[7] क्यों हुकूमत है,
तुम्हारे दिलपै तग़ैय्युरकी[8] क्यों हुकूमत है,
तुम्हारे दिलपै मेरा राज क्यों नहीं शाइर ?

---

१. आशाओंके स्वप्न, २. वृद्धावस्थाकी आँखोंमें, ३. यौवनकी बिजली, जवानीकी लहर, ४. शराबकी लहर, ५. नजरोंका तिलिस्म, जादू, ६. आश्चर्यकी, तआज्जुबकी, ७. चिन्ताओंकी, ८. परिवर्त्तनकी, विकारकी।

शाइर—

यह शहर, पापके बाज़ार, और यह जिंसे-लतीफ़[1]
बिसूरते हुए चहरे, यह जिस्म हाए नहीफ़[2]
कोई बनी-ठनी बैठी है और कोई कसीफ़[3]
रज़ील[4] जिनको समझते हैं आशिक़ाने-शरीफ़[5]
मनाफ़िक़-ओ मुतकब्बर समाजकी मख़लूक़[6]
यह फ़ित्नाकार-ओ-दनी समाजकी मख़लूक़[7]

यह दोपहर, यह कड़ी धूप, और यह सन्नाटा
हथौड़ी हाथमें है, और अजीर दोशीज़ा[8]
है ढेर चारों तरफ़ पत्थरोंके टुकड़ोंका
हुजूमे - ख़्वाबसे खाते हैं हाथ जब झोंका[9]
निगाहे - क़हर वहां आँख खोल देती है[10]
ग़रीब नींदमें मोतीसे रोल देती है[11]

यह राह-राह यतीम[12] और गली-गली बेवा[13] !
यह मोड़ - मोड़ पै बूढ़ी भिकारिनोंकी सदा[14]

१. कोमलाङ्गनाएँ, २. दुबले-पतले शरीर, नाज़ुक जिस्म, ३. मैली-कुचैली, ४. पतित, ५. भले आशिक़, ६. मक्कार और घमण्डी समाजका समूह, ७. फ़िसादी, झगड़ालू और कमीने राज्यकी प्रजा, ८. मज़दूर कुँवारी लड़की, ९. पत्थर तोड़ते-तोड़ते नींदसे आँखें झपकने लगती हैं, १०. जमादारकी क्रुद्ध दृष्टिके भयसे, ११. रोने लगती है, १२. प्रत्येक मार्गपर अनाथोंके झुण्ड, १३. विधवाएँ, १४. भीखकी आवाज़ ।

यह बाम - बाम जवानी - ओ हुस्नका सौदा[१]
यह हर क़दमपै जनाज़ा वक़ारे - औरतका[२]
यह दिलगुदाज़ मनाज़िर[३] मिटा गये मुझको
तमाम राज़े - मुहब्बत[४] बता गये मुझको

महबूबा—

जो चाहता है ज़माना वह बात कहते हो
जिधरको बहता है दरिया, उधर ही बहते हो
दबे - दबे - से मसाइबको[५] तुम जो सहते हो
थके-थके-से यह चुप - चुपसे तुम जो रहते हो,
उरूजे शोख़िए - अन्दाज़[६] क्यों नहीं शाइर !

शाइर—

ज़बाने - अस्र[७] हूँ मैं, तर्जुमाने - अस्र[८] हूँ मैं
सुने कोई तो अजब दास्ताने - अस्र[९] हूँ मैं
शिकस्ता दिल[१०] हूँ मगर नग़मा ख़्वाने-अस्र[११] हूँ मैं
है अस्रसे मेरी हस्ती[१२] निशाने - अस्र[१३] हूँ मैं

१. कोठे-कोठेपर रूप-यौवनके मोल-तोल, २. महिलाओंकी प्रतिष्ठाकी अर्थी, ३. हृदय पिघला देनेवाले दृश्य, ४. प्रेम-समस्याएँ, ५. मुसीबतोंको, ६. शाइरीके अन्दाज़में वह पहले-सी शोखी और बाँकपन क्यों नहीं ? ७. युगकी वाणी, ८. युगका व्याख्याता, युगकी आवश्यकताको बतानेवाला, युगरूपी भाषाका अनुवादक, ९.युगका इतिहास, १०. भग्न हृदय, ११. युगका गायक, १२. अस्तित्व, व्यक्तित्व, १३. युगका प्रतीक।

तमाम जौहरे - हस्ती[1] लुटा दिया मैंने
मगर जहानको जन्नत बना दिया मैंने

सरूदो-मस्ती-ओ-शोख़ीसे[2] दूर-दूर हूँ मैं
कि जद्दो-जहदे-मुसलसलसे चूर-चूर[3] हूँ मैं
शिकस्ता जाम[4] हूँ उतरा हुआ सरूर[5] हूँ मैं
चराग़े-सुबहकी लरज़ाँ-सी मौजे - नूर[6] हूँ मैं
सहरकी[7] गोदमें बुझना ही मेरी फ़ितरत[8] है,
जो सारी रात फुँके हैं, यह उनकी क़िस्मत है

महबूबा—

मुदाम[9] सायाफ़गन[10] था जो नौजवानोंपर
जो बर्क़[11] बनके चमकता था गुलिस्तानोंपर
नक़ूश शब्त[12] हैं जिसके, अभी ज़मानोंपर
सितारे जिससे सुलगते थे आसमानोंपर
वह तुन्द शोलए-आवाज़[13] क्यों नहीं शाइर ?

१. जीवन-रस, २. संगीत, मौज और आनन्दसे, ३. निरन्तरके संघर्ष और परिश्रमसे थका हुआ, ४. टूटा हुआ सुरा-पात्र, ५. नशा ६. प्रातः कालीन दीपकके प्रकाशकी काँपती-सी लौ, ७. सुबहकी, ८. स्वभाव, आदत, ९. सदैव, १०. सायेकी तरह छाया हुआ, ११. बिजली, १२. असर विद्यमान है, मुहर लगी हुई है, १३. आग्नेय वाणी ।

शाइर—

मेरी नज़रमें न थी रागिनी यह आहोंकी
मेरी नज़रमें न थी हूक चुप निगाहोंकी
मेरी नज़रमें न थी भीड़ दाद-ख़्वाहोंकी[१]
मेरी नज़रमें न थी भैरवीं गुनाहोंकी[२]
रुबाबे-रूह पै[३] एहसासे-नौका बार[४] न था
मैं गुलफ़शाँ[५] था गुलसिताँमें, शोलाबार[६] न था

हयात बेबसो-तनहा[७] मेरी नज़रमें न थी,
नहीफ़ आहे - शररज़ा[८] मेरी नज़र में न थी
कराहती हुई दुनिया मेरी नज़रमें न थी
यह पीरज़ाल[९], यह बेवा[१०] मेरी नज़रमें न थी
सुने न थे कभी मज़दूरे-हुस्नके नग़मे[११]
मेरे ख़यालमें भी फ़ाक़ाकशके गीत[१२] न थे

कहीं है बारिशे-दौलत[१३], कहीं ग़मोंकी ओस
यह इशरतें[१४], यह मसरतें[१५], यह क़स्रे-गरदूँ बोस[१६]

१. प्रशंसा चाहनेवालोंकी, २. पापोंकी, ३. प्राणोंकी वीणापर, ४. नव-युगकी चेतनाका बोझ, वर्तमान युगकी समस्याओंका बोझ, ५. फूल खिलाने वाला, ६. आग भड़कानेवाला, ७. ज़िन्दगी मजबूर और असंगठित (साथी रहित), ८. आहोंकी कमज़ोर चिनगारियाँ, ९. बुढ़िया, १०. विधवा, ११. रूपवती मजदूरनीका संगीत, १२. भूकों मरनेवालोंका रुदन-रूपी गीत, १३. धनकी वर्षा, १४. विलास, १५. ख़ुशियाँ, १६. गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ ।

यह झोंपड़ोंमें किसानोंकी अँतड़ियोंकी मसोस[1]
यह है निज़ाम[2] जहाँमें ख़ुदा नहीं अफ़सोस !
नहीं[3] सितारे, नहीं रेग हीको[4] भड़का दे,
मेरी नवासे[5] अमीरोंके दिल ही सुलगा दे,

—रंगमहल

१. ऐंठन, २. संसारकी व्यवस्था, ३. अन्यथा, वर्ना, ४. बालूके कणोंको, ५. वाणीसे, आवाज़से ।

आहंगे-तामीर

[कलाकारोंका कोरस]-३० मैं-से ६-

किसने तरतीब दिया कोनो मकाँ को ? हमने
किसने ऊँचा किया हस्तीके निशाँ को ? हमने
निकहत-आमेज़[1] किया बादे-ख़िज़ाँ को[2] ? हमने
फूँककर होशो-ख़िरद[3], पैकरे-जाँ को ? हमने
रश्के-फ़िरदौस[4] बनाया है जहाँको हमने

....

हमसे पहले यही फूलोंका जहाँ जंगल था
हमसे पहले यही फ़िरदौसे-निशाँ जंगल था
हमसे पहले यही हमरंगे-जिनाँ जंगल था
हमसे पहले यही आबाद मकाँ जंगल था
क़स्रे-फ़िरदौस[5] किया तेरे मकाँको हमने

....

हमने मालूम किया वहशते-आदमका ज़मीर[6]
और ईजाद किये मख़मलो-दीबा-ओ-हरीर[7]

१. सुगन्धमय, २. पतझड़की हवाको, ३. होश और अक़्लको तरक़्क़ी देकर, ४. जन्नत भी जिसपर ईर्ष्या करे, ५. जन्नतका महल, स्वर्गीय-भवन, ६. वहशी मनुष्योंके मनोभाव, ७. मखमल और रेशमका आविष्कार,

हमने हैवाँको किया मजलिसे-तहज़ीबका मीर[1]
हँस पड़ी अतलसो-कमख़्वाबो-ज़रीकी तक़दीर
रश्के-महताब किया हुस्ने-बुताँको[2] हमने

....

दहर[3] क्या है ? फ़क़त इक शोलए-ज़र्बे-मज़दूर[4]
ज़िन्दगी क्या है ? फ़क़त क़ुव्वते बाज़ूका ज़हूर[5]
ज़हने-बीमारकी पस्ती है यह वहमे-मशहूर[6]
ज़िन्दगी जब्र है, इंसान है मुतलक़ मजबूर
पारा-पारा किया इस दामे-गुमाँको[7] हमने
तूने इस जन्नते-आदमको[8] बनाया ज़िन्दाँ[9]
आज तक दहर[10] हैं आज़ाद ग़ुलामोंका जहाँ
हमने लहरा ही दिया अपनी रिसालतका[11] निशाँ
तूने दुनियामें किया ज़ीस्तको ज़ंजीरे-गराँ[12]
और पिघला दिया ज़ंजीरे-गराँको हमने
तेरी हिम्मतने नहीं, तेरी शुजाअतने[13] नहीं
तेरी महनतने नहीं, तेरी बसालतने[14] नहीं
तेरी क़ुदरतने नहीं, तेरी सियासतने[15] नहीं
तेरी दौलतने नहीं, तेरी सियादतने[16] नहीं
हमने फ़िरदौस[17] बनाया है, जहाँको हमने

—साग़र-द्वारा

१. पशुओंको सभ्य गोष्ठियोंके नेतृत्वके योग्य बनाया, २. माशूक़ोंका रूप चन्द्रमाके ईर्ष्या-योग्य बनाया। ३. संसार, ४. मज़दूरके हथोड़ेसे निकलनेवाली चिनगारी, ५. बाहुबलका चमत्कार, ६. क़ौमकी बीमारी वहमोंमें लिप्त रहना है, ७. वहमको खील-खील कर दिया, ८. मानवोंकी स्वर्ग-जैसी सृष्टिको, ९. बन्दीगृह, १०. संसार, ११. पैग़म्बरीका, १२. जंजीरोंमें ज़िन्दगीको जकड़ दिया, १३. बहादुरीने, १४. दिलेरीने, १५. राजनीतिने, १६. नेतृत्वने, १७. जन्नत, स्वर्ग।

समाज

[९ मं-से २]

इन ख़तरनाक ख़िलौनोंपै न मिट हुस्ने-नज़र ! ए मेरे हुस्ने-नज़र[1] !!
चलते-फिरते नज़र आते हैं जो तहज़ीबके बुत
तरशे-तरशाये हुए आज़िरे-तादीबके बुत[2]
इनके दिल संग[3] है, जाँ सर्द[4] है, सीने तारीक[5]
उनके दरिया हैं सराब[6], उनके सफ़ीने[7] तारीक
कोई दर[8] उनपै सियहकारियोंका[9] बन्द नहीं
जाने-इबलीस[10] हैं तहज़ीबके फ़रज़न्द[11] नहीं
इन ख़तरनाक खिलौनोंपै न मिट हुस्ने-नज़र ! ए मेरे हुस्ने-नज़र !

मुसकराती हुई आँखोंपै न जा हुस्ने-नज़र ! ए मेरे हुस्ने-नज़र !!
यह करम[12] और यह इख़लाक़[13], यह मुजरे, यह सलाम
यह तवाज़ा[14], यह तकल्लुफ़, यह तबस्सुम, यह कलाम
हर नफ़स[15] गुद-गुदे सोफ़ोंपै क़ऊद[16] और-क़याम
हर अदा क़ातिलो - सैय्यादो - नज़र दाना-ओ-दाम
पर यह सब ज़ौक़े-नुमाइशके[17] सिवा कुछ भी नहीं
इन नुमाइशके बुतोंमें ब-ख़ुदा कुछ भी नहीं
मुसकराती हुई आँखोंपै न जा हुस्ने-नज़र ! ए मेरे हुस्ने नज़र !

—रंगमहल

१. सुरुचिपूर्ण दृष्टि, २. पीड़ा पहुँचानेवाले उपदेशोंकी मूर्तियाँ, ३. पत्थर, कठोर, ४.आत्मा मर चुकी है, दिल ठंडे पड़ गये हैं,५.अन्धकार-पूर्ण, ६. खुश्क, ७. नौकाएँ, ८. द्वार, ९. पाप-कार्योंका, १०. शैतानकी रूह, ११. सभ्योंकी सन्तान, १२. महर्बानी, १३. आचरण, १४. आदर-सत्कार, अभ्यर्थना, १५. हर समय, १६. आसन, १७. बाह्य प्रदर्शन ।

आदर्श

[३६ में-से २८]

केवल अनुपम रूप-लावण्यवती सुकुमार युवती 'साग़र' साहबकी प्रेयसी नहीं हो सकती। वे उर्दूके उन दिलफेंक आशिक़ोंमें नहीं, जो किसी शोख़ या हरजाईकी तिर्छी नज़रोंसे घायल होकर कूचए-हुस्नकी ख़ाक छानते फिरे। उनकी प्रियतमा आदर्श नारी है।

मेरे मक़सूदकी[1] तसवीर नहीं हो अफ़सोस
तुम मेरे ख़्वाबकी ताबीर[2] नहीं हो, अफ़सोस

....

तुम नहीं हो मेरे सपनेके शबिस्तानोंमें[3]
है कोई और मेरे ख़्वाबके ईवानोंमें[4]

न वह क़ामत[5] कि जिसे नश्वे-तमन्ना[6] कहिए
रूहे-अज़मतका[7] उभरता हुआ जज़्बा[8] कहिए
साँपकी तरह लचकता हुआ पैकर[9] भी नहीं
बिस[10] और अमृतसे छलकता हुआ साग़र भी नहीं
न वह हाथोंका तनासुब[11] न वह बाहोंका जमाल[12]
न वह अम्वाजे-तसव्वुर[13], न वह गरदाबे-ख़याल[14]

---

१. अभिप्रेत, लक्ष्यकी, अभिलाषाकी, २. स्वप्न-फल, कल्पना-मूर्ति ३. स्वप्न-अन्तःपुरमें, शयनागारमें, ४. स्वप्न-महलोंमें, ५. क़द, आकार, ६. इच्छाओंकी पूर्त्ति, अभिलाषाओंका विकास, ७. उच्च आत्माका, ८. शुभभाव, ९. जिस्म, १०. विष, ११. अनुपात, मुनासबत, १२. सौन्दर्य, १३. मुसकानकी लहरें, १४. विचारोंका भँवर, गहन विचारशीलता।

न वह फूलोंकी महक है, न वह ख़ुशबूकी लहक
न वह पायलकी सदा है, न वह घुँघरूकी धमक
खिल-खिलाहट न, वह बर्गे-गुलेतरका नग़मा[१]
मुसकराहट न वह आसारे-सहरका नग़मा[२]
न वह बाज़ू[३] कि जो बेताब हों गरदनके लिए
लालो-गौहरसे लदे साँपसे बल खाये हुए
न वह लचकी हुई शाख़े-गुलेतरका आलम
न वह मचली हुई नागिन-सी कमरका आलम
न वह रफ़्तार, न हर ग़ामपै[४] रक़्सीदा ख़राम[५]
न क़यामतके वह मुजरे, न वह आफ़तके सलाम
न मलामत, न शिकायत, न लताफ़त, न रज़ा
न तकल्लुम, न तबस्सुम, न तरन्नुम, न सदा
मेरी रग-रगको जकड़ती हैं, निगाहें जिसकी
बाँध लेती हैं, मेरी ज़ीस्तको[६] बाहें जिसकी
मुझमें महदूद[७] है पर रूप हैं उसके बेहद
कभी माबूद[८], कभी अब्द[९], कभी ख़ुद मअबद[१०]
झाँककर मेरे तख़ैय्युलसे[११] मुसलसल गाना[१२]
और फिर मेरे तख़ैय्युल ही में हल[१३] हो जाना

मेरे मक़सूदकी तस्वीर नहीं हो अफ़सोस
तुम मेरे ख़्वाबकी ताबीर नहीं हो अफ़सोस

१. हरे-भरे फूलोंकी चटख़ने रूपी संगीत, २. प्रातःकालीन संगीत, ३.बाहें, ४. क़दमपै,५. नृत्य करती हुई-सी चाल,६. ज़िन्दगीको,७. सीमित, ८. ख़ुदा, उपासना-योग्य, ९. उपासक, १०. मस्जिद, उपासनागृह, ११.कल्पनाके झरोखेसे,१२.लगातार,१३. समा जाना, आत्मसमर्पण कर देना।

तुम लरज़ती हो मेरे जज़्बए-सनअतगरसे[1]
उसने मक़सूद[2] चुराया है दिले-आज़िरसे[3]
तुम भड़कती हो, मेरे शोलए-सन्नाईसे[4]
उसकी फ़ितरतको[5] है इक लाग[6] सनमसाज़ीसे[7]
न वह इसयाँकी[8] तड़प है, न वह ईमाँकी झलक
बरसी पड़ती है निगाहोंसे रिवाजोंकी चमक[9]
तुमपै हर वक़्त रवायातो-अक़ायदका अज़ाब[10]
गर्द[11] है उसकी निगाहोंमें गुनह और शवाब[12]
न वह मिटनेकी तमन्ना न सँवरनेका जुनूँ[13]
न उभरनेका सलीक़ा न बिखरनेका जुनूँ
तुम्हें पानी पै भी शक आतिशे-सैय्यालका[14] है,
ज़हरपर उसको यक़ीं बादहे-कम सालका[15] है,
उसके अब्रूमें[16], निगाहोंमें, अदाओंमें, मुदाम[17]
हैं उबलते हुए सागर तो, छलकते हुए जाम
उसकी आँखोंकी सियाहीमें जहाने-इश्काल[18]
लाख मुबहम-से अलम[19], लाख सिसकते-से ख़याल
एक ग़म्माज़[20] ख़ुशी अश्कनुमा आँखोंमें
लाख गरदाबे-वफ़ा[21] खुलती हुई बाहोंमें

---

१. कलाकारके भावोंसे, २. लक्ष्य, मनोभिलाषा, ३. दग्ध हृदयसे, ४. शिल्पकारीकी ज्वालासे, ५. स्वभावको, आदतको, ६. लगाव, ७. मूर्त्ति-कला, तक्षणकला, ८. अपराध करनेकी; युवकोचित भूलें करनेका स्वभाव, ९. पुरानी रीति-रिवाजोंकी झलक, १०. पुरातन परम्पराओं और अन्ध-विश्वासोंका बोझ, ११. ख़ाक, हेच, १२. पाप और पुण्य, १३. उत्साह, उन्माद, १४. पिघली हुई आग (शराब)का, १५. नई शराबका, १६. भवोंमें, १७. सदैव, १८. विश्वकी चिन्ताएँ, १९. उलझे हुए दुःख, २०. दुःख मिश्रित, २१. नेकी रूपी भँवर।

वह मेरी रूहमें[1] है, क़ैद बसद सब्रे-तमाम[2]
और तुम्हें शौक़ कि बन जाये मेरी रूह ग़ुलाम
तुम समझती हो कि इफ़लासमें[3] रहती नहीं लाज
उसके नज़दीक मुहब्बतकी यही है मेराज[4]
तुम्हें क़ीमतकी तलब[5], उसको मुहब्बतकी तलब[6]
तुम्हें इशरतकी[7] तलब, उसको मुसीबतकी तलब

मेरे मक़सूदकी तस्वीर नहीं हो अफ़सोस
तुम मेरे ख़्वाबकी ताबीर नहीं हो, अफ़सोस

-रंगमहल

१. प्राणोंमें, हृदयमें, २. ख़ुशीसे क़ैद है, सहर्ष आत्म-समर्पण किया है, ३. दरिद्रतामें, ४. चरमसीमा, ५. धनकी इच्छा, ६. प्रेमकी आकांक्षा, ७. भोग-विलासकी ।

औरत

मैंने यह माना कि तू है मादरे - नौए - बशर[1]
एक-इक ज़र्रेमें[2] सौ आलम[3] बसा सकती है तू
फ़ितरते - ख़ल्लाक़के[4] जौहर[5] दिखा सकती है तू
'गौतम' और 'ईसा'को फिर दुनियामें ला सकती है तू
रंगो-नस्लो-क़ौमके क़िलओंको ढा सकती है तू
मशरिक़ो-मग़रिबको[6] इक कुनबा बना सकती है तू
'आमना' और 'देवकी'ने जो पिलाया था कभी
फिर वही साग़र ज़मानेको पिला सकती है तू
'मरियम'-ओ-'सीता'की शीरीं[7] मुसकराहटकी क़सम
आज भी संसारको जन्नत बना सकती है तू
दुश्मनीकी आँखसे टपके सरश्के - मादरी[8]
जंगके मैदानमें यूँ मुसकरा सकती है तू
फूलको तब्दील कर सकती है मौजे-नारमें[9]
मोमको इक आनमें आहन[10] बना सकती है तू
लाल-ओ-गुल लाल-ओ-गुल तो हैं तेरी गर्दे-राह
महरो-महको[11] अपने क़दमोंपर झुका सकती है तू
तेरे जल्वोंकी ज़माना ताब ला सकता है कब
सिर्फ़ परतवसे[12] जहाँको जगमगा सकती है तू

१. मानवकी माता, २. कणमें, ३.दुनिया, ४. ईश्वरीय, ५. चमत्कार, ६. पूर्व-पश्चिमको, ७. मधुर, ८. मातृ-स्नेह, ९. अग्निकी लहरोंमें, १०. लोहा, ११. सूर्य-चन्द्रको, १२. झलकमात्रसे ।

लोग ज़िन्दोंको लिये फिरते हैं, ऐ रूहे-हयात[१] !
मैं तो यह कहता हूँ मुर्दोंको जिला सकती है तू
अम्नके[२] देवतासे ले सकती है, तू क़ातिलका काम
डाकुओंको रहमका हामिल बना सकती है तू
मोड़ सकती हैं तेरी नज़रें कलाई मौतकी
क़ुमबाज़नी[३] कहकरके मुर्दोंको जिला सकती है तू
फ़ित्नए-महशर कि जिसकी मुद्दतोंसे धूम हैं
ऐसे सौ फ़ित्ने तबस्सुमसे जगा सकती है तू
क़हर[४], उलट सकता है तेरा, रंगो-बूकी कायनातें[५]
लहलहाते बाग़को सहरा[६] बना सकती है तू
महरसे[७] तेरे उछल पड़ती है सीनोंमें हयात[८]
आदमीयतको सरापा दिल बना सकती है तू
शोरिसे-सूरे-क़यामत[९] है तेरी तरग़ीबे-जंग[१०]
पत्थरोंसे आबगीनोंको[११] भिड़ा सकती है तू
ज़मज़मो-तस्नीमो-गंगा जिस जगह सैराब हों
आँसुओंसे अपने वह संगम बना सकती है तू
दहरमें जिस अक़्लकी बेदारियोंकी धूम है
उसको तो सिर्फ़ एक लोरीमें सुला सकती है तू

---

१. जीवन-दाता, २. शान्तिके, ३. वह कलमा जो मंसूरसे बेख़ुदीकी हालतमें निकल जाया करता था। और जिस कलमेसे आप मुर्दे ज़िन्दा कर देते थे। शाब्दिक अर्थ है—मेरे हुक्मसे उठ। इसी कलमेकी वजहसे आपको फाँसी दी गई थी। ४. क्रोध, ५. दुनिया, ६. रेगिस्तान, ७. कृपासे ८. ज़िन्दगी, ९. प्रलयके दिन बजनेवाला बाजा, १०. युद्धकी इच्छा, ११. शीशोंको।

लेकिन ऐ राज़े-अज़ल[1] ! ऐ चेस्ताने-ज़िन्दगी[2] !
भेद अब तक अपना पाया है न पा सकती है तू.
बिन्नते-हव्वा[3] ! इब्ने-आदमको[4] ज़रा यह तो बता
अपने फ़ितरतके निहाँ ख़ानेमें[5] जा सकती है तू?

तूने ख़ुद डाली है, अपने रुख़पै जो रंगीं नक़ाब
क्या उसे भी दस्ते-नाज़ुकसे उठा सकती है तू ?

—रंगमहल

१. मृत्युके भेद, २. जीवन-पहेली, ३. हव्वाकी बेटी, ४. मानवपुत्रको, ५. अपने स्वभावके अन्तरंगमें झाँक सकती है ।

इतनी फ़ुर्सत कहाँ ?

[१३ में-से २]

वोह उमड़े शरारोंके तूफ़ान[1] देखो
वोह बरसे जहन्नुमके सामान देखो
सुलगती हुई नस्ले - इंसान[2] देखो
न रोको, न रोको मेरी जान देखो

क़याम[3] अब है यकसर ज़ियाँ[4] यह तो सोचो
मुझे इतनी फ़ुर्सत कहाँ ? यह तो सोचो

चमकना है मुझको, उभरना है मुझको
सँवरना है मुझको, निखरना है मुझको
हक़ीक़ी मुहब्बतपै[5] मरना है मुझको
मुहब्बतको जावेद[6] करना है मुझको

मुहब्बतमें हूँ रायगाँ[7] ? यह तो सोचो
मुझे इतनी फ़ुर्सत कहाँ ? यह तो सोचो

—रंगमहल

---

१. अंगारोंके तूफ़ान, २. मानव-सन्तान, ३. ठहरना, ४. हानि, ५. शुद्ध प्रेम, (विश्वप्रेमसे अभिप्राय) ६. अमर, ७. व्यर्थ जीवन नष्ट करूँ ।

मीठी बोली

•

बाग़ी संसार

[६ बन्द में-से ३]

इस बाग़ी संसारमें प्रीतम, कौन किसीका होय ?

चन्द्रमासे ज्योति बरसकर पर्वतपर आ सोय
पर्वतसे सौ झरने फूटे, पर्वत बैठा रोय
जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय?
इस बाग़ी संसारमें प्रीतम कौन किसीका होय ?

झरने बढ़कर दरिया बाजें, दरिया सागर होय
सागर बादल बनकर उमड़े फिर करनीपर रोय
जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय ?
इस बाग़ी संसारमें प्रीतम कौन किसीका होय ?

पात झड़ें टहनीसे, टहनी नंगी होकर रोय
टहनी ख़ुद पीपलको छोड़े, एक दिन ऐसा होय,
जाओ सिधारो, तुम भी सिधारो, रोके तुमको कोय ?
इस बाग़ी संसारमें प्रीतम कौन किसीका होय ?

—रस-सागर

आत्माका मन्दिर

[७ में-से ३]

मन्दिरके पट खोल पुजारी, पट मन्दिरके खोल
प्रेम-नगरसे आई मैं दासी, पट मन्दिरके खोल
हीरे-मोती लाई मैं दासी, पट मन्दिरके खोल
वो मोती हैं तेजसे जिसके चन्दरमा छुप जाय
वह हीरे हैं, जोतसे जिनकी सूरज भी शर्माय
नैननका काँटा है, इनको इस काँटेमें तोल—
पट मन्दिरके खोल

दो नैननमें सौ आँसू हैं दीवानीकी भेंट
नैन मेरे माटी हैं, केवल भेंट है यह अनमेट
उस मन्दिरके खोल ज़रा पट जिसमें है गिरधारी
वह गिरधारी, जिसपर सारी दुनिया है बलिहारी
कबसे मैं चीखूँ बेचारी, सुन तो मेरे बोल—
पट मन्दिरके खोल

जीवन मेरा रूप बदलकर बन जाये इक हार
उनके गलेका हार पुजारी, मेरा मन सिंगार
मुझको गले यों पड़ते देखें, देवें वह मन हार
गुँध जावें इक हारमें दोनों निराकार साकार
तुझको क्यों है आर पुजारी ! कुछ तो मुखसे बोल—
पट मन्दिरके खोल

—रस-सागर

बिलख-बिलख मर जाय

सुन्दर नैना मदभरे भौंरा रसको आय
काली ज़ुल्फ़ें मोहनी, जैसे बदरी छाय
दूभर हो जीना उसे, जो तुमसे नेह लगाय
सिसक-सिसककर जान दे, बिलख-बिलख मर जाय

क्यों वह अपने दासको, दरसन देने आय
क्यों वह अपने हुस्नका, रूप अनूप दिखाय?
ऐ प्रेमी क्यों आसमें, अपने नैन थकाय
उसकी तो ख़ुद चाह है, बिलख-बिलख मर जाय

—रस-सागर

पुजारिन

ऐ मन्दिरका राज़ पुजारिन, ऐ फ़ितरतका साज़ पुजारिन
प्रेम-नगरकी रहनेवाली, हरकी बतियाँ कहनेवाली
सीधी-सादी भोली - भाली बात निराली, गात निराली
गर्दनमें तुलसीकी माला, दिलमें इक ख़ामोश शिवाला
होंटोंपर पैमाने-रक़्साँ[1], आँखोंमें मैख़ाने-रक़्साँ[2]

ऐ देवीका रूप पुजारिन
तेरा रूप अनूप पुजारिन

भीनी - भीनी बू सारीमें, सारी मदमें तू सारीमें
आँखोंमें जमनाकी मौजें, बालोंमें गंगाकी लहरें
नूर तेरे रुख़्सारे-हसींपर[3] रंगीं टीका पाक जबींपर[4]
जैसे फ़लकपर[5] सुबहका तारा, रोशन-रोशन प्यारा-प्यारा
शर्मीली मासूम[6] निगाहें, गोरी - गोरी नाज़ुक[7] बाहें,

ऐ देवीका रूप पुजारिन
तेरा रूप अनूप पुजारिन

फूलोंकी इक हाथमें थाली, मोहन, मदमाती, मतवाली
नीची नज़रें, तिरछी चितवन, मस्त पुजारिन हरकी जोगन
चाल है मस्ताना मतवाली, और कमर फूलोंकी डाली

१. नृत्य करता हुआ संवाद, २. मदिरालय थिरकता हुआ, ३. सुन्दर कपोलोंपर प्रकाश, ४. पवित्र मस्तकपर, ५. आकाशपर, ६. भोली-भाली, ७. कोमल ।

दिल तेरा नेकीकी मंज़िल, लाखों बुतख़ानोंका हासिल
हस्ती तुझमें झूम रही है, मस्ती आँखें चूम रही है,

ऐ देवीका रूप पुजारिन
तेरा रूप अनूप पुजारिन

नूरके तड़के घाटपै आकर, गंगाका सम्मान बढ़ाकर
फिर लेकर ख़ुशबूएँ सारी, चन्दन जल और दूब सुपारी
सुबहके जल्वोंको तड़पाकर, नज़्ज़ारेसे आँख बचाकर
ऐ मन्दिरमें आनेवाली, प्रेमके फूल चढ़ानेवाली
हस्ती भी है गुलशन तुझसे, सूरज भी है रोशन तुझसे

ऐ देवीका रूप पुजारिन
तेरा रूप अनूप पुजारिन

लौट चली तू करके पूजा, देख लिया ईश्वरका जल्वा
ठहर-ठहर ऐ प्रेम पुजारिन, मैं भी कर लूँ तेरे दर्शन
देख इधर घूँघट निहुराकर, अपने पुजारीपर किरपा कर
सबकी पूजा ज़ोहदो-ताअत[1], मेरी पूजा तेरी उल्फ़त
हरका घर है तेरा पैकर, तू ख़ुद है इक सुन्दर मन्दिर

ऐ देवीका रूप पुजारिन
तेरा रूप अनूप पुजारिन

आँखमें मेरी है इक आँसू, जैसे हो नद्दीमें जुगनू
मालामें कर इसको शामिल, यह मोती है तेरे क़ाबिल

---

१. पवित्रता और उपासना ।

ध्यानसे अपने प्राण बचाकर, पाओंसे तेरे आँख मिलाकर
प्रेमका अपने नीर बहा दूँ, सब कुछ तुझपर भेंट चढ़ा दूँ
पापी दिल मेरा सुख पाये, मेरी पूजा क्यों रह जाये

ऐ, देवीका रूप पुजारिन
तेरा रूप अनूप पुजारिन

आ तेरी सूरतको पूजूँ, मैं ज़िन्दा मूरतको पूजूँ
तू देवी मैं तेरा पुजारी नाम तेरा हर साँससे जारी
लागकी आगमें तनको भूना, फिर मन्दिर है दिलका सूना
मनमें तेरा रूप बसालूँ, तुझको मनका चैन बना लूँ
छुपजा मेरे दिलके अन्दर, हो जाये आबाद यह मन्दर

ऐ, देवीका रूप पुजारिन
तेरा रूप अनूप पुजारिन

तुझको दिलके गीत सुनाऊँ, फिर चरणोंमें सीस नवाऊँ
त्रिलोक और आकाश झुका दूँ, धरतीकी शक्ती लचका दूँ
तारे चाँद और भूरे बादल, बाग़, नदी, दरिया और जंगल
परबत-रूख और मस्जिद-मन्दिर, साक़ी-पैमाना और साग़र
दुनिया हो तेरे क़दमोंपर, क़दमोंके नीचे मेरा सर

ऐ, देवीका रूप पुजारिन
तेरा रूप अनूप पुजारिन

एक पुजारिन एक पुजारी, प्रीतकी रीतें कर दें जारी
देसमें प्रीत और प्यारको भरदें, प्रेमसे कुल संसारको भरदें,
लोभ और लाभके बुतको तोड़ें, पाप और क्रोधका नाम न छोड़ें

प्रेमका रस दौड़े रग-रगमें, हो इक प्रेमकी पूजा जगमें
दोनों इस धुनमें मर जायें, तीरथ एक अजीब बनायें

ऐ देवीका रूप पुजारिन
तेरा रूप अनूप पुजारिन

—रस-सागर

देवी

[८ मैं-से ५]

गीतकी बातें शर्माती हैं, साँसें ख़ुशबू बरसाती हैं
प्रेमका झूला गोरी बाहें, मुड़-मुड़ जायें, झुक-झुक जायें
हुस्नके बनकी चंचल आहू[1], सरसे पा तक मुतलक़[2] जादू
होंटोंको अपने चमका दे, हल्की-सी बिजली लहरा दे
हँसते-हँसते बेख़ुद हो जा, और तबस्सुममें[3] ख़ुद खो जा
नशेमें सरशार[4] है दुनिया, फुकनेको तय्यार है दुनिया

ऐ असरे-बेदारकी[5] देवी !
ऐ हुस्नो-ईसारकी[6] देवी !

आह यह तेरा नाज़ुक पैकर[7], शबनमकी[8] गोद और गुलेतर[9]
यह तन यह खद्दरकी सारी, उफ़रे तेरी सादा कारी
दिलको पैहम[10] लाग वतनकी, रूहमें[11] रोशन आग वतनकी
रद्दे-ग़ुलामी[12] करनेवाली, अपने वतनपर मरनेवाली
रानी है शहज़ादी है तू, तस्वीरे-आज़ादी है तू
दिलमें इक तूफ़ाने-अमल है, होटोंपर फ़र्माने-अमल[13] है,

ऐ असरे - बेदारकी देवी !
ऐ हुस्नो-ईसारकी देवी !

---

१. हिरनी, २. पूर्णरूपेण, ३. मुसकानमें, ४. मस्त, ५. जागरण-युगकी, ६. रूप और त्यागकी, ७. जिस्म, ८. ओसकी, ९. ताज़ाफूल, १०. सदैव, लगातार, ११. प्राणोंमें, १२. परतन्त्रता नष्ट, १३. पुरुषार्थकी भावना ।

साँसमें तेरे क़ौमी नग़मा[1], हाथमें आज़ादीका झण्डा
सरमें सौदाए - क़ुर्बानी[2], दिलसे आँखों तक है पानी
ग़ैज़में[3] जब थर्राती है तू, जोशमें जब आ जाती है तू
मग़रिबका[4] दिल थर्राता है, मशरिक़को[5] जोश आ जाता है
तूने असली काम किया है, अपने वतनका नाम किया है
सोता भी होशियार है अब तो, औरत भी बेदार[6] है अब तो

ऐ असरे-बेदारकी देवी !
ऐ हुस्नो-ईसारकी देवी !

आ तेरे क़दमोंको चूमूँ, चूमूँ और मस्तीमें झूमूँ
आँखोंसे एक नहर बहा दूँ, हीरोंका इक खेत उगा दूँ
तू करदे गर चन्द इशारे, तोड़के लाऊँ चर्ख़के[7] तारे
उनसे ज़र्रीं ताज[8] बनाऊँ, ख़ुश होकर तुझको पहनाऊँ
ताजसे इक शोला[9] पैदा हो, फूँकदे जो मेरी हस्तीको,
ख़ाकपै फिर तू नज़रें डाले, जोत जगतकी फिर बन जाये

ऐ असरे-बेदारकी देवी !
ऐ हुस्नो-ईसारकी देवी !

---

१. राष्ट्रीय गीत, २. बलिदान होनेकी धुन, ३. क्रोधमें, ४. पश्चिमका, योरूपका. ५. पूर्वी देशोंको, एशियाको, ६. जागी हुई, ७. आस्मानके, ८. स्वर्ण मुकुट, ९. चिनगारी ।

जिस्म नया हो, जान नई हो, दुनियाकी हर शान नई हो,
ज़िन्दानी मशरब[1] हो मेरा, दारो-रसन[2] मज़हब हो मेरा
हुब्बे-वतनमें[3] जान भी दे दूँ, जान ही क्या ईमान भी दे दूँ
सीनेमें पैवस्त[4] हो बर्छी, लबपै तबस्सुम[5] दिलमें गोली
ख़ूनसे सारा पैकर तर हो, तेरा ज़ानू मेरा सर हो
दिलसे तू सीनेको मिलाये, मरते दम तक जाम पिलाये

ऐ असरे-बेदारकी देवी !
ऐ हुस्नो-ईसारकी देवी !

—रस-सागर

१. जेल-जीवन-उद्देश्य, २. फाँसीपर झूल जाना, ३. देश-प्रेममें, ४. घुसी ई, ५. होटोंपै मुसकान ।

हिन्दू देवी

सुबहको जमना किनारे मौज-सी[1] पैदा हुई
मौजकी गोदीसे हिन्दू स्त्री पैदा हुई
हाथमें साड़ीका आँचल, ज़ुल्फ़ लहराई हुई
लबपै[2] हलका-सा तबस्सुम[3] आँख शर्माई हुई
कृष्णकी बंसीमें फिर इक लहर-सी पैदा हुई
लहरने इक गीत गाया, गीतकी पूजा हुई
मौजकी गोदीसे हिन्दू स्त्री पैदा हुई
शान्ती पैदा हुई
मोहनी पैदा हुई
सुबहको जमना किनारे मौज-सी पैदा हुई

सुर्ख़ टीका[4] पाक[5] माथेपर नज़र जादू भरी
रूपमें नर-मोहिनी, मुनि-मोहिनी सुर-मोहिनी
रूहमें शमए - मुहब्बतकी मुक़द्दस - रोशनी[6]
दिलमें ग़मकी आग ख़ुद क़ुदरतकी दहकाई हुई
मुस्तक़िल इक नग़मए-रंगीं[7] मुजस्सम[8]-रागनी
प्रेम और रूहानियतकी[9] ग़ैर फ़ानी[10] बाँसुरी
मौजकी गोदीसे हिन्दू स्त्री पैदा हुई

---

१. लहर-सी, २. ओठोंपर, ३. मुसकान, ४. लालबिन्दी, ५. पवित्र, ६. प्रेम-दीपका पवित्र प्रकाश. ७. स्थायी रूपसे रंगीन गीत, ८. पूर्ण रूपेण, साक्षात्, ९. आध्यात्मिकताकी, १०. अमर ।

महजबीं[1] पैदा हुई
नाज़नी[2] पैदा हुई
सुबहको जमना किनारे मौज-सी पैदा हुई

गूँज उट्ठा ज़मज़मोंसे नग़मा-ज़ारे-ज़िन्दगी[3]
मुसकराई नौ-उरूसे-कामगारे-ज़िन्दगी[4]
इक नई ख़ुशबूसे महका लालाज़ारे-ज़िन्दगी[5]
गोशे-गोशेमें[6] हुआ जश्ने-बहारे-ज़िन्दगी[7]
हो गये पुरनूर[8] सब नक़्शो-निगारे-ज़िन्दगी[9]
ज़र्रा-ज़र्रा[10] बन गया आईनादारे-ज़िन्दगी[11]
मौजकी गोदीसे हिन्दू स्त्री पैदा हुई

ज़िन्दगी पैदा हुई
कामिनी पैदा हुई

सुबहको जमना किनारे मौज-सी पैदा हुई
मौजकी गोदीसे हिन्दू स्त्री पैदा हुई

—रस-सागर

१. चन्द्रमा-जैसे मस्तकवाली, २. कामिनी, ३. जीवन-संगीत, ४. जीवन रूपी नवीन वधू, ५. जीवनोद्यान, ६. कोने-कोनेमें, ७. जीवनकी बहारका उत्सव, ८. प्रकाशमान, ९. ज़िन्दगीके अवयव, १० कण-कण, ११. जीवन-दर्पण।

ऊषा

[८ में-से २]

तुझे मालूम है मैं किसलिए मग़रूर[1] हूँ 'ऊषा' !
तबस्सुमने[2] तेरे ताजे-हयाते-जाविदाँ[3] बख़्शा
मेरी फ़ानी मुहब्बतको[4] शबाबे-जाविदाँ[5] बख़्शा
ज़बाँ बख़्शी, बयाँ बख़्शा, नज़र बख़्शी, असर बख़्शा
तड़पती रूह बख़्शी और क़ल्बे-नग़मागर[6] बख़्शा
ज़रा इठलाके जमनापर ख़रामाँ[7] हो मेरी 'ऊषा' !
कँवलकी पंखुड़ीपर फिर तो रक़्साँ[8] हो मेरी 'ऊषा' !

तुझे मालूम है मैं किसलिए बेदीन[9] हूँ 'ऊषा' !
यह मज़हब है, जो दिलके साग़रोंको चूर करता है
यह मज़हब है जो हर नज़दीक शैको[10] दूर करता है
तुझे ग़मगीन करता है, मुझे रंजूर[11] करता है
हमारी रूहको हर गामपर[12] मजबूर करता है
मेरी साबिर[13] ! मुहब्बत मेरा मज़हब है, मेरी 'ऊषा' !
यही रंगीं हक़ीक़त मेरा मज़हब है मेरी 'ऊषा' !

—रंगमहल

---

१. अभिमानी, गर्वीला, २. मुसकानने, ३. अमर जीवनका मुकुट, ४. मिटनेवाले प्रेमको, ५. अमर यौवन, ६. संगीतमय हृदय, ७. इठलाती चाल चल, ८. नृत्य करती हुई, ९. मजहबोंसे दूर, १०. वस्तुको, ११. रंजीदा, १२. पगपर, १३. सन्तोषी ।

जमना

[८० में-से १४]

....

सच बता ऐ मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?
कृष्णकी बंसीका इक बहता हुआ नग़मा[1] है तू
देवकी हर सुबह जिसके घाटपर आती रही
वत्नमें[2] गोकुलके पैग़म्बरको नहलाती रही
नग़मए - गौतम किनारेपर तेरे गूँजा किया
बंसरीका मस्त तेरी गोदसे पैदा हुआ
तेरे साहिलपर[3] कभी आया परेशाँ वासदेव
कंसका मारा हुआ मक़हूरो-हैराँ[4] वासदेव

कंसके ज़ुल्मो-सितमकी सख़्त हैबत[5] दिलपै थी
गोरधन पर इक नज़र थी और इक साहिलपै थी,
याद है अब तक तेरा तूफ़ाँ उठाना याद है,
गोरधनको देखकर मौजोंपर आना याद है,
किस क़दर जादू भरा था शौक़े-पाबोसी[6] तेरा,
तेरी बेताबी पै आख़िर कृष्णको रहम आ गया
कृष्णने अपना क़दम मौजे-रवाँपर[7] रख दिया
बोसे[8] देकर कृष्णके क़दमोंको तू बहने लगी

---

१. संगीत, २. कोखमें, ३. किनारेपर,घाटपर, ४. मुसीबतोंसे परेशान, ५. भय, ६. पाँव चूमनेका उत्साह, ७. उठती हुई लहरोंपर, ८. चुम्बन ।

माइले - मक़सूदो महवे - जुस्तजू[१] बहने लगी
नुज़हते-आग़ोश[२] थी, बाज़ीचा[३] थी, गहवारा[४] थी
आस्माने-हिन्दका बहता हुआ सय्यारा[५] थी,

क्या तुझे वह कृष्णका गेंदें उड़ाना याद है ?
साहिलोंको अपने बाज़ीचा बनाना याद है ?
गेंदका मौजोंपै गिरना कूदना वह कृष्णका
अज़दहेका[६] साँवरे - पैकरपै कुण्डल मारना
कृष्णका उस वक़्त भी बंसी बजाना याद है ?
नाचना और तेरी मौजोंको नचाना याद है ?
नागके फन्देसे बचकर बाहर आना याद है ?
कृष्ण जिसमें तैरते थे क्या वही दरिया है तू ?
सच बता ए मेरी जमना क्या वही जमना है तू ?

—रस-सागर

१. किसीकी खोजमें लीन अपने लक्ष्यकी ओर, २. सुगन्धित गोद, ३. क्रीड़ा-स्थल, ४. पालना, ५. नक्षत्र, ६. अजगरका ।

प्रेम-झरना

मेरे मनसे प्रेम जो फूटा, तुम मुझसे क्यों रूठे ?

चन्दरमाँ आकाशसे फूटा धरतीसे गुल-बूटे
ताक-झाँककी धुनमें सूरज चमका तारे टूटे
रात-मिलनके कारन दिनसे साँझकी नगरी छूटे
प्रेमकी इक चिंगारी प्रीतम रंग-रंगसे फूटे
तुम मुझसे क्यों रूठे ?

परबतकी छातीसे नद्दी फूटी शोर मचाती
मौजोंका सारंग बजाती, मीठे नग़मे गाती
मीठे-मीठे नग़मे गाती, मोती ख़ूब लुटाती
जिसने देखे उसने पाये, जिसने पाये लूटे
तुम मुझसे क्यों रूठे ?

सीपीकी गोदीमें मोती घुट-घुटके रह जाये
सीपीके बन्धनसे मोती काँपे और थर्राये
बरखाकी इक बूँदका बोसा मोतीको गरमाये
मोती सीपीके पट खोले और घबराकर फूटे
तुम मुझसे क्यों रूठे ?

—रंगमहल

ग़ज़लें और रुबाइयाँ

•

वह मेरी जौलाँगाह[1] नहीं, वह मेरा फ़र्शे-ख़्वाब[2] नहीं
जिस दरियामें तूफ़ान नहीं, जिन मौजोंमें गरदाब[3] नहीं
अश्कोंमें तलातुम[4] अब भी है, गो सीनेमें सैलाब[5] नहीं
जो दरिया दिलमें सूख गया, वह आँखोंमें पायाब[6] नहीं
आग़ोशमें[7] उसके तड़पती है नौख़ेज़[8] बहारोंकी बिजली
जो खेत अभी सर सब्ज़ नहीं, धरती जो अभी शादाब[9] नहीं
ख़ुश्क और फ़सुर्दा ख़ाकमें[10] भी बेताब है सोज़े-मव्वाज़ी[11]
सतहे-दरिया बेआब[12] सही, ओजेदरिया पायाब[13] नहीं
ख़ुद मेरी नज़र हस्तीपै[14] नहीं, क्या शम्सो-क़मर[15] क्या शामो-सहर
वह कौन - सी शै है दुनियामें जो मेरे लिए बेताब नहीं
आसान नहीं इस दुनियामें सपनोंके सहारे जी सकना
संगीन हक़ीक़त है दुनिया, यह कोई सुनेहरा ख़्वाब नहीं
जो महरो - वफ़ाके[16] पर्देमें हँस - हँसके लगाता है नश्तर
ऐ दोस्त ! निगाहे-दुश्मनमें वह हौसलए-अहबाब[17] नहीं
उभरे हुए सीनोंके साग़र, यह जाम छलकते आँखोंके
पीते हुए सदियाँ बीत गईं और इश्क़ अभी सैराब[18] नहीं

---

१. क्रीडास्थल, घुड़दौड़का मैदान, २. शयनकक्ष, सोनेका बिस्तरा, ३. लहरोंमें भँवर, ४. आँसुओंमें बहावकी लहरें, ५. बहाव, ६. थोड़ा पानी, जिसमें-से आदमी दरिया-पार पैदल जा सके, ७. गोदमें, ८. नव-अंकुरित, ९. हरी-भरी, १०. सूखी और मुर्झाई, ११. पानीकी लहरें आनेको उत्सुक, बेचैन, १२. पानीसे रिक्त, १३. दरियाकी गहराई कम पानीवाली नहीं, १४. अपने अस्तित्वपर, १५. सूर्य-चन्द्र, सन्ध्या-प्रातःकाल, १६. कृपा और प्रत्युपकारके, १७. इष्ट-मित्रों-जैसा हौसला, हिम्मत, १८. तृप्त ।

हस्ती[1] है ब-ज़ाहिर ऐ 'साग़र' ! आमेज़ए-ख़्वाबो-बेदारी[2]
और फिर भी जीना होश नहीं, और फिर भी हस्ती ख़्वाब नहीं

किश्तीको भँवरमें घिरने दे, मौजोंके थपेड़े सहने दे
ज़िन्दोंमें अगर जीना है तुझे, तूफ़ानकी हलचल रहने दे
धारेके मुआफ़िक़ बहना क्या, तौहीने - दस्तो - बाज़ू[3] है
परवर्दए - तूफ़ाँ[4] किश्तीको धारेके मुख़ालिफ़ बहने दे
मछलीकी तरह तड़पायेगा, एहसास[5] तुझे पायाबीका[6]
जीना है तो अपने दरियामें, इमकाने - तलातुम[7] रहने दे
ख़ामोश गुज़र हर तूफ़ाँसे, हर मंज़िलसे, हर साहिलसे[8]
दीवाना समझकर दुनियाको जो जीमें आये कहने दे
ऐ जोशे - तमन्ना[9] डाल भी दे इमरोज़की[10] गर्दनमें बाहें
जो महवे-ग़मे फ़र्दा[11] हैं उन्हें, महवे-ग़मे - फ़र्दा रहने दे
कुछ और हसीं हो जाते हैं, इस रूपमें वोह ऐ ज़ौक़े-नज़र !
इस प्याज़ी-प्याज़ी मुखड़ेपर अश्कोंके सितारे बहने दे
वह देख उफ़क़के साक़ीने[12] ख़ुर्शीदका 'साग़र'[13] छलकाया
यह रातके 'साग़र' टुकड़े कर, यह बादए-दोशीं[14] बहने दे

१. अस्तित्व, २. स्वप्न और जागृत अवस्थाका संगम, ३. बाहु-बलका अपमान, ४. तूफ़ानोंमें परवरिश पानेवाले, ५. भावना, चेतना, ६. घुटनेसे नीचे बहनेवाले पानीका, ७. बाढ़के आनेकी सम्भावना, ८. दरिया किनारेसे ९. अभिलाषाओंका उत्साह, १०. वर्तमानकी, ११. भविष्यकालकी चिन्ताओंमें लीन, १२. आकाश रूपी मधुबालाने, १३. सूर्य रूपी मदिरापात्र, १४. कल व्यतीत हुई रात रूपी शराब ।

काम आख़िर मेरा कैफ़े-नातमाम[1] आ ही गया
फिर कोई साग़र ब-कफ़ बादा ब-जाम[2] आ ही गया
जाल अपने नूरका[3] ताने रहे ख़ुरशीदो-माह[4]
नूर बरसाता मेरा माहे - तमाम[5] आ ही गया
है जहाँ इश्क़ो - हविसको[6] ऐतराफ़े - बेकसी[7]
तल्ख़िए-हस्तीके क़ुर्बां[8] वह मुक़ाम आ ही गया
रोकती ही रह गईं मासूम दूरन्देशियाँ
उनके लबपर मेरा ज़िक्रे - नातमाम आ ही गया
दिल कहाँ और उम्र भरका बारे - पामाली कहाँ
कुछ यह नाकारा तेरी गलियोंमें काम आ ही गया
तिश्नगीने मैकदेमे[9] कारे - क़ज़्ज़ाक़ी[10] किया
क़ूवते-बाज़ूसे मुझतक दौरे - जाम आ ही गया
जैसे 'साग़र'से छलक जाए मचलती मौजे-मै
काँपते होंटों पै उनके मेरा नाम आ ही गया

मरहबा सोज़े-सफ़र, ज़ौक़े-सफ़र, अज़्मे-सफ़र[11]
ख़ुद ही रहगीर[12] शबे-तार हूँ ख़ुद ही रहबर[13]
महरे-मादरमें है ख़्वाबीदा अभी नौए-बशर[14]
तिफ़्ले-ख़्वाबीदासे[15] क्या तजज़ियाए-नेकी-ओ-शर[16]

---

१. अतृप्त नशा, अधूरा नशा, २.मदिरा और मदिरापात्र हाथमें लिये, ३. प्रकाशका, ४. सूर्य-चन्द्र, ५. चन्द्रमुखी प्रियतमा, ६. प्रेम और वासनाको, ७. लाचारीकी सम्भावना, मजबूरीकी स्वीकृति, ८. जीवनकी विपदाओं, कडुवाहटोंपर न्योछावर, ९. प्यासने मदिरालयमें, १०. लुटेरापन। ११. यात्राके वास्ते तड़प, शौक़ और इरादेकी मजबूतीके लिए अभिनन्दन, १२. यात्री, १३. पथ-प्रदर्शक, १४. माताके उदरमें नवीन मानव सुप्त अवस्थामें है,१५.सोते हुए बालकसे,१६.नेकी और बदीका विश्लेषण करना।

ख़ूने-आदमका यह सैलाब[1], यह ग़मका महशर[2]
इसी महशरसे उभरनेको है इक राह गुज़र[3]
जंगके तब्लसे[4] अम्ने-अब्दी[5] फूटेगा
कि यह तूफ़ाँ है नवा संजिए-तूफ़ाने-दिगर[6]
शबे-तूफ़ाँके[7] घटाटोप अँधेरेकी क़सम
मौज गरदाब है गहवारए-अनवार सहर[8]
मेरी मायूसिए-तक़दीरपै[9] आँसू न बहा
ख़ाके-बरबाद ही बन जायगी इक रोज़ शरर[10]
कम अगर हों तो हमें जुरअते-नौ[11] मिलती है
अहले-परवाज़[12] नहीं बन्दए-ज़ोरे-शहपर[13]
ताबःके आह यह रौंदी हुई राहोंका तवाफ़[14]
एक नया ज़ौक़े-जहाद[15], एक नया अज़्मे-सफ़र[16]
कम-से-कम इतनी बुलन्दीपै तो हो तेरा मुक़ाम
कि तेरे सायेमें हों ख़ुद तेरे नज्मो-अख़्तर[17]
कर्बे-इफ़लाक है ऐ दोस्त! सितारोंका[18] हजूम
इसी अनवारके गरदाबसे फूटेगी सहर[19]

१. मानव-रक्तकी यह बाढ़, २. प्रलय, ३. मार्ग, रास्ता, ४. युद्धके नक़्क़ारेसे, ५. स्थायी शान्ति, ६. दूसरे तूफ़ानोंका स्वर, ७. तूफ़ानकी रातके, ८. लहरोंका भँवर ही प्रकाशमान अरुणोदयका पालना है, ९. भोले भाग्यपर, १०. चिंगारी, ११. नवीन साहस, १२. परिन्दे, १३. चमगीदड़की उड़ानके मोहताज नहीं, १४. रौंदी हुई राहोंके कब तक चक्कर लगेंगे? १५. धर्म-युद्धका शौक़, १६. यात्रा करनेका संकल्प १७. ग्रह-नक्षत्र, १८. नक्षत्रोंका समूह आकाशमें बेचैन हैं, १९. प्रकाशके भँवरसे अरुणोदय होगा ।

फ़ितरते-बहरने[1] सदियोंमें तराशा है जिसे
गोशे-क़ुदरतका वोह आवेज़ए-नादर है गुहर[2]
जिसमें महलूल है ज़हराबे-तअ़ल्लुककी मिठास[3]
साफ़ इक़रारे-मुहब्बत है वह नफ़रतकी नज़र
तल्ख़ो - नाबीना हक़ायक़से गराँबार[4] न हो
यही नाबीना हक़ायक तुझे बख़्शेंगे नज़र
साग़रे - मैसे छलकती है निशाते - अब्दी[5]
मेरी तौहीन है इस वक़्त ग़मे-नेकी-ओ-शर[6]

[२६ जनवरी १९५७ ई०]

सदियोंकी शबे-ग़मको[7] सहर[8] हमने बनाया
ज़र्रातको[9] ख़ुरशीदो - क़मर[10] हमने बनाया
बरफ़ाबके[11] सीनेमें[12] किये हमने चराग़ाँ[13]
हर मौजए - दरियाको शरर[14] हमने बनाया

---

१. लहरके स्वभावने, लहरोंने, २. अनमोल, चमकता हुआ मोती, ३. सम्बन्धोंके विषकी मिठास जिसमें घुली मिली है. ४. कड़वी और अन्धी वास्तविकतासे परेशान न हो, ५. स्थायी सुख, ६. नेकी और बदीका रंज करना, ७. दुःखरूपी रातको, ८. प्रातःकाल, ९. धूलके कणोंको, १०. सूर्य-चन्द्र, ११. बर्फीले १२. स्थानोंमें, १३. दीपक जलाये, १४. चिंगारियाँ।

हर मौजमें महराबो - दरो - बाम तराशे[1]
तूफ़ानके आग़ोशमें[2] घर हमने बनाया
शबनमसे[3] नहीं, रंग दिया दिलके लहूसे
हर ख़ारको[4] इक बर्ग-गुले-तर[5] हमने बनाया
हर ख़ारके सीनेसे चमन हमने खिलाये
हर फूलको फ़रदौसे - नज़र[6] हमने बनाया
जब बर्क़ हुई शोला फ़िगन[7] लाला-ओ-गुलपर[8]
हर फूलकी पत्तीको सिपहर[9] हमने बनाया
हटकर रविशे-आमसे[10] इक राह निकाली
काँटोंसे भरा राहगुज़र[11] हमने बनाया
गर शौक़े - तसादुम[12] है तो टकराये ज़माना
इक उम्रमें पत्थरका जिगर हमने बनाया

मई १९५८ ई०]

वह दर्दे-इश्क़ देकर ज़र्फ़े-हस्ती[13] आज़माते हैं
हम इस बारे-गराँको[14] ज़िन्दगी कहकर उठाते हैं
तलातुम[15] ही नहीं ऐ हिम्मते-दिल! वजहे ग़र क़ाबी[16]
कि अक्सर बे-तलातुम भी सफ़ीने[17] डूब जाते हैं

१. प्रत्येक लहरमें महराब, दर्वाज़े, कमरे निर्माण किये, २. गोदमें, ३.ओससे, ४. काँटेको, ५. सरसब्ज़ फूल-पत्ते, ६. देखने योग्य जन्नत, ७. बिजली आग उगलने लगी, ८. फूलोंपर, ९. ढाल, १०. पुरातन परम्परासे, ११. मार्ग, १२. लड़ने-भिड़नेका चाव, १३. जीवनकी पात्रता, १४. भारी बोझको, १५. बहाव, १६. डूबनेका कारण, १७. नौकाएँ।

उभरते हैं जमाले-ज़िन्दगी[१] बनकर मेरे फ़नमें[२]
ज़मानेके वोह नश्तर जो जिगरमें डूब जाते हैं
कई रातें तेरी फ़ुरक़तमें ऐसी भी गुज़रती हैं
नहीं होता इक आँसू और दो आलम डूब जाते हैं
चमन उसका, बहार उसकी, शबे बेदारियाँ[३] उसकी
जिसे 'साग़र' नसीमे-ज़ुल्फ़के[४] झोंके जगाते हैं

दुनियासे जो पंजाकश[५] होकर जीनेका बढ़ावा देती थी
वह रूहे-सितम[६] दुश्मनमें नहीं, वह ख़ूए-वफ़ा[७] यारोंमें नहीं

उन्हें तूफ़ान भी न आया रास
जो मुख़ालिफ़ रुख़ोंमें बह न सके
हर नफ़स[८] मौतसे सिवा था मगर
मौत हम ज़िन्दगीको कह न सके
देखकर मेरी बेहुशीका जमाल
होशमें वह भी अपने रह न सके

शोलए - बर्क़की[९] तरह दूरसे शोख़ियाँ न कर
सूरते - दामने - मुराद दस्ते - सवालमें भी आ

---

१. जीवन-सौन्दर्य्य, २. कलामें, ३. रात्रि जागरण, ४. प्रियतमाकी जुल्फ़ोंकी हवाके झोंके, ५. पंजेसे पंजा लड़ाकर, ६. अत्याचारी आत्मा, ७. नेकीकी आदत, ८. श्वास, ९. बिजलीकी।

गुल अपने, ग़ुंचे अपने, गुलसिताँ अपना, बहार अपनी
गवारा क्यों चमनमें रहके ज़ुल्मे - बाग़बाँ करलें ?
इसी ख़ाके - चमनसे अब्रे - ख़ूनी बनकर उठ्ठूगा
वह मेरे ख़ूनसे रंगीं क़बाए - गुलसिताँ कर लें

मिटने दे अपने जलवाए - रंगीं पै आज ही
क्या जाने क्या हो कल तेरी महफ़िलमें क्या न हो

मेरी फ़ितरत[1] है तूफ़ाँ और मैं आशोबे-फ़ितरत[2] हूँ
तसव्वुरका[3] भी दामन तर नहीं करता मैं साहिलसे[4]
मुसाफ़िरका तख़ैयुल[5] क्या, तसव्वुर[6] क्या, तअय्युन क्या
फिर आग़ाज़े - सफ़र है इन्तहाए - हद्दे - मंज़िलसे

बड़े जज़्बोंका हासिल है, यह शब बेदारियाँ[7] मेरी
सहर[8] होगी वहीं आवाज़ पहुँचेगी जहाँ मेरी

जहाँतूरो - हरम[9] जलवोंके आगे रक़्स[10] करते हैं
यह मैख़ाना उसी महफ़िलका इक पत्थर है बुनियादी

कहीं अल्फ़ाज़से रुकते हैं तूफ़ाँ
दुआ भी एक फ़सूने-नाख़ुदा[11] है

१. स्वभाव, २. प्रकृतिकी निगाह, ३. कल्पनाका, ४. किनारेसे, ५. कल्पना, विचार, ६. चिन्तन, ध्यान, ७. रातोंका जागना, ८. सुबह, ९. तूर पर्वत और काबा, १०. नृत्य, ११. मल्लाहका जादू ।

गुज़र चुका मैं हदोंसे, खड़े हैं फ़रज़ाने
कब आये हैं मेरी दीवानगीको समझाने ?
यह मेरा काम है मैं ज़िन्दगीको पहचानूँ
हयात होशमें कब है जो मुझको पहचाने

लज़्ज़ते-आग़ाज़ ही को जाविदाँ समझा था मैं
ऐ मुहब्बत तेरी तल्ख़ीको कहाँ समझा था मैं
शोलए-गुल बेहयात-ओ-बर्क़े ख़ातिर बे-सबात
किन अँधेरोंको चिराग़े-आशियाँ समझा था मैं
अब खुला मुझपर कि हैं ईमाए-तामीरे जदीद
बिजलियाँ जिनको हरीफ़े-आशियाँ समझा था मैं
राहज़नसे भी हूँ नालाँ राहबरका ज़िक्र क्या
कोई जज़्बा कारवाँ दर कारवाँ समझा था मैं
ग़ौरसे देखा तो गुमराहोंका एक सैलाब था
जिस हुजूमे हक़्क़-निगरको कारवाँ समझा था मैं

नहीं यह नग़मए-शोरे-सलासिल[1]
बहारे-नौके[2] क़दमोंकी सदा[3] है

मुज़्दा[4] ऐ तूफ़ाँके मारे!
वे झाँके मौजोंसे किनारे

यह भी ज़िन्दाँ[5] वह भी ज़िन्दाँ
क्या यह मस्जिद, क्या वह शिवाले

तिलस्मे-बन्दगी-ओ-ख़्वाजगीको[6] देख रहा हूँ
कभी ख़ुदाको कभी आदमीको देख रहा हूँ

शऊरे-इंसाँमें रफ़्ता-रफ़्ता नई कमानी-सी खुल रही है
मिसाले-ख़ुर्शीद[7] उभर रहा है निराला अफ़सूँ[8], नया फ़साना[9]
जुनूने-तामीर[10] है सलामत तो बर्क़ो-बाराँका[11] हमको क्या ग़म
कि हम बना लेंगे बर्क़ो-बाराँके दोशपर[12] अपना आशियाना[13]

---

१. बेड़ियोंकी झंकार, २–३. नवीन बहारोंके क़दमोंकी चाप है, ४. ख़ुशख़बरी, ५. बन्दीगृह, ६. नमाज़ों और पीरीके तिलिस्मोंको, ईश्वरोपासनाके ढोंग और साधु-वेषपर अन्धश्रद्धाके कारनामोंको, ७. सूर्यकी तरह, ८. जादू, ९. इतिहास, १०. निर्माणकी धुन, ११. बिजली-वर्षाका, १२. कन्धोंपर, १३. निवास-स्थान।

न आस्माँकी न अर्शे-बरींकी[1] बात करो
ज़मींकी गोदके पालो ! ज़मींकी बात करो

फ़ितरतने[2] जो बख़्शी भी तो वह शै[3] मुझे बख़्शी
जिस शैकी समाई है न दुनियाम न दींमें[4]

—साग़र-द्वारा

[२५६ मेंसे १२]

अदाएँ तेरी कोई समझा न समझे
हँसाकर रुलाया, रुलाकर हँसाया
न मैं हूँ न वो हैं न दीन और दुनिया
जुनूने-मोहब्बत[5] कहाँ खींच लाया ?

नाख़ुदाकी[6] रविशे-फ़िक्रने[7] मारा वरना
ग़र्क़ होता मैं जहाँपर वहीं साहिल[8] होता

अभीसे तंग-दिल है, क्यों ज़माना बदगुमाँ होकर
मुझे तो फैलना है, ज़िन्दगीकी दास्ताँ होकर
मुझे उठना है इस आतिश-कदेसे[9] सरगराँ[10] होकर
हवादिसने[11] बुझाया भी तो फैलूँगा धुँआ होकर

१. जन्नतकी, २. प्रकृतिने, ३. वस्तु, ४. मज़हबोंमें, ५. प्रेमोन्माद, ६. माँझीके, ७. सोचनेके तरीक़ेने, ८. किनारा, ९. अग्नि-स्थानसे, १०. अप्रसन्न, सर ऊँचा करके, ११. मुसीबतोंकी हवाने ।

निगाहें तो उठाओ कब तक आख़िर ये हया-कोशी[१]
मुझे बिलकुल ही खो दोगे पशेमाने-जफ़ा[२] होकर

कुछ तो लतीफ़ होतीं घड़ियाँ मुसीबतोंकी
तुम एक दिन तो मिलते दो दिनकी ज़िन्दगीमें

शक न कर मेरी ख़ुश्क आँखोंपर
यूँ भी आँसू बहाये जाते हैं

न रहबर[३], न मशअ़ल[४], न जादा[५], न मंज़िल[६]
चली जा रही है, जवानी दिवानी
बुढ़ापा जवानीका मुँह तक रहा है
उड़ी जा रही है, फ़लकपै[७] जवानी

दिलमें रहनेकी आर्ज़ू[८] थी हमें
आँखसे क्यों गिरा दिया तुमने ?

—रस-सागर

१. लाज-शर्म, २. अपने ज़ुल्मोंसे पछताकर, ३. पथ-प्रदर्शक, ४. मशाल, ५. मार्ग, ६. ठहरनेकी जगह, ७. आस्मानपर, ८. इच्छा ।

दैरो-हरममें[1] सर झुके, सरके लिए यह नंग[2] है
झुकता है अपना सर जहाँ वोह दर-ओ-आस्ताँ हैं और

यह ख़राम[3] उनका चमन-चमन यह तबस्सुम उनका समन-समन[4]
यह सकून[5] उनका रविश-रविश कि बहार महवे-बहार[6] है
वह चमनमें आई है झूमती, इसे तोड़ती, उसे चूमती
जिसे फूल कहते हैं, फ़स्ले-गुल, उसी कारवाँका ग़ुबार है
वह मलाहतें,[7] वह सबाहतें,[8] वह लताफ़तें,[9] वह नज़ाकतें[10]
वह नज़रमें जबसे समाये हैं, मुझे आँख उठाना भी बार[11] है
वह जिधर मचलके गुज़र गये हैं, फ़ज़ामें ग़र्क़े-बहार है
वह जहाँ झिजकके ठहर गये हैं, वहीं हुजूमे-बहार है
यह बुलन्द क़ामते-फ़ित्नागर[12], यह लटें जबींपै[13] इधर-उधर
कि हसीन सरोंकी ओटसे यह तुलूए-माहे-बहार[14] है

शोरिशे-तूफ़ाँ[15] मेरे पैग़ामकी है मुन्तज़िर[16]
साँसमें दरिया, नज़रमें नाख़ुदा रखता हूँ मैं
हुस्न दीवाना है जिसका, इश्क़ है जिसका असीर[17]
वह करिश्मा दामने-दिलमें छुपा रखता हूँ मैं

१. मन्दिर-मस्जिदमें, २. कलंक, ३. इठलाई हुई चाल, ४. चमेली-की क्यारियोंमें मुसकान, ५. मौन, ६. बहार स्वयं उन्हें निहारनेमें लीन है, ७. नमकीन रूप, ८. गौरवर्ण, ९. आनन्द, १०. कमनीयताएँ, ११. कठिन, १२. फ़ित्ना उठानेवाला लम्बा क़द, १३. माथेपै, १४. वसन्त ऋतुके चन्द्रमाका उदय, १५. तूफ़ानका शोर, १६. आदेशकी प्रतीक्षामें, १७. बन्दी।

सुना है यह जबसे कि वह आ रहे हैं
दिलो-जाँ दिवाने हुए जा रहे हैं
मुअत्तर[१] - मुअत्तर ख़रामाँ - ख़रामाँ[२]
नसीम[३] आ रही है कि वह आ रहे हैं
उन्हें बढ़के क्या नज़्र दें हम इलाही !
मताए - दिलो - जाँपै[४] शर्मा रहे हैं
कभी लालो-गौहर कभी लाल-ओ-गुल
अभी हँस रहे थे अभी गा रहे हैं
करमकी यह मजबूरियाँ अल्ला-अल्ला
नज़रसे दिलोंसे दिये जा रहे हैं

काफ़िर हूँ, मैं काफ़िर हूँ मेरा कुफ़्र-मुहब्बत
यह कुफ़्र मुझे हासिले-ईमाँ नज़र आया

यही मेरी आदमीयतकी दलीले-बरतरी है,
कि लगा नहीं जबींपर, कभी दाग़े-बेगुनाही

मुझे क्यों हो फ़िक्रे-शाहिद[५] कि मुआमला है रोशन
मैं तेरी खुली शहादत[६], तू मेरी खुली गवाही

---

१. महका हुआ, २. इठलायी हुई चाल, ३. प्रातःकालीन मृदुपवन, ४. दरिद्रतापर, ५. गवाहकी चिन्ता, ६. गवाही ।

यह ज़ालिम हवाएँ, यह काफ़िर घटाएँ
चली आईं तनहा, उन्हें भी तो लायें
ज़रूर उनसे मस हो गया कोई झोंका
महकती हुई आ रही हैं हवाएँ
हमारी इबादत[१] तो है याद उनकी
वह माबूद[२] होकर हमें भूल जायें

अल्लाहरे यह सिलसिलए-नामा-ओ-पैग़ाम[३]
आता है पयामी[४] कभी जाता है पयामी
उस नूरसे[५] अनवार फ़शाँ[६] है दिले-शाइर
महरो-मह-ओ-अंजुम[७] जिसे देते हैं, सलामी
उल्फ़त है मेरी नस्ल, मुहब्बत मेरा मज़हब
अफ़ग़ान हूँ, हिन्दी हूँ, न तुर्की हूँ, न शामी
हर रस्मपै ख़न्दाँ[८] है मेरी फ़िक्रे-जहाँबी
हर वहमसे बाला है मेरी ज़ाते-गरामी

क्या शै है, मुहब्बत भी कुहसारको ढाये है
तिरतोंको डुबोये है, डूबोंको तिराये है
जब प्रेमकी नद्दीमें तूफ़ाँन-सा आये है
नैया ही नहीं, नद्दी हिचकोले-से खाये है
यह तेरा तसव्वुर है या मेरी तमन्नाएँ
दिलमें कोई रह-रहकर दीपक-से जलाये है

१. उपासना, नमाज, २. उपास्य, ३. सन्देश और पत्रोंका क्रम, ४. सन्देश-वाहक, ५. प्रकाशसे, ६. प्रकाशमान, ७. सूर्य-चन्द्रकी सभाएँ, ८. हँसती हुई।

सीना हो दाग़दार क्यों, आँख हो अश्कबार[१] क्यों ?
ग़म कोई ताजरी[२] नहीं, ग़मका हो इश्तहार क्यों ?

बुलन्द अज़ वफ़ा-ओ-जफ़ा[३] हो गये हम
मुहब्बतसे भी मावरा हो गये हम

समझना तेरा कोई आसाँ है ज़ालिम !
यह क्या कम है ख़ुद-आशना हो गये हम
भटककर पड़ रहज़नोंके[४] जो हातों
लुटे इस क़दर रहनुमाँ[५] हो गये हम
जुनूने-ख़ुदीका[६] यह एजाज़[७] देखो
कि जब मौज आई ख़ुदा हो गये हम

चटकने न पाई थीं कलियाँ चमनमें
कि इस जाने-गुलसे[८] जुदा हो गये हम
मुहब्बतने उम्रे-अबद[९] हमको बख़्शी
मगर सब यह समझे फ़ना[१०] हो गये हम

मलता हूँ हाथ आह जब कि लग रही थी आग
क्यों उस घड़ी मैं भूलके घरमें नहीं रहा

१. आँसुओंसे गीली, २. व्यापार, ३. वफ़ा-जफ़ाके अनुभवसे उच्च, ४. लुटेरोंके, ५. पथ-प्रदर्शक, ६. अहम्मन्यताका पागलपन, ७. जादू, ८. फूल-जैसी प्रेयसीसे, ९. अमर ज़िन्दगी, १०. मृतक ।

क़ैदे-हयातो-जब्रे-मशैय्यत[1], उसपै फ़रेबे-मुख़्तारी[2] !
तुझसे बढ़कर ऐ ग़मे-हस्ती ! कोई ज़िन्दाँ[3] क्या होगा

दिलसे भी ग़मे-इश्क़का चर्चा नहीं करते
हम उनको ख़यालोंमें भी रुसवा नहीं करते
आँखोंसे भी हम अर्ज़े-तमन्ना नहीं करते
ख़ामोश तक़ाज़ा भी गवारा नहीं करते
सज्दा भी है मनजुमलए - असबाबे - नुमाइश
जो ख़ुदसे गुज़र जाते हैं, सज्दा नहीं करते
जिसको है तेरी ज़ातसे एक गूना तआल्लुक़
वोह तेरे तग़ाफ़ुलकी भी परवा नहीं करते

—रंगमहलसे

१. जिन्दगीकी क़ैद और ईश्वरीय इच्छाओंकी पराधीनता, २. कर्म करनेमें स्वतंत्रता, ३. क़ैदख़ाना ।

रुबाइयात

चीतोंका है मकरो-दजल[1], कुत्तोंकी भँभोड़
बिच्छूकी है समैयत[2] तो अज़दहकी[3] मरोड़
कुछ हज़रते - बूज़नपै[4] मौक़ूफ़ नहीं
इंसान है सैकड़ों दरिन्दोंका[5] निचोड़

बे - रंग रुख़े-निगारे-फ़ितरत[6] हो जाय
बे नूर जबीने-इल्मो हिकमत[7] हो जाय
उठ जाय जो शाइरोंके चेहरेसे नक़ाब
इंसाँको शाइरीसे नफ़रत हो जाय

हर मीलपै फ़िरदौस[8] है, हर मोड़पै हूर[9]
हर गामपै[10] ख़ुम-सिताने-चश्मे मख़मूर[11]
है सीनए-हुस्नमें जो तल्ख़ाबए-ग़म[12]
इक आँख उसे भी देख लेता हूँ ज़रूर

रक़्से-साक़ी मस्तो - रअनापै[13] न जा
जश्ने-मै-ओ-जामो-साज़े-मीनापै न जा
हर मौजमें पल रहे हैं लाखों तूफ़ाँ
बहते हुए पुर सकूँ[14] दरियापै न जा

१. धोका-फ़रेब, चालाकी, २. बिच्छू-जैसे परमाणुओंसे बना हुआ, ३. नागकी, ४. बन्दर, ५. हिंसक पशुओंका, ६. प्रकृति शोभाहीन, ७. ज्ञानका मस्तक आभा रहित, ८. जन्नत, ९. अप्सराएँ, १०. क़दमपै, ११. मदिरालय और नशीली आँखें, १२. दुःखकी कड़ुआहट, १३. साक़ीके नृत्य एवं मस्ती तथा सुन्दरतापै, १४. शान्त ।

घूरेकी[1] बग़लमें लालए - माहजबीं[2]
कीचड़में कँवलकी ख़ान क़ाहे तमकीं
कहती है जिसे क़ादिरे-मुतलक़[3] दुनिया
क़ादिर[4] हो तो हो, वह साहिबे-ज़ौक़[5] नहीं

ऐ चन्द किरन ! नज़र झुकाये हुए चल
ज्योति आँचल तले छुपाये हुए चल
हर ज़र्रए-ख़ाकमें[6] हैं सूरज लरज़ाँ
धरतीपै मेरी क़दम जमाये हुए चल

हस्तीके दु:खोंको, बेकसीको समझो
ज़िन्दा हो अगर तो ज़िन्दगीको समझो
अल्लाहको समझा है न समझे कोई
इंसान अगर हो आदमीको समझो

ज़ख़्मी दिलको किसे दिखायें यह कहो
ख़ूँके आँसू किसे रुलायें यह कहो
जगपै बीती सो हमपै बीती 'साग़र' !
अपनी बीती किसे सुनायें यह कहो

खेनी क़रनोंसे[7] अपनी जलती ही रही
शोले बादे-ख़िज़ाँ[8] उगलती ही रही
वादा रहमतका[9] कलपै टलता ही रहा
और ज़ुल्मकी शाख़ थी कि फलती ही रही

१. कूड़ेके ढेरकी, २. चन्द्रमुखो, ३. ख़ुदा जो कि प्रत्येक कार्य करनेकी सामर्थ्य रखता है, ४. निर्माता, ५. सुरुचि सम्पन्न, ६. धूलके कणोंमें, ७. मुद्दतोंसे, ८. पतझड़की हवा अंगारे, ९. ख़ुदाका ।

इश्क़ रूहे-ज़िन्दगी[1] है, इश्क जाने-ज़िन्दगी[2]
एक चिंगारीसे रोशन है, जहाने-ज़िन्दगी[3]
इश्क़ने बख़्शी ज़मानेको है शाने-आज़ू
वर्ना तिश्ना[4] थी जहाँमें दास्ताने-आज़ू

-सागर-द्वारा

१. जीवन-सार, २. प्राणवायु, ३. विश्व, ४. अतृप्त, अधूरी।

अनारकली नाटक
का
एक दृश्य

•

मालूम नहीं अनारकली और सलीमकी दास्ताने-इश्क़ वास्तविक है या काल्पनिक। सम्भवतः सैयद इम्तियाजअलीताजने इस घटनाको पहले-पहल उजागर किया। उनकी जादूभरी लेखनीसे अनारकली तो प्रकाशमें आई ही, वे स्वयं भी उर्दू-संसारमें काफ़ी मशहूर हुए।

लगभग १९२८ ई० में 'अनारकली' मूकचलचित्र प्रदर्शित हुआ। जिसमें तत्कालीन ख्याति-प्राप्त मिस सुलोचनाने अनारकलीका और ए० बिल्लीमोरियाने सलीमका अभिनय किया था। यह फ़िल्म बहुत लोकप्रिय हुई। १९३१ के लगभग टॉकी फ़िल्मोंका प्रचलन हुआ तो उसी मूकचित्रको १९३२-३३ के क़रीब सवाक् रूप दिया गया और वह भी जनता-द्वारा बहुत सराहा गया। फिर १८-१९ वर्षके बाद १९५१-५२ के आस-पास पुनः अनारकली सवाक् चित्र बनाया गया, जिसमें बीना रायने अनारकलीका और प्रदीपने सलीमका अभिनय किया।

इन कहानियों और फ़िल्मोंका सार यह है कि अनारकली मुग़लअन्तःपुरकी एक परिचारिका थी, जो अपने अनुपम रूप-लावण्यके कारण सलीमके दिलो-दमाग़पर छा गई थी। सलीम और अनारकलीके हुस्नो-इश्क़की आँख-मिचौनीका खेल अकबरसे छिपा न रह सका। क्योंकि इश्क़, मुश्क और खाँसी ख़ुश्क छिपाये नहीं छिपते।

अनारकली एक नाचीज़ लौण्डी सलीमको अपने दामे-इश्क़में फँसाकर उसके दिलकी मलका न बन जाये, इसी आशंकासे अकबरने उस ख़तरेको जड़-मूलसे नष्ट करनेके लिए अनारकलीको दीवारमें चुनवा दिया और सलीम सिवाय हाथ मलनेके और कुछ न कर सका। अपनी प्रियतमाको मृत्युमुखमें नृशंसतापूर्वक धकेले जाते देखता रहा और अकर्मण्य-सा खड़ा रहा।

पाठकों और दर्शकोंके हृदयमें यह प्रश्न फाँसकी तरह खटकता रहा है कि सलीम जब इतना निरीह, असमर्थ, बेबस और लाचार था तो उसने

ग़रीब लौण्डीपर क्यों डोरे डाले ? यदि वह अकबरकी शक्तिके सामने अशक्त एवं निर्बल था, तो भी अपनी जानपर तो खेल ही सकता था। यह क्या कि अनारकली दम तोड़ती रही, दीवारमें जीवित चुनी जाती रही, मौतके मुँहमें बलात् धकेली जाती रही और 'सफ़ी' लखनवीके इस शेरके अनुसार सलीम कापुरुषोंकी तरह खड़ा हुआ टसुवे बहाता रहा—

ज़ोर ही क्या था जफ़ाए-बाग़बाँ[1] देखा किये
आशियाँ[2] उजड़ा किया हम नातवाँ[3] देखा किये

पाठकों और दर्शकोंकी इसी खटकको 'साग़र'ने महसूस किया। उनका यह नाटक प्रारम्भ ही अनारकलीकी शहादतके बाद होता है। जहाँगीरको जब मालूम होता है कि अनारकली प्रेम-वेदीपर बलि चढ़ा दी गई है तो वह बेहोश हो जाता है, और स्वप्नमें अपनी प्रेयसी अनारकलीके साथ ऐसे दिव्य प्रेम-लोकमें विचरण करता है, जो कि प्रेम और समानतारूपी सूर्य-चन्द्रसे आलोकित है। उस प्रेम-नगरके वैभव, अनारकली-सलीमके प्रेम-संवाद और वहाँके वातावरणका चित्र साग़र साहबने अपनी शाइराना-तूलिकासे इतना कलापूर्ण और मनमोहक अंकित किया है कि नज़रें हटाये नहीं हटतीं।

सलीम स्वप्नमें अपनी प्रेयसीके साथ आनन्दरत है कि स्वप्नमें ही उसे किसीके क़दमोंकी चाप सुनाई देती है। वह अकबर और कामरानके क़दमोंकी चाप है। इस लोकमें भी अकबरके आजानेसे अनारकली सिहर उठती है, किन्तु सलीमका विद्रोही हृदय उबल पड़ता है। और बाप-बेटोंमें वह दन्दान-शिकन वाद-विवाद होता है कि मन झूम-झूम उठता है। साग़र साहबका शाइराना कमाल यह है कि अकबर और सलीमके वार्तालापमें किसीके साथ पक्षपात नहीं किया है। सलीम अपने विद्रोही-हृदयके उद्‌गार और अनारकलीके प्रति आसक्तिके भाव जब व्यक्त करता है तो ऐसा महसूस होने लगता है कि अकबरसे कोई जवाब देते नहीं बनेगा और

१. मालीके अत्याचार, २. नीड़, घर, ३. कमज़ोर।

वह अपना सर थामकर रह जायगा। लेकिन अकबर जब अपने जाहो-जलालमें बोलता है तो मालूम होता है कि सलीम इस बार ज़रूर अब्बा-हुज़ूरकी क़दमबोसीको झुक जायगा। बाप-बेटे एक-दूसरेकी बातको इस सलीक़ेसे काटते हैं कि सलीमसे अदबका दामन नहीं छूटने पाता और अकबर पिदराना मुहब्बतसे सरशार नज़र आता है।

यह समूचा नाटक साग़र साहबने मुक्तछन्दमें नज़्म किया है। लेकिन इस कौशलसे कि गद्य-पद्य दोनों प्रकारके प्रेमी आनन्द ले सकें। यह नाटक आलइण्डिया रेडियो दिल्ली और आकाशवाणीके भिन्न-भिन्न केन्द्रोंसे कई बार प्रसारित हो चुका है। रेडियोपर रिहर्सलके लिए भेजे जानेसे पूर्व स्वय साग़र साहबकी ज़बाने-मुबारकसे यह नाटक सुननेका हमें सौभाग्य प्राप्त है।

स्थानाभावके कारण इस नाटकका केवल सलीम-अकबर वाला अंश दिया जा रहा है।

अकबर और सलीमका वार्तालाप

सलीम : न कह कि जश्ने-ज़िन्दगी[1], फ़रेबे-ऐतबार[2] है,
उठा रुबाव[3] मुतरिबा[4]! कि सुबहे-नौबहार[5] है,
अनार : मिरी बहार! मिरी ज़िन्दगी!! मिरे माबूद[6]!!
ज़रा उठा के मुझे क़रमज़ी[7] रुबाब तो दो
अजीब मंज़रे-इबरत गुदाज़[8] देखा है,

- - - - - - - -

१. जीवन-उत्सव, २. विश्वासमें धोका, ३. बेला—जैसा वाद्ययंत्र, ४. संगीतज्ञा प्रेयसी, ५. नवीन सूर्योदय, ६. पूज्य, ७. लाल-सुर्ख़, ८. मधुर, शिक्षापूर्ण दृश्य, भयावह, हृदयभेदी स्वप्न।

द—३—८

वफ़ूरे-ख़ौफ़से[1] सीनेमें दिल धड़कता है ।

सलीम : उदास-उदास है चहरा, अर्क़-अर्क़ है जबीं[2]
मिरी अनारकली !
मगर ये कुछ भी नहीं, मगर ये कुछ भी नहीं,
हज़ार मंज़रे-इबरत गुदाज़ गुज़रे हैं,
हज़ार मंज़रे-इबरत-गुदाज़ गुज़रेंगे,
मगर कमाले-मुहब्बतके फ़ैजसे[3] हम-तुम
हर-इक मुक़ामसे सरशारे-नाज़[4] गुज़रे हैं,
हर-इक मुक़ामसे सरशारे-नाज़ गुज़रेंगे–
बहार छाई है मुतरब ! उठा रुबाब उठा,

[रक़्स और गाना]

[दूरसे पाँवकी आवाज़]

[कामरान और अकबरे-आज़म आते हैं]

सलीम : कौन हो तुम ? मुसल्लह[5] सिपाही !

अनार : **[ख़ौफ़ ज़दा होकर]** साहबे-आलम !
कलीको अपने दामनमें छुपालो

कामरान : साहबे-आलम !

सलीम : नक़ाब उलटके निगाहें मिलाके बात करो,

कामरान : आदाबो-सलाम शाहज़ादे !

सलीम : कौन ? बख़्तयार ? कामरान ! किसलिए आये हो ?

---

१. भयकी अधिकतासे, २. पसीना-पसीना है मस्तक, ३. कृपासे, ४. मस्त साभिमान, ५. सैनिक वेशमें सज्जित ।

क्या ख़बर लाये हो ?
और यह दूसरा कौन है ?
कौन है यह मुसल्लह सिपाही ?

[क़रीब आकर कानाफ़ूसीके अन्दाज़में]

कामरान : ये सिपाही नहीं ख़ुद हैं ज़िल्ले-इलाही,

सलीम : ज़िल्ले-इलाही ?

अनार : ज़िल्ले-इलाही ?

सलीम : इस सल्तनते-अम्नो-मुहब्बतकी[१] हदोंमें,
दाख़िल वे हुए किसकी इजाज़तसे बताओ,
यहाँ कैसे आये, यहाँ क्यों वे आये,
यहाँ अम्नो - उल्फ़तकी है हुक्मरानी,[२]
यहाँ बोलबाला है हुस्नो-वफ़ाका,
यहाँ मौतक़िद है जुनूँकी जवानी,[३]

कामरान : सँभलकर ज़रा बात कीजे सँभलकर
कि जल्वा-कनाँ हैं[४] शहंशाह अकबर

सलीम : शहंशाह अकबर ! शहंशाह अकबर !
सलीम अब नहीं सिर्फ़ एक शाहज़ादा,
कि वह है शहंशाह मुल्के-मुहब्बत[५],
कली उसकी इक़्लीमे-उल्फ़तकी रानी[६],
ये दरिया, ये चश्मे, ये सरवत[७], ये तारे,
ये आफ़ाके-गुल[८] इसकी है राजधानी

---

१. प्रेम और शान्तिके राज्यमें, २. शासन, ३. यौवन प्रेमोन्मादका अनुयायी है, ४. प्रत्यक्ष प्रकाशमान, ५. प्रेम-जगत्का अधिपति, ६. प्रेम-महाद्वीपकी सम्राज्ञी, ७. शासन, हुकूमत ८. उद्यानरूपी विश्व ।

कामरान : [**अदबके साथ सलीमसे क़रीब होकर**] साहबे-
आलम ! सँभलकर ज़रा बात कीजिए, सँभलकर,
क़रीब आरहे हैं शहंशाह अकबर ।

सलीम : [**बिफ़र कर**] कामरान !
अभी मेरी इंसानियत ताज़ा दम है,
ख़ुदीका समन्दर रगोंमें रवाँ है,[१]
यह उरियाँ हक़ीक़त[२] नहीं जानते हो,
जवानी बग़ावत, बग़ावत जवानी !

[**अकबर आगे बढ़कर नक़ाब उलट देता है**]

अकबर : ऐ जवानीके ज़ोममें सरशार[३]
ऐ बग़ावतके जज़्बए-बेदार[४],
अक़्ल है जज़्बए-बग़ावत-ज़ाद,
अक़्लसे सीख ज़िन्दगीके रमूज़,[५]
इश्क़ पाबन्द अक़्ल है आज़ाद ।
अक़्ल ख़ल्लाक़,[६] अक़्ल मुअज़्ज़िज़गर[७]—
अक़्ल रहबर है[८], अक़्ल शमए-सफ़र[९]

सलीम : जिन अँधेरोंमें जाते हुए अक़्लके रूहो—
दिल काँपते हैं, क़दम काँपते हैं ।
उन अँधेरोंमें लेकर चिराग़े-अबद[१०]
इश्क़ होता है दराना गर्मे-सफ़र[११]

१. प्रवाहित, २. वास्तविकता, नग्न सचाई, ३. उन्मत्त, भीगे हुए, ४. विद्रोहकी जागरूक भावना, ५. भेद, ६. निर्माता, ७. प्रतिष्ठा बढ़ानेवाली, ८. मार्ग-दर्शक, ९. मार्ग-दीप, १०. अनन्तकाल प्रकाश देनेवाला दीपक, ११. अक्षुण्ण प्रकाश लेकर इश्क़ यात्राके लिए निर्भय निर्द्वन्द्व बढ़ता है ।

अकबर : ऐ पिसर[1] मेरी रूह[2] मेरे हबीब[3],
ऐ मेरी ज़िन्दगीके मौसमे-गुल !
ऐ मेरी रूहके सकूने-तमाम,[4]
ऐ मेरी अज़्मते-शाहीके नक़ीब,[5]
अक़्ल नक़्क़ाश[6] अक़्ल है फ़नकार[7]
अक़्ल तामीर[8] अक़्ल है मेमार[9]
अक़्ल बुनियाद है तमद्दुनकी[10]
सलीम : मेरी बेबाकि-ए-कलाम मुआफ़[11] ।
इश्क़ मेमार है तमद्दुनका,[12]
इसके रमसे सुस्त होता है अदम[13]
इसके लम्से-गरमके आहगसे[14]
पत्थरोंमें गुनगुनाते हैं सनम
यह जहाँ, यह ख़ुश्क सहराए-हयात,[15]
ढेर थी ख़ाशाकका[16] यह कायनात[17]
फूल थे, लेकिन न था ज़ौक़े-नमू[18],
था न तारोंको तबस्सुमका[19] शऊर

१. पुत्र, २. प्राण, ३. प्रिय, ४. पूर्ण सुख-चैन, ५. साम्राज्य-प्रतिष्ठाके प्रतीक, ६. चित्रकार, ७. कलाकार, ८. निर्माण, ९. निर्माता, १०. संस्कृतिकी नींव, ११. स्पष्ट कथनके लिए क्षमा करें, १२. संस्कृतिका निर्माता, १३. प्रेमके अभावमें मानव अकर्मण्य हो जाता है, १४. उत्तेजना-पूर्ण स्पर्शरूपी रागसे, १५. प्रेम बिना जीवन ख़ुश्क मरुस्थल था, १६. घास-तिनकोंका, १७. विश्व, दुनिया, १८. विकसित होनेका चाव, १९. मसकरानेका ।

और न झरनोंको तरन्नुमका शऊर,
शाना था, पर न था अहसासे-बू[1]
हर रगे-नैमें तरन्नुमका हुजूम[2],
हर किरनकी गोदमें सैलाबे-नूर[3]
फिर भी थी बेनूर[4], तारीक[5] और बीराँ,
गुरसना[6] और तिश्ना[7] रूहे-ज़िन्दगी[8]

अकबर : अक़्लने दी रोशनी, अक़्लने बख़्शा इसे, बादाए-ज़हने-रसा[9] और फ़िक्रका आबे-हयात[10]

सलीम : फ़िक्र क़द्रे-आरज़ी[11] है, इश्क़ क़द्रे-दायमी[12]

अकबर : फ़िक्र क़द्रे-आरज़ी ?
फ़िक्र तो इल्हामकी[13] इक क़िस्म है
इश्क़ यक्सर आरज़ी[14] है, इश्क़ यक्सर बेसबात[15]

सलीम : इश्क़ यक्सर बेसिबात ?
इश्क़ है मैराजे-इंसां[16], इश्क़ है वहिए-हयात[17]
इश्क़ ओजे-फ़िक्र पस्तीके[18] लिए,
इश्क़ है महमेज़[19] हस्तीके लिए

---

१. कन्धे थे, लेकिन ज़ुल्फ़ोंकी सुगन्धसे अपरिचित, २. संगीत-धमनियोंमें, संगीत प्रवाहित, ३. प्रकाशकी बाढ़, ४. प्रकाशरहित, ५. अँधेरी, ६-७. भूखी-प्यासी, ८. जीवन-प्राण, ९. उच्च मस्तिष्करूपी सुरा, १०. चिन्तनका अमृत, ११. सोच-विचार अस्थायी है, १२. प्रेम स्थायी निधि है, १३. देव-वाणी, ईश्वरीय सन्देश सुननेकी शक्ति, १४. अस्थायी, क्षणिक, १५. अनित्य, नापायेदार, कमज़ोर, १६. मानवलक्ष्य, १७. जीवनके लिए ईश्वरीय सन्देश, १८. प्रेम-चिन्तन पतनसे उत्थान दिलाता है, १९. घोड़ेको एड़ देनेका काँटा जो सवारोंकी एड़ीमें लगा होता है ।

जुस्तजूए-हुस्नमें थी तारतार[१],
हर रगे-शहतूतमें जाने-हरीर
पत्थरोंमें मुज़्तरिब थी रूहे-ज़र[२],
फूलमें निकहतके थे अन्फ़ास[३] तंग
संगके आग़ोशमें अल्मास तंग[४]
और···और
हर सकूँको[५] रक़्स[६] बन जानेकी धुन,
हर उफ़क़में[७] इक धनक थी मुज़्तरिब,
हर कमरमें इक लचक थी बेक़रार
ताककी रग-रगमें मैख़ाने ख़मोश,
ख़ाकके ज़र्रोंमें पैमाने ख़मोश
ले रही थी साँस हर शैमें मुदाम[८]
ज़िन्दगीको दौरमें लानेकी धुन

अकबर : हूँ···ज़िन्दगीको दौरमें लानेकी धुन ?

सलीम : जी···! और यह फ़िरदौसे-इंसाँ[९] और यह
ख़ुल्दे-हयात[१०]
एक ऊसर था लक़ोदक़[११]

१. सौन्दर्यकी खोजमें बुद्धि तार-तार थी, २. धनकी आत्मा बेचैन थी, ३. फूलोंमें गन्धके श्वास परेशान थे, ४. पत्थरोंकी गोदियोंमें हीरे संकुचित थे, ५. शान्तिको, अकर्मण्यताको, ६. नृत्य, ७. आकाशमें, ८. हर समय, ९. मनुष्योंकी जन्नत, १०. जीवन-स्वर्ग, ११. बंजर, वीरान, ऊसर।

इक उबलता, खौलता, इक तुन्द बहरे-बेकराँ,[1]
कफ़े-दर दहाँ[2]
एक बदहयतमवाद, इक ख़ाम-सा अम्बारे-जाँ,
एक शोला इक धुआँ।

लहज़ा बदलकर]

और यकायक ख़ाम इस अम्बारे-जाँमें,
और यकायक तुन्द बहरे-बेकराँमें,
कुनमुनाई ज़िन्दगी
मुसकराई ज़िन्दगी
और
तुलू उफ़क़से[3] हुई अब्बलीं अनारकली,
हँसी अनारकली महजबीं[4] अनारकली
और पहले सलीमने उठकर
ले लिया अपने आग़ोशमें हल्क़ाए[5]-गर्मो-मदहोशमें
और पहले सलीमने बढ़कर
ख़ामाग़ासिरकी ज़ंजीरको पारा-पारा[6] किया
माद्दके सिलसिलको[7] पिघला दिया
आबो-आतिशकी दीवारको ढा दिया
और फिर ज़िन्दगी खिलखिलाने लगी,
इक नई जौतसे जगमगाने लगी

---

१. क्षुब्ध समुद्र, २. दरियाका झाग, ३. आकाशसे उदित हुई, ४. चन्द्रमुखी, ५. बाहुपाशमें, ६. व्यर्थकी परम्परागत रीति-रिवाज़ोंके बन्धनको, छिन्न-भिन्न किया ७. आधिभौतिकताको।

अपना परचम[1] उड़ाने लगी,
संगमें[2] सूरतें मुसकराने लगीं
चोबमें[3] साज़के तार थर्रा उठे,
फूलमें निकहतें[4] गुनगुनाने लगीं
हल्क़ए-माहको[5] छोड़कर चाँदनी
सब्ज़ धरतीपै चादर बिछाने लगी
हर रगे-नै-से[6] नग़मे[7] उबलने लगे
हर किरन नग़मए-सुबह गाने लगी
और तारीकियाँ[8] जगमगाने लगीं
शाख़े-गुलने दुपट्टा-सा लहरा दिया,
थान अतलसके परचम उड़ाने लगी
अब्र[9] बनकर फ़िज़ाओंपै[10] छाने लगे
और निखरकर गगनमें तिरंगी धनक,
ओढ़नी बादलोंमें उड़ाने लगी
रंग बनकर फ़िज़ाओंपै छाने लगी
आबशारोंमें[11] नग़मे मचलने लगे,
शाख़सारोंमें[12] जश्ने-बहाराँ[13] हुआ,
सीनाए-ताक़[14] मस्तीमें शक़[15] हो गया
ख़ाकसे जाम-ओ-साग़र उबलने लगे

१. ध्वजा, २. पत्थरोंमें, ३. लकड़ीमें, ४. सुगन्धियाँ, ५. चन्द्रमाकी परिधिको, ६. लयकी धमनियोंसे, ७. राग-गीत, ८. अँधेरे, ९. बादल, १०. अन्तरिक्ष, वातावरण, ११. जल-प्रपातमें, झरनोंमें, १२. पेड़ोंकी डालोंमें, १३. वसन्तोत्सव, १४. वक्षस्थल, १५. खिल गया, चाक हो गया।

पत्थरोंने चटखकर हसीं नज़्र[१] दी,
ज़र और अलमास[२] की, लालो-याक़ूतकी[३]
बहरकी तहसे उछले सदफ़ सतहपर[४],
और उगल दी हसीं मोतियोंकी लड़ीं
तड़पके इश्क़ने की पेश कश तमद्दुनकी[५],

अकबर : नहीं…

फ़िक्रकी पेशकश[६] थी यह शेख़ू[७]!
धड़कनें इरतक़ाके[८] सीनेकी, जज़्बए-इश्क़के
तवस्सुतसे[९]
ज़हने-इंसाँने पहली बार सुनी, और किरनोंकी सई
पैहमसे[१०]
सज सका यह जहाने-आबो-गिल[११],
जम सकी हुस्नो-इश्क़की महफ़िल

सलीम : जी नहीं…

इश्क़ न था तो कुछ भी न था,
गर इश्क़ न होता कुछ भी न होता
इक लावा-सा उबलता रहता
आलम-आलम, दुनिया-दुनिया

१. सुन्दर उपहार, २. धन और हीरेकी, ३. रत्नोंके नाम, ४. समुद्रके अन्तस्तलसे सीपियोंने उछलकर, ५. संस्कृतिकी, सभ्यताकी, ६. चिन्तन और ज्ञान द्वारा की गई भेंट, ७. जहाँगीरके दुलारका नाम, ८. प्रगति की, उन्नति की, ९. प्रेम-भावनाके माध्यमसे,१०. लगातार प्रयत्नोंसे, ११. हवा-मिट्टीका संसार।

आग अदमकी[1] सुलगती रहती
चुपके-चुपके तनहा-तनहा,
इश्क़के इक अश्क़े-रंगींसे[2]
इश्क़की इक मौजे-ख़न्दाँसे[3]
फूटा यह तख़लीक़का चश्मा[4]
बिखरी यह फ़िरदौसे-सरापा[5]

अकबर : ग़लत,—"कहते जिसको इश्क़ ख़लल है दिमाग़का[6]"
इश्क़ है जद्दो-जहदसे[7] बेहोश,
अक़्ल है इरतक़ाके दोश-ब-दोश[8]
इश्क़की सिर्फ़ जिस्म तक तग-ओ-ताज़[9],
पर अबदतक[10] है अक़्लकी परवाज़[11]
[**ग़ुस्सेसे**] इश्क़ इक दाग़े-नातमामी[12] है,
इश्क़ जज़्बातकी[13] ग़ुलामी है
इश्क़के सर्द महर[14] हाथोंने
ज़िन्दगीसे हरारतें[15] छीनीं—बाज़ुओंसे सलाबतें[16] छीनीं
हाथसे तेग़, तेग़से जौहर, रूहे-फ़नकारसे[17] उरूजे-हुनर[18]

१. यमलोककी, २. रंगीन आँसुओंसे, ३. मुसकानकी लहरसे, ४. उत्पादनका स्रोत, ५. साकार जन्नत, ६. मस्तिष्कका भ्रम, ७. संघर्ष और कर्तव्यसे, ८. उत्थानके साथ-साथ, ९. दौड़-धूप, १०. अन्त-तक, ११. उड़ान, पहुँच, १२. असफलताका धब्बा, १३. भावनाओंकी। १४. अकर्मण्य हाथोंने, निःशील या बेमुरव्वत हाथोंने, १५. उमंगें, उत्साह, १६. कठोरता, सख्ती, १७. कलाकारसे, १८. कलाकी श्रेष्ठता,

क्या कोई हयात[1] है यह ? इश्क़का यूँ ग़ुलाम हो जाना
एक जिस्मे हसींमें[2] खोजाना ?

सलीम : जिस्मकी प्यासको, जिस्मकी भूखको,
उसकी पैकारको[3], उसके असरारको[4]
एक आशिक़ ही जान सकता है,
एक बाग़ी[5] ही जान सकता है

अकबर : [**गर्म लहजेमें**] गुस्ताख़ !

सलीम : मेरी गुस्ताख़िए-कलाम मुआफ़ !

अकबर : मुबारक तुझे बाग़ियाना-जलाल[6],
मुबारक तुझे इन्तशारे-ख़याल[7]
मगर मेरे बाग़ी ! मेरे शेरे नर !!
बग़ावत अगर हक़से की[8] जायगी,
तो बुनियाद बाग़ीकी हिल जायगी

सलीम : मुऐय्यन[9] नहीं हक़की तारीफ़ अभी ?
सियासत[10] है हक़[11] या मुहब्बत है हक़,
हक़ीक़त[12] है हक़ या रिवायत[13] है हक़ !

अकबर : रिवायत है इंसाँके ख्वाबोंकी ताबीरे-रोशन[14]
रिवायत है सदियोंकी कोशिशका हासिल

१. जीवन-लक्ष्य, २. सुन्दर शरीरमें, ३. युद्धको, लड़ाईको, ४. रहस्यको, ५. विद्रोही, ६. विद्रोही तेज, ७. विचारोंकी अस्तव्यस्तता, ८. सचाईसे, ९. निश्चित, नियत, १०. राजनीति, ११. सचाई, १२. वास्तविकता, १३. अर्सेसे चला आया रिवाज, अनुकरण परम्परागत विश्वास, १४. स्वप्नोंका उज्ज्वल फल ।

हज़ारों निज़ामों[1], हज़ारों दिमाग़ों,
हज़ारों तराशोंका हासिल

सलीम : बजा है, बजा है,

अकबर : रिवायतमें शाइरका ख़ूने-जिगर है,
रिवायतमें मुतरिबका[2] रूहे-असर[3] है
रिवायतमें मौसीक़िए-हालो-माज़ीका इक मद्दे जज़रे
मुसलसिल[4]
रिवायतमें पैग़म्बरोंका तफ़क्कुर[5]

सलीम : बहुत ख़ूब ज़िल्ले-इलाही ! बहुत ख़ूब !!
[अकबरका मक़ालमा जारी रहता है]

अकबर : रिवायतमें मेमारके ज़हने-ख़ल्लाक़का
इक अरूज, इक तसल्सुल[6]
रिवायतमें तरतीबे-तहज़ीबके हल्के-हल्के
हज़ारों धुँधलके, हजारों दरीचे
रिवायात है तहज़ीबके काफ़िलेका सफ़र
और सफ़रकी फलक-बोस मंज़िल[7]
यह एक नस्लका दूसरी नस्लको ज़िन्दगानीका वरसा
हज़ारों निज़ामों, हज़ारों दिमागों, हज़ारों तराशोंका
हासिल

१. प्रबन्धों, २. गायकका, ३. प्रभाव, ४. समुद्रके पानीके उतारकी तरह भूत-वर्तमानका संगीत, ५. ईश्वरीय दूतोंका चिन्तन। ६. परम्परागत बातोंमें उन्नत और क्रमबद्ध ईश्वरीय मस्तिष्कका निर्माण है, ७. गगनचुम्बी यात्रा-लक्ष्य।

सलीम : जी—रिवायत क़नीज़ और आक़ाकी[1] दूरी ?
कँवलको कुचलना, मुहब्बतकी छातीपै
बारे-रिवायतके कोहसार[2] रखना
चमेलीके फूलों पै रखना सुलगते हुए नीम मुर्दा शरारे[3]
कफ़नको लिबासे-अरूसीमें[4] सीना
दिले-ताज़गी और ग़मे-क़फनगीका तसादम[5] !
नये ख़्वाब देखो तो मुजरिम, नये फूल सूँघो तो
मुजरिम, नये गीत गाओ तो मुजरिम
तलाशे-नबी बदअ़ते ज़िन्दगी है,
नई फ़िक्र जुर्मे-तफ़क्कुर है शोभा !

अकबर : नहीं मेरे बेटे ! नहीं मेरे शख़ू !!
[**सलीमके मक़ालमे जारी रहते हैं**]

सलीम : उभरते हुए ताज़ादम बलबलोंको
फसुरदा[6] तख़ैयुलसे बेजान टक्कर
नई ज़िन्दगीके शगुफ़्ता तसव्वुर[7]से
पज़मर्दगीके अलमका तसादम[8]
यह इक नस्लका दूसरी नस्लको ज़िन्दगानीका
वरसा[9] ?
यह शाहंशही और गदाईका[10] वरसा
ये बेचारगी और ख़ुदाईका वरसा ?

---

१. दासी और स्वामीका अन्तर, २. परम्पराओंके पहाड़, ३. अधबुझे हुए अंगारे, ४. दुल्हनके वस्त्रोंमें, ५. तुलना, बराबरी, ६. बासे विचार, ७. मुसकराती कल्पनाएँ, ८. मुर्झाये हुएसे तुलना, ९. उत्तराधिकार, १०. बादशाहत और फ़क़ीरीका ।

अकबर : शेख़ू !

सलीम : ये सदियोंके जब्रे-मुसल्सिल,[1]
ये ग़ारतगरी और क़ज़ाक़ियोंका अत्तिया[2]

अकबर : शेख़ू !

सलीम : रिवायत कली और टहनीकी दूरी ?

अकबर : मेरे संग-दिल और बाग़ी पिसर[3] !
हैं किस दर्जा ग़ारतगरी[4] में निडर
मेरे दिलको तूने किया काश-काश
मेरे ख्वाब तूने किये पाश-पाश[5]
मेरे ख़्वाब क्या थे ?—मेरे ख़्वाब क्या थे ??
कि तौरीशे-बाबरका तू हो अमीं[6]
क़दम तेरे चूमे ज़माना—ओ—ज़मीं
है जिस दोशपर[7] तेरे जुल्फ़े-निगार[8]—
ये जामे-ख़मीदाँ[9] ये अब्रे-बहार[10]
ये ज़ंजीरे-मैख़ानए-रोज़गार[11]
इस दोशपर काश इस दोशपर !?
और ताबन्दा[12] हो परचमे—बाबरी[13]
और रुख़शन्दा हो परचमे-क़ैसरी[14]

१. क्रमबद्ध अत्याचार, २. नाश और लुटेरोंकी धरोहर। ३. पत्थर हृदय और विद्रोही पुत्र, ४. नष्ट-भ्रष्ट करनेमें निर्भय, ५. टूक-टूक, ६. उत्तराधिकारी, ७. कन्धोंपर, ८. सुन्दर जुल्फ़ें, ९. ख़म हुआ सुरापात्र, १०. बादल, ११. मदिरापानरूपी जंज़ीरसे जकड़ा हुआ, १२. प्रकाशमान, १३. बाबरकी ध्वजा, १४. प्रभायुक्त साम्राज्यका झण्डा।

आले-तैमूरका परचमे-क़ाहरी
मेरे ख़्वाब क्या थे—? मेरे ख़्वाब क्या थे ?
कि तू अपने अजदादकी[1] अज़मतोंका मुहाफ़िज़[2] बने
कि तू आले-तैमूरकी रफ़अतोंका[3] मुहाफ़िज़ बने
हकूमत, अदालत, शुजाअत[4], शहादत[5], सदाक़त[6] और इंसानियत
तेरा ईमान हो तेरा ईफ़ान[7] हो
तेरी ज़िन्दगी हो तेरी जान हो
और हिन्दोस्ताँकी मुक़द्दस[8] ये धरती, मुनव्वर[9] ये धरती
तेरे नूरसे[10] और जगमगाये तेरे सायेमें और भी मुसकराये
तेरे राजमें और भी खिलखिलाये
ये क़ौमें, ये फ़िरके, ये इनका तमद्दुन[11],
ये इनके तमद्दुनके मख़सूस हल्क़े
ये क़ौमियत और क़ौमियतोंके निशाने
जुदा इनके गोशे अलग इनके ख़ाने
ये धर्मोंकी शमएँ, ये शमओंकी जोती,
ये जोतोंके महदूद हाले

१. पूर्वजोंकी, २. प्रतिष्ठाका रक्षक, ३. उड़ानोंका, ४. वीरता ५. बलिदान, ६. सचाई, ७. प्रण-पालन, वादा-वफ़ाई, ८. पवित्र, ९. चमकीली, १०. प्रकाशसे, ११. सभ्यता ।

ये लड़, हाँ ये इंसानियतकी मुक़द्दस ये लड़
ये लड़, जिसको मासूम इंसाँकी कम फ़हमियोंने[1] किया
दाना-दाना
ये लड़, जिसको धर्मोंकी कजबख़्शियोंके जूनूंने[2]
किया पारा-पारा
ये बेनज़्म[3] हालातकी एक सुमरन, ये बेरब्त तारीख़की[4]
एक सुमरन
इसे तेरा ज़ौक़े-परिस्तिश,[5] इसे तेरा जोशे-इबादत
तेरा हुस्ने-फ़िरासत,[6] तेरा दिल, तेरी रूह, तेरी मुहब्बत
इसे तेरा ज़ौक़े-तमन्ना,[7] तेरे हुस्न कैशीका सरशार
जज़्बा[8]
पिरो कर नई डोरमें इक अमिट रब्त देगा, इक अमर
हुस्न देगा
और हिन्दोस्ताँ—मेरा हिन्दोस्ताँ
तिश्ना बेरहम, नाबीना और आवारा संसारमें,[9]
एक मीनारए इश्क़ इंसान होगा
एक सैय्यारए-अम्न-ओ-ईमान[10] होगा
मेरा हिन्दोस्ताँ—मेरा हिन्दोस्ताँ

१. अज्ञानताने, २. सम्प्रदायोंकी संकुचित मनोवृत्तियोंने, ३. अव्यवस्थित, ४. क्रमरहित इतिहासकी, ५. उपासनाका शौक़, ६. सुरुचिपूर्ण निपुणता, ७. अभिलाषाओंका शौक़, ८. सुन्दर स्वभावके मादक भाव, ९. प्यासे, निर्दयी, अन्धे और आवारा विश्वमें मनुष्यका प्रकाश स्तम्भ भारत होगा, १०. सुख-शान्तिका प्रकाशमान नक्षत्र।

[एक साथ मुड़कर और थर्राते हुए लहजेमें सिर पकड़कर]

लेकिन ऐ संगेदिल ! लेकिन ऐ संगेदिल !

[सलीमकी तरफ़ मुड़कर]

मेरे ख़्वाब तूने किये पाश-पाश,[1]
मेरे दिलको तूने किया, क़ाश[2]-क़ाश
और मुग़ल नस्लकी काट दी तूने जड़

सलीम : मेरे दिलपर जफ़ाओंके आरे चले,
आपके ख़्वाब मैंने किये पाश-पाश ?
और मुग़ल नस्लकी काट दी मैंने जड़ ?
वक़्त सोता रहा और जो होना नहीं था वह होता रहा
वक़्तकी नब्ज़पर हाथ रखिए ज़रा,
वक़्त है ज़लज़ला, वक़्त सैलाब[3] है, वक़्त तूफ़ान है।
यह अज़ीम और तनावर दरख़्तोंको जड़से हिला डालता है,
यह हसीं रंग-महलोंको, मज़बूत क़िलोंको,
फ़र्शे-ज़मींपर झुका डालता है,

अकबर : यह नई बात क्या है ? यह हम जानते हैं
ज़मानेके तेवरको पहचानते हैं

सलीम : [**बात काटकर**] कितनी जब्बारें क़ौमें उठी ख़ाकसे
कितनी जीदार नस्लोंने अँगड़ाई ली

१. टूक-टूक, २. फाँक-फाँक, ३. बाढ़, ४. ज़ालिम ।

इसतरह जिसतरह पेड़पर इश्क़े-पेचाँ चढ़े
जैसे दरियाकी छातीसे तूफ़ाँ उठे
जैसे आँधी चले तेज़ रफ़्तारसे
और फिर हर तमद्दुनकी[1] हर क़ौमियतकी जड़ें,
वक्त ने बेझिझक काटकर फेंक दीं
वक्त है ज़लज़ला, वक्त सैलाब है, वक्त तूफ़ान है

अकबर : तेरे तूफ़ाँसे कम, तेरी आँधीसे कम,
तेरी बेरहमियोंसे बहुत कम मेरी जान !

[फ़र्व ताम्सुरसे सर पकड़कर पीछे मुड़ता है]

सलीम : मेरा तूफ़ाँ तो आकर गुज़र भी गया,
मैं निशानाते-तूफ़ाँका इक नक़्श हूँ
रूहे-तूफ़ानपर मुसकराता हुआ,

अकबर : **[आगे बढ़कर सलीमका बाज़ू पकड़कर]**
चल मेरे लख़्ते-दिल, मेरे नूरे-नज़र,
तू कहाँ आगया, तू कहाँ आ गया ?

सलीम : **[बाज़ू छुड़ाकर]**
आपने गर्चे लूटा था दिल खोलकर
दिलकी दुनिया मगर फिर यहाँ बस गई
कोई महकूम[2] है और न हाकिम[3] यहाँ
कोई मज़लूम[4] है और न ज़ालिम यहाँ

१. संस्कृतिकी, २. अधीन, आज्ञाकारी, ३. शासक, आज्ञा देनेवाला, ४. अत्याचार-पीड़ित ।

चप्पा-चप्पा पै नग़मा किना है यहाँ,
मुसकराती हुई बेख़तर ज़िन्दगी
रक़्स[१] करती है शामो-सहर[२] ज़िन्दगी
लाला-ओ-गुल सितारे लुटाते हुए
और सितारे हैं साग़र लुँढ़ाते हुए
क़स्र में[३] मोतियोंके यहाँ गुलफ़िशाँ[४]
और अमृतकी नहरें रवाँ-दर-रवाँ[५]
आस्मानोंसे मख़मूर अनवारकी
माहो-अंजुम चलाते हैं पिचकारियाँ[६]

अकबर : कुछ नहीं, कुछ नहीं यह फ़क़त है जुनूँ[७]

सलीम : इस दयारे-जुनूँ इस नये देश में
लौंडियाँ और शहज़ादियाँ एक हैं,
चोटियाँ एक हैं, वादियाँ[८] एक हैं
याँ न ऊँचाई है और न पस्ती[९] यहाँ,
रक़्समें हर तरफ़ इश्क़ो - मस्ती यहाँ
मौतको दाख़िलेकी इजाज़त नहीं,
गुनगुनाती है हरवक्त हस्ती यहाँ
यह मेरी अर्ज़े-इश्क़-ओ-मुसावात[१०] है
यह मेरी अर्ज़े-इश्क़-ओ-मुसावात है

---

१. नृत्य, २. सन्ध्या-प्रातःकाल, ३. प्रासाद; महलमें, ४. फूल जैसी मुसकान, ५. दरवाज़े-दरवाज़े बह रही हैं, ६. नशीली चाँदनी रंगकी चाँद तारे पिचकारियाँ चलाते हैं, ७. पागलपन, ८. पहाड़ जंगलोंकी घाटियाँ, ९. निचाई, गिरावट, १०. प्रेम और समानताका क्षेत्र ।

अकबर : [**ग़ुस्सेसे तड़पकर**]
और तेरी अर्ज़-इश्क़-ओ-मुसावातको
आन-की-आनमें ख़ाक कर दूँ अगर ?

सलीम : इश्क़को ख़ाक किसने किया है जो तुम कर सकोगे
और मुसावात इंसानकी प्यास है
प्यासको ख़ाक किसने किया है जो तुम कर सकोगे ?

अकबर : ये है तल्वार मेरी—वह लश्कर मेरा

सलीम : इस मेरे देशमें फ़ौजो-लश्करका चरचा नहीं है
इस मेरे देशमें तेग़-ओ-ख़ञ्जरका चरचा नहीं है
झूठ ममनूअ[1] है, छूत ममनूअ है,
जंग ममनूअ है, ख़ून ममनूअ है
और अम्नो-सदाक़त[2] मेरा दीन है
ज़िन्दगीकी मसर्रत[3] मेरा दीन है

अकबर : [**तंज़िया अन्दाज़में**[4]]
ज़िन्दगीकी मसर्रत मेरा दीन है ?
दीनके लफ़्ज़से खेलता है—तुझको मालूम है दीन
क्या है ?

सलीम : दीन है जज़्बाए-ख़िदमते-ख़ल्क़में[5] डूब जाना
दूसरोंके लिए अपनी हस्ती मिटाना
अपना घर फूँक कर दूसरोंका बसाना,

१. वर्जित, २. सुलह-सत्य, ३. ख़ुशी, ४. व्यंग्यमें, ५. जनताकी सेवामें।

हुस्नको छोड़कर, इश्क़को भूलकर,
इक नया काबाए-इश्क़े-इंसाँ[1] बनाना

[दीवानोंकी तरह आगे बढ़कर]

और यह काबए-इश्क़े-इंसाँ बनाया है मैंने
अपना घर ख़ाक मैंने किया है
तंग दामन रवायाते-बेरूहका[2]
चाक[3] मैंने किया है
जब्रे-शाहंशाहीके[4] कलेजे पै चढ़कर
क़स्रे-शाहंशाहीके[5] अज़ीम और संगीन सीनेपै मैंने
नया एक माबूद[6], नया इक कलीसा[7], नया एक
काबा
नया इक शिवाला सजाया है मैंने
इस शिवालेकी मेहराबे-तक़दीसमें[8]
इक चिराग़े मुहब्बत जलाया है मैंने
और फूलोंकी प्यासी, तड़पती ज़मींपर
एक लौंडीके[9] रंगीनो-नाज़ुक-तबस्सुमसे[10] जावेद[11]
गुलशन खिलाया है मैंने

१. मानव-प्रेम-मन्दिर, २. निष्प्राण अन्धविश्वासका, ३. दामन फाड़ा है, मिटाया है, ४. बादशाहतके ज़ुल्मोंके, ५. बादशाही क़िलोंके, ६. आराध्यदेव, ७. गिरजा, ८. पवित्रतामें, ९. दासीके (अनारकली), १०. मुसकानसे, ११. अक्षण्ण ।

और वह रफ़अते-बन्दगी[1] और वह अज़मते-ख़्वाजगी[2]
इस मुक़द्दस शिवालेकी माबूद[3] है
मेरी मस्जूद[4] है मेरा मक़सूद[5] है

अकबर : [**सलीमका बाज़ू पकड़कर**]
तू अँधेरेमें है मेरे शामो-सहर
मेरे सर[6]-ओ-समन[7] मेरे शम्सो-क़मर[8]
तेरे माबूदका तेरे मस्जूदका

[**लहजा बदल कर**]

तेरे मक़सूदका अमीं[9] हूँ मैं
लौट चल राजधानीको नूरे-नज़र
तू अँधेरेमें है मेरे शम्सो-क़मर

[**लहजा बदलकर**]

नस्ले[10]-नौ है तेरे लिए बेचैन
तेरी माबूद अस्लमें वह है
तुझे हिन्दोस्ताँ पुकारता है—
तेरा मस्जूद अस्ल में वह है
सल्तनत तेरे इन्तज़ारमें है—
तेरा मक़सूद अस्लमें वह है
ताजकी ज़ौफ़िशानियाँ[11] बेताब

१. उपासनाकी उच्चता, २. उपास्यकी महत्ता. ३. प्रतिमा, जिसकी उपासना की जाये, ४. पूज्य, सज्दा करने योग्य, ५. उद्देश्य, ६. सरो एक सुन्दर वृक्ष, जिसकी उपमा लम्बाईसे दी जाती है, ७. नवमल्लिका, चमेली, ८. सूर्य्य-चन्द्र, ९. संरक्षक, १०. नवीन पीढ़ी, ११. चमक-दमक ।

और ताज़े-शाहीका हर मोती तेरी फ़ुरक़तमें कर-मके[१]
शब ताब
और तेरे लम्सके[२] लिए पैहम[3] तख़्ते-शाहीका
दिल धड़कता है
तेग़े-शहंशाही[४] तड़पती है—न्याममें मिस्ले-माहीए-[५]
बेआब
तेरी मावूद अस्लमें वह है
आ मेरे साथ मेरे नूरे-नज़रे ज़िन्दगी तेरे इन्त-
ज़ारमें है

सलीम : [**तञ्जियाना**[६]]
ज़िन्दगी मेरे इन्तज़ारमें है ?
तेग़े-शाहंशही, तख़्ते-शाहंशही, ताजे-शाहंशही ?
सल्तनत, मादलत, मञ्जलत ?
मादरे-हिन्दकी यह मुसल्लिस निदा[७] ?
सारा माहौल[८] इन्तज़ारमें है ज़िन्दगी मेरे इन्तज़ार
में है

[**क़हक़हा**]

[**सलीमके क़हक़हेपर अनारकलीका मक़ालमा**[९]]

१. जुगनूंकी तरह चमक रहे हैं, २. स्पर्शके लिए, ३. हर वक़्त, ४. बादशाही तलवार, ५. म्यानमें तलवार मछलीकी तरह निर्जीव-सी है, ६. व्यंग्य रूपमें, ७. लगातार आवाज़, ८. वातावरण, ९. वार्तालाप।

अनारकली : साहबे आलम ! साहबे आलम ! !

[सलीम वग़ैर जवाब दिये कहता रहता है]

[अनारकलीकी तरफ़ इशारा करके]

सलीम : ज़िन्दगी ?

ज़िन्दगी तो मेरे पास है मेरे पहलूमें है,

ज़िन्दगी मेरी महबूबके मस्त गेसूमें है,

[अनारकलीके गेसू नुमायाँ करता है]

और—इस गेसूए-ख़म-ब-ख़मकी पुर असरार ख़ुशबूमें है

[लहजा बदल कर]

सलीम : गेसूए-ख़म-ब-ख़म, लाला-ज़ारे-इरम

ज़िन्दगी मेरी महबूबके मस्त गेसूमें है

अकबर : तोड़ दे इस हसीं दामे-इसरारको,[1]

सलीम : तोड़ दूँ ?—इस हसीं दामे इसरारको, मैं नहीं तोड़ सकता

अब नहीं तोड़ सकता,

अकबर : तोड़ दे—तोड़ दे—इस हसीं दामे-इसरारको

[अकबर आबदीदा[2] है]

सलीम : **[सलीम भी आबदीदा है]**

[आहिस्तगीसे] अब नहीं तोड़ सकता-अब नहीं तोड़ सकता

[तवानाए-मसर्रतसे[3]]

१. सुन्दर जादूके बन्धनको, २. नेत्रोंमें आँसू आ जाते हैं, ३. ख़ुशीमें ।

कि अब अनारकली—अब मेरी अनारकली,
फ़क़त सकूनो-तलातुमका इम्तिज़ाज[1] नहीं
फ़क़त वो रक़्सो-तरन्नुमका[2] इम्तिज़ाज नहीं

[अकबर फिर तब्दील हो जाता है]

अकबर : फ़क़त वह नाचती तितली फ़क़त गुबार-ए-रंग, फ़क़त गुबार-ए-रंग

सलीम : **[सलीम भी तब्दील होता है]** जी नहीं !
गुबार-ए-रंग नहीं, वह शबाबकी तमकी[3]
नहीं है अब वो फ़क़त पैकरे-गुदाज़ हसीं[4]

अकबर : फ़क़त शबाब, फ़क़त हुस्न, और फ़क़त इक जिस्म

सलीम : **[ज़रा गुस्सेमें]** हरगिज़ नहीं—
फ़क़त मुरक्किबे, ख़ाल-ओ-ख़तूत-ओ-रंग नहीं[5]
फ़क़त वो लम्से-अनासारका इव्तहाज नहीं

अकबर : फ़क़त वो नुक़्ले-हविस[6] है फ़क़त गिज़ाए-शबाब[7]
है सिर्फ़ ऐशका साज़े-हँसी[8] वह ख़ाना-ख़राब

सलीम : नहीं, नहीं,
वो सिर्फ़ कार-गुहे-जोशे-इम्बिसात[9] नहीं
वो सिर्फ़ रक़्से-गहे-जज़्बए-निशात[10] नहीं

१. चैन-तूफ़ानका मिश्रण नहीं, २. नाच-गानका। ३. यौवनकी शान, ४. गदराया जिस्म, ५. शक्लो-सूरतके कारण आकर्षण नहीं, ६. कामपिपासाकी मदिरा, ७. काम-वासना शान्त करनेका साधन, ८. सुन्दर वाद्य, ९. आनन्दकी वस्तु, १०. नृत्य और ऐशकी चीज़।

अकबर : तो क्या है ? गर वो तेरा हासिले-निशात[1] नहीं ?
तो क्या है ? गर वो मुहब्बतकी कायनात[2] नहीं ?

सलीम : [**आगे बढ़कर**] नये तसव्वुरे-आलमकी कायनात[3] है वह,
फ़क़त जुनूने-मुहब्बतकी कायनात नहीं,

अकबर **तंज़िया हँसीके साथ**]
नये तसव्वुरे-आलमकी कायनात है वह ?
नये तसव्वुरे-आलमके ख़्वाब देखता है ?

सलीम : हाँ, हाँ, वो मेरे ख़्वाबकी ताबीरे-जिन्दा-ओ-रोशन[4]
वो नस्ले-नौके[5] लिए इक बशारते-उज़्मा[6]

अकबर : कि पेश ख़ेमा है बरबादिए-तमद्दुनकी[7]

सलीम : [**अपने जज़्बेमें**] नहीं—
वह इक इशारा है तब्दीलिए-तमद्दुनका[8]
नई हयात[9] नई सल्तनतकी वह बानी

अकबर : वह इक शरारा है जिसकी लपेटमें आकर,
सुलग उठेगा तेरा शबिस्ताने-मुस्तक़बिल[10]
तेरा कारवाने-मुस्तक़बिल[11]

---

१. भोग-विलासका साधन, २. इश्ककी दुनिया, ३. जनताकी नवीन कल्पनाओंकी दुनिया, ४. स्वप्नका मूर्तिमान और चमकीला भविष्य, ५. नवीन पीढ़ीके लिए, ६. बुद्धिमान युग, ७. सभ्यताके विनाशका पहला पड़ाव, ८. सभ्यताके परिवर्त्तनका, ९. नव-जीवन, १०. भविष्य-रूपी शयनकक्ष, ११. भविष्यरूपी यात्री दल ।

सलीम : नहीं, हुज़ूर वो समए-हरीमे-फ़रदा[1] है
नये जहानकी वो रम्ज़े-लतीफ़ पुरमानी[2]
वो इक पयम्बरे-तहज़ीबे-नौका नाराए-हक़[3]

अकबर : [नाख़ुश होकर]
ख़ामोश, इक कनीज़[4] और पयम्बरे-तहज़ीब[5] ?

सलीम : जी, इक कनीज़ और पयम्बरे-तहज़ीब

अकबर : क्या कहा,
वो इक किनारा तमन्नाए-कारमन्दाका,
वह इस्तआरा है मुस्तक़बिले-कनीज़ोंका,
नये शऊरके हाथोंमें एक महज़रे-खूं[6]
शेख़ ! कुछ नहीं, कुछ नहीं, ये फ़क़त है जुनूँ
कुछ नहीं कुछ नहीं, ये फ़क़त है जुनूँ
[फिर आबदीदा होकर]
मेरे शेख़ ! सख़्त-दिल ! ! नूरे जाँ ! ! !
किसने तुझपर किया है अनोखा फ़िसूँ[7] ?
कुछ नहीं, कुछ नहीं, ये फ़क़त है जुनूँ

[अकबर जाता है]

१. भविष्यरूपी काबेकी दीपक, २. सार्थक, आनन्दपूर्ण रहस्य, ३. नवीन सभ्यताके दूतकी सचाईका नारा, ४. परिचारिका, दासी, ५. सभ्यता का दूत, ६. नवसीखतड़की खूनके मुक़दमा सुननेका अधिकार, प्राण-दण्डकी आज्ञाकी मुहर, ७. जादू ।

अनारकली : [**दौड़ते हुए**] ज़िल्ले-इलाही !

[**कुछ देर रुककर घबरा कर सलीमकी तरफ़**]

साहबे आलम !

सलीम : [**अनारकलीसे बग़लगीर होते हुए**]

नये तसव्वुरे-आलमकी कायनात हो तुम,

फ़क़त जुनूने-मुहब्बतकी कायनात नहीं

[ड्राप]

सागरका परिचय

•

'साग़र' निज़ामी उर्दूके क़ौमी शाइर (राष्ट्र-कवि) हैं। आपने राष्ट्रीय नज़्में ही नहीं लिखीं, अपितु मन, वचन, कायसे शुद्ध राष्ट्रवादी और समाजवादी क़ौमी शाइर रहे हैं। अपने भारतके प्रति आपकी इतनी निष्काम भक्ति और लगन रही है कि न तो वे नवाबों एवं जागीरदारोंके प्रलोभनोंसे विचलित हुए और न सम्प्रदाय-वादियोंके बहकावों और भयोंसे डिग सके। आपके राष्ट्रीय रंगको न तो आपके आदरणीय बुज़ुर्ग ही फीका कर पाये और न आर्थिक संकट ही कोई दाग़-धब्बा लगा पाये। आप हर आँचमें तपे हुए और हर कसौटीपर खरे उतरे।

क़ौमी शाइर

'साग़र' साहबकी अभी मसे भी न भींगने पाईं थीं कि आप राष्ट्रीय-रंगमें सराबोर हो गये। हिन्दु-मुस्लिम-ऐक्यके प्रबल समर्थक और समाजवादी विचार-धाराके नग़मे गाने लगे। आपके उस्ताद 'सीमाब' अकबराबादीने जो कि ज़ाहिरा तौरपर स्वयं भी राष्ट्रीय और हिन्दु-मुस्लिम-ऐक्य-समर्थक नज़्में कहनेमें ख्याति पा रहे थे, आपकी उक्त विचारधाराको उग्र रूपमें पनपते देखकर अपनी असहमति १३ नवम्बर १९३१ ई० के पत्रमें इस प्रकार व्यक्त की—

"... ... आप ज़मींदारको सिर्फ़ इसलिए गालियाँ दे रहे हैं कि वह किसानसे काश्त (खेती) और पैदावारके महासल (लगान, महसूल) माँगता है और अपनी ज़मीनों या मिल्कियत-की बरकातसे बहरह अंदोज़ (ज़मींदारीके फल स्वरूप लाभान्वित)

है। मगर हुकूमत भी ज़मींदार है, मकानदार भी ज़मींदार हैं। वे पैदावारपर और ये रिहाइशपर टैक्स वसूल करते हैं। इस ख़ुदाकी देनपर किस-किसको बुरा कहिएगा? आप यह चाहते हैं कि ज़मींदार अपनी ज़मीन काश्तकार (किसान) को ख़ैरातमें दे दे और ख़ुद भूका मरे!

"...... मैं उन अहमक़ लोगोंमें अपना शुमार कराना नहीं चाहता, जो ख़्वाहमख़्वाह हुकूमतसे दुश्मनी मोल लेकर अपने दायरए-आफ़ियत (निराकुलता एवं सुख-चैनके क्षेत्र) को तंग करना चाहते हैं। ...... मैं दोनों क़ौमोंको मुत्तहद (संगठित) देखनेका आर्ज़ूमन्द (अभिलाषी) हूँ, लेकिन मुझसे यह नहीं हो सकता कि हिन्दू ज़हर पिलायें तो उसे आबे-हयात (अमृत) कहूँ और मुसलमान अमृत दे तो उसपर ज़हरका इलज़ाम लगा दूँ।

"हिन्दुस्तानकी फ़िर्क़ादाराना तक़सीम (साम्प्रदायिक बटवारा) मेरी ज़ाइदए-ज़हन (मस्तिष्ककी उपज) नहीं है। आज मुल्कके सायबुलराय और रोशन ख़याल (अच्छी सम्मति रखनेवाले और परिष्कृत मस्तिष्कवाले) मुसलमान भी इसीकी ताईद (समर्थन) में हैं। आपके पास चन्द पस्त तबक़े (निम्न श्रेणी) के अख़बारात आते हैं और आपको अच्छे अख़बार देखनेका मौक़ा नहीं मिलता। इसलिए आपके ख़यालात महदूद (विचार सीमित) हैं[1]। ......"

जिन दिनों 'साग़र' साहब अपने छह छोटे भाइयोंकी शिक्षा-दीक्षा और समूचे परिवारके भरण-पोषणकी चिन्ताका भार

१ रूहे-मकातिब हिस्सा अव्वल पृ० १९५–९७।

उठाये हुए कूचए-बेरोज़गारीके चक्कर काट रहे थे। आपको कई रियासतोंने दरबारी शाइरका ओहदा पेश किया। मज़हबी नेताओंने सम्प्रदायवादके बाड़ेमें घेरना चाहा, लेकिन आप किसीके प्रलोभनमें नहीं आये और अपने स्वाभिमान एवं राष्ट्रीयताको अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिए ऐसी आजीविकाओं और साधनोंकी तरफ़ नज़र भरके भी नहीं देखा, जो आपको साम्प्रदायिक बाड़ेमें बाँधनेवाले अथवा जीहुज़ूरीकी ज़ंजीरोंमें कसनेवाले थे। मशहूर मुस्लिम-नेता हसन निज़ामी साहबने आपकी बेरोज़गारीपर तरस खाकर आपको पत्रमें लिखा था—

"......अच्छी तरह कई बार सोचा और यह राय क़रार पाई कि आप और 'सीमाब' साहब दोनों पूरी तवज्जह और यकजहती (ध्यान और एकाग्रता) से एक ही काम शुरू कर दें तो आपको देहलीसे जानेकी ज़रूरत पेश न आयेगी। वह काम यह है कि मौलाना 'सीमाब' साहब तो तन्ज़ीमे-मसाजिद (मस्जिद) के सिलसिलेमें नज़्में लिखें और आप औरतोंकी आज़ादीकी निस्बत लिखें तो आप दोनोंके मसारिफ़ देहलीकी किफ़ालत (आयके उपाय, दिल्ली रहनेके साधन) हो सकती है। मगर शर्त्त यह है कि नज़्में उजरती तर्ज़की न हों। बल्कि हरएक ख़ास तवज्जह और ख़ास उमंग और ख़ास लगावसे लिखी जाँय। क्योंकि नज़्में आप दोनोंके नामसे शाया (प्रकाशित) होंगी। और मुसलमानोंमें आपको एक तारीख़ी और क़ौमी शाइरकी हैसियतसे पेश किया जायगा। आप दोनों रोज़ाना एक-एक नज़्म तैयार कर दिया करें। कमअज़कम १६ अशआरसे छोटी न हो। हर नज़्म २ रु० उजरतपर ख़रीदी जायगी। इस तरह आप

दोनोंको १२० रु० माहवारकी मुस्तकिल (स्थायी) आमदनी हो सकती है। मैं जानता हूँ कि यह मुआवज़ा कम है। मगर आप भी तसव्वुर कर सकते हैं कि एक तो आपकी मौजूदा परेशानी दूर हो जायगी, और मुस्तक़िल आमदनीका ज़रिया निकल आयेगा। दूसरे मुसलमानोंमें आपके कामकी एक तारीख़ी शान हो जायगी। तीसरे क़ौमी ख़िदमत होगी। तरीक़ए-कार (काम करनेका तरीक़ा) यह होनी चाहिए कि नज़्म रोज़ाना तैयार हो जाया करे। मसलन नज़्म आप लिखिए और दूसरे दिन दोपहरको 'वाहीदी' साहबके यहाँ भेज दीजिए। उजरत महीनेकी पहली तारीख़को अदा हो जाया करेगी। यह रोज़ानाकी शर्त्त इस ग़रज़से है कि आप पाबन्दीसे काम करने लगें और वक़्त ज़ाया न हो।

"नज़्मकी बहर और ज़बान आम फ़हम हो। किसी बहरकी पाबन्दी नहीं है। चन्द उनवान (शीर्षक) मक़सद समझानेको लिख देता हूँ। इसके बाद 'मुनादी' और 'तबलीग़े-निसवाँ (अख़बारों) पर नज़र रखिए कि मुनादीसे तञ्ज़ीमे-मसाजिद और तबलीग़े निसवाँसे औरतोंकी आज़ादी और हक़ूक़के ख़यालात मिलते रहेंगे।······मक़सद यह है कि बन्दोंका दिल ख़ुदाकी तरफ़ मुतवज्जह हो और इस तवज्जहसे उनको ज़ौक़े-इबादत हासिल हो। मसलन अज़ानसे शुरू कीजिए कि एक नज़्म अज़ानकी निस्बत हो, ताकि अज़ान सुननेसे ख़ुदा और रसूल और नमाज़के बुलावेकी अज़मत दिलमें पैदा होने लगे और मुसलमान अपनी अज़ानपर फ़ख़्र (अभिमान) करने लगें। बल्कि अज़ानकी कई नज़्में मुख़्तलिफ़ (भिन्न-भिन्न) अन्दाज़में लिखिए। किसीमें अज़ान कहनेवालेके जज़्बात (भावों) का इज़हार हो, किसीमें सुननेवालेका।

क़िसीमें ग़ैर मुस्लिम सुननेवालेके जज़्बात ज़ाहिर किये जायें, और वह तसव्वुर करे कि मुसलमानोंकी अज़ान कैसी अच्छी चीज़ है।

"चन्द नज़्में मसजिदोंकी तारीफ़में हों। मसलन मस्जिदकी अज़मत, (प्रतिष्ठा) मस्जिदके मीनार, मस्जिद हर मक़ामसे फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) रखती है। इसके बाद नमाज़के क़यामकी शाइराना तारीफ़, दूसरीमें रकूअकी शाइराना तारीफ़, तीसरीमें सजदाकी शाइराना तारीफ़, चौथीमें क़अदाकी शाइराना तारीफ़।

"इस तारीफ़में मोस्सर (प्रभावक) और दिलचस्प तश्बीहात (उदाहरण) हों, जैसे—हुक़्क़ा और छालियाकी शानमें शुअराने अपने कमालाते-शाइरीको ज़ाहिर किया है।

"वज़ूकी शाइराना ख़ूबियाँ।···नमाज़की सफ़बन्दीकी शाइराना ख़ूबियाँ, मस्जिदकी महराबकी ख़ूबियाँ, इमामकी शानकी ख़ूबियाँ, जमातकी नमाज़, अख़ूव्वते-इस्लामका नक़्क़ारा। सुबह, ज़हर, अस्र, मग़रिब, इशाके बादकी दुआओंमें उस वक़्तकी मुनासबतसे दुआएँ लिखी जायें। इनमें इंसानको मुख़्तलिफ़ हालतोंको मुख़्तलिफ़ जज़्बातको लिखा जाये। तहज्जुदकी दुआएँ कमअज़कम पाँच हों। औरतोंके जज़्बाते दुआइया भी इनमें मलहूज़ रहें[1]।"

उक्त मज़हबी बातोंके अलावा—औरतोंकी आज़ादी-पर्दा, लड़कियोंकी शादी-तलाक़, मुहब्बत, हमल वग़ैरहपर भी नज़्में लिखनेको विस्तारसे लिखा है। शुक्र है कि सागर साहब इस

१. रूहे-मकातीब हिस्सा अव्वल पृ० २०९–१०।

मज़हबी जालसे कन्नी काटकर निकल गये। बक़ौल 'असग़र' गोण्डवी—

> दैरो-हरम भी कूचए-जानाँमें आये थे
> पर शुक्र है कि बढ़ गये दामन बचाके हम

'साग़र' साहबके राष्ट्रीय-नग़मोंकी गूँज भारतके इस छोरसे उस छोर तक गूँजने लगी और वे बहुत शीघ्र देशके कर्मठ नेता—पं० मोतीलाल नेहरू, डाक्टर अंसारी, मौलाना आज़ाद, सुश्री सरोजिनी नायडू—जैसे तपे हुए देश-भक्तोंके सम्पर्कमें आ गये। अब उनके नग़मे कांग्रेसके अधिवेशनोंमें लाखों नर-नारियोंको स्फूर्ति एवं प्रेरणा देने लगे। अपने कामके लिए उपयोगी समझते हुए पहले तो मज़हबी ज़हनियतके लोगोंने अपने जालमें आपको फाँसना चाहा और जब यह मुमकिन न हुआ तो आपपर इलाहाबाद और कानपुरमें हमले कराये गये और अख़बारोंमें भी मुख़ालफ़त की गई। एक ऐसे ही मज़मूनका जवाब देते हुए आपने लिखा था—

"जहाँ तक हिन्दुस्तानकी आज़ादी, हिन्दू-मुसलिम-इत्तहाद, और एक मुत्तहद (संगठित) आज़ाद मुल्कका सवाल है, मैं इनके मुक़ाबिलेमें दुनियाकी बादशाहतको ठुकरा दूँगा।

"मुझे हिन्दुस्तान और उसकी आज़ादी अपने माँ-बाप, अपने भाई, अपनी बीवी और अपनी जानसे भी ज़्यादा अज़ीज़ है। मैं मर जाना पसन्द करूँगा, लेकिन इन तबक़ोंका साथ नहीं दूँगा, जो हिन्दोस्तानकी आज़ादीके दुश्मन हैं। यह मेरा महफ़ूज़ (सुरक्षित) और मज़बूत ईमान है, जो कभी मुतज़लज़ल (कंपित) नहीं हुआ और कभी नहीं होगा। हिन्दोस्तानमें कोई शख़्स मेरे मुताल्लिक़

यह नहीं कह सकता कि जो डगर मैंने बनाई, मैं उससे कभी एक इंच भी हटा हूँ, और मेरा कोई अमल हिन्दोस्तान और उसकी आज़ादीके ख़िलाफ़ हुआ हो।

"मेरे और हफ़ीज़, (और हर ऐसे शख़्सके दरमियान जैसे कि हफ़ीज़[1] साहब हैं) के दरमियान लाखों ख़लीजें (बड़ी दरारें) हैं। वह बरतानवी सामराजकी मशीनके एक पुर्ज़े, अंगरेज़ोंके तनख़्वाहदार मुलाज़िम, यानी रजिस्टर्ड सरकारी आदमी, मैं हिन्दोस्तान और उसकी क़ौमोंका ख़ादिम (सेवक) मुझसे उनका वास्ता? वह नौकर मैं आज़ाद, वह मसाइले-हयात (जीवन-निर्वाह) में महज़ रवायात परस्त (परम्पराभक्त), मैं अपने दिलो-दमाग़की बताई हुई राहपर चलनेवाला, वह ग़ुलामीपर नाज़ाँ (अभिमानी), मैं ग़ुलामीसे नाफ़िर, (घृणा करनेवाला) इसलिए हर अक़्लमन्द बा-आसानी फ़ैसला कर सकता है कि मेरा उनका क्या इत्तहाद हो सकता है[2]?"

साग़र साहबकी राष्ट्रीयताका रंग कच्चा या भड़कीला नहीं, जो परीक्षारूपी भट्टीकी एक-दो आँच भी बर्दाश्त न कर सके। आप न जाने कितनी बार ऐसी भट्ठियोंमें-से बेदाग़ और साफ़-सुथरे निकले हैं। और-तो-और भारत-विभाजनका रक्तरंजित इन्क़िलाब भी आपमें कोई परिवर्तन नहीं ला सका। जब कि 'जोश' मलीहाबादी-जैसे शाइरे-इन्क़िलाब सब तरहकी सुविधाओंके बावजूद भारतसे पलायन कर गये, तब जानपर खेलकर भी 'साग़र' भारतमें ही रहे। आपकी तत्कालीन दृढ़ताका आभास श्री प्रहलाद चन्द छाबड़ा-द्वारा लिखे गये पत्रके इस अंशसे मिलता है—

१. हफ़ीज़ जालन्धरी, २. एशिया सितम्बर १९४३ पृ० ८।

"......मैं जानता हूँ कि आपके क़ौमी और समाजी इख़लाक़में उस वक़्त भी गिरावट नहीं आई, जब तक़्सीमे-मुल्कका असर आपपर भी बहुत बुरी तरह पड़ रहा था। आप परेशान हाल थे। बाज़ आदमियोंकी शरारतसे आपके लिए 'न जाए-मादन और न पाए-रफ़्तन' (न रहनेकी जगह और न जानेका रास्ता) की सूरत पैदा हो रही थी। उस वक़्त मैंने आपसे ज़ाती तौरपर पूछा कि आपका क्या इरादा है? भारतमें रहेंगे या पाकिस्तान चले जायँगे। अगर आपको पाकिस्तान जाना है तो कोई ऐसी राह निकाली जाय कि हम एक-दूसरेकी कुछ इम्दाद कर सकें। पाकिस्तानमें हमारी लाखों रुपयेकी जायदाद और कारोबार हैं। हम कोई भी तहरीर (लिखित) आपको देने या कार्रवाई करनेके लिए तैयार हैं। जिससे आप पाकिस्तानमें जाकर उनपर क़ाबिज़ होकर उनको सम्भाल सकें। आपने जो जवाब दिया था, आज तक मैं उसे भूला नहीं।

"रुपयेके लालचसे पाकिस्तान जानेकी निस्बत यहाँ भूके मर जाना बहतर है। मैं आपकी जो भी ख़िदमत और इम्दाद कर सकता हूँ ज़रूर करूँगा। मगर किसी ज़ाती ग़रज़ या लालचसे नहीं। मैं जिस हालमें हूँ अच्छा हूँ।"

"यह बातचीत आपके साथ बम्बई साबूसद्दीक़ मुसाफ़िर ख़ानेमें हुई, जहाँ उन दिनों आप मुक़ीम थे। आप बम्बईसे अज़ीज़म सोहनलालजी गुलाटीको हवाई जहाज़के ज़रिये अपने साथ कराँची ले गये और कँराची बन्दरगाहपर पहुँचा हुआ हमारा माल सामाने-

बिजली अपने दोस्त उस समयके पोर्टकमिश्नर (अब नाम भूल गया हूँ) की वसासतसे दिलवा दिया ।

"हमारे एक नमकहराम कारिन्देने हमारी एक तहरीरका नाजाइज़ और ग़लत फ़ायदा उठाकर पेशावरमें हमपर दीवानी दावा दायर करके हमारी वहाँकी जायदाद कुर्क़ करा ली थी। आपने उसी सिलसिलेमें ग़ुलाम मुहम्मद ख़ाँको, जो उन दिनों हुकूमत पाकिस्तानके वज़ीरे-ख़ज़ाना थे। एक ख़त लिखा और अपने छोटे भाई अज़ीज़ी अहमदयार ख़ाँको पेशावर वग़ैरह भेज दिया, ताकि कोशिश करके हमारी जायदाद वागुज़ार कराई जाये। चुनांचे उनकी कोशिश बार आवर (कामयाब) हुई। इसमें शक नहीं कि अज़ीज़ी अहमदयार ख़ाँको बहुत तक़लीफ़का सामना हुआ। मेरा ख़याल है कि अगर वह कुछ अर्सेमज़ीद वहाँ ठहरते तो एक हिन्दू दोस्तकी इम्दादकी पादाशमें उनपर कुफ़्रका फ़तवा लग जाता।

"अगर आप उस वक़्त लालचके ज़ेरे-असर पाकिस्तान चले जाते। हमारी तहरीरसे, पाकिस्तानमें हमारे वफ़ादार मुलाज़िमों और अपने बाइक़्तेदार दोस्तोंकी इम्दादसे आप लाखों रुपयेकी जायदाद और माल हासिल कर सकते थे। जब कि भारतसे गये हुए बेशुमार बेवसीला लोगोंने पाकिस्तानमें हिन्दुओंकी जायदादों और कारबारोंपर कब्ज़े किये और अमीरो-कबीर बन गये। मगर आपके ज़मीरने इस गुनाहके इर्तकाबकी आपको इजाज़त न दी।······"

पी. बी. नं० ३९ पो० भीलाई स्टील प्लाण्ट (Drug M. P.)	**ख़ैर-अन्देश** **प्रहलादचन्द छाबड़ा** २६-६-५८

सागरके प्रतिबिम्बकी झलक उनकी नज़्मों और ग़ज़लोंमें तो दृष्टिगोचर होगी ही। हम यहाँ उनके एक गद्यका अंश दे रहे हैं। यह लेख भारत-विभाजनके कारणोंपर प्रकाश डालनेके लिए 'तूफ़ानसे पहले, तूफ़ानके बाद' शीर्षकसे फ़रवरी १९४९ के एशियामें प्रकाशित किया था। जिसे आपने मेरे आग्रहपर १८ मई १९५९ ई० को संक्षिप्त और सरल करके भिजवानेकी कृपा की है। कोष्टकमें कहीं-कहीं हिन्दी भाव हमने दे दिये हैं। सागर साहब लिखते हैं—

भारत-विभाजन

"अभी जब २१ नवम्बरको बम्बईमें तूफ़ान आया तो मेरे मकानके पहलूमें जो तनावर (हट्टे-कट्टे) दरख़्त थे, वह भी गिर पड़े। मकानसे नीचे उतरकर देखा तो दसियों बूढ़े दरख़्त सड़कोंपर गिरे पड़े हैं। यह मुझे रोज़ आते-जाते बुरे मालूम होते थे। बेहंगम (बेडौल) बदशक्ल, नफ़ासतसे महरूम (कोमलता रहित) तहज़ीबके दरवाज़ेसे धुतकारे हुए, बेबस गन्दे इंसानोंकी तरह वह रास्तोंकी सुन्दरताके दुश्मन थे। किसीने कहा—सड़कें घनी छाँवसे महरूम हो गयीं, कोई बोला रास्ते सूने हो गये। थके-हारे पथिक इन दरख़्तोंके सायेमें घड़ी भर दम तो ले लेते थे। मैंने कहा—'इनके सायेमें दम लेकर देरमें राह तै करनेवालोंके सहारे मिट ही जाने चाहिएँ। हमें इन जमे हुए बूढ़े दरख़्तोंका साया नहीं चाहिए। तूफ़ान मुबारक है कि उसने नयी पैदाइशकी राहें खोलीं। हम झुके और फैले हुए बूढ़े दरख़्त नहीं चाहते। हम ताज़ादम नये फूटनेवाले पौदे चाहते

तूफ़ानसे पहले, तूफ़ानके बाद

हैं, जो नयी आब-ओ-हवा (वातावरण) में फलें-फूलें और रास्तों-पर नयी ख़ूबसूरती बखेर दें। अगर सड़कें फट जातीं तो बड़ी ख़ुशीकी बात थी। सीमेंटकी सड़कें बननेकी राह निकलती। यह डामरकी काली-कलूटी सड़कें अब निगाहोंको बिलकुल नहीं भातीं' ?

मेरे ये फ़िक़रे सुननेवालोंकी समझमें नहीं आये और वे तूफ़ानकी तबाहियोंकी दास्तान कहते रहे। मैंने कहा—'बिगाड़ और बनाव (संहार और निर्माण) का चोली-दामनका साथ है, गिरे हुए दरख़्तों, हिले हुए मकानों और बही हुई किश्तियों या तूफ़ानकी लपेटमें आये हुए इंसानोंको गिननेसे फ़ायदा ? अब जो हादिसे गुज़र चुके उन पर आँसू बहानेसे क्या हासिल ? तूफ़ान क्या बहा ले गया, क्या डुबो गया और ज़िन्दगीको किस दरजा तोड़-मरोड़ कर रख गया ? कर सकते हो तो अपनी दुनियाकी कमज़ोरी, अपनी मुक़ाबिला करनेकी क़ूवतकी बेबसी और अपनी ज़िन्दगीकी लाचारीका अन्दाज़ा करो। तूफ़ानके क़हरकी शिकायत क्यों है ? क़हरकी आँखोंमें प्रेम और मित्रताकी छिपी हुई भावनाको भी तो देखो। तूफ़ान एक सन्देश था, एक हिदायत (आज्ञा) थी, एक इशारा था, तुम्हारे किनारों, तुम्हारी किश्तियों, तुम्हारे मकानों, तुम्हारे बाग़ों और तुम्हारी कमज़ोर बेबस ज़िन्दगीके लिए। तुम्हारी दुनिया इसलिए उलट गई कि उसकी बुनियादें कमज़ोर थीं। साहिल (दरिया किनारे) के पत्थर इसलिए दूर जा पड़े कि उनमें मुक़ाबिला करनेकी क़ूवत (ताक़त) बाक़ी नहीं रही थी। किश्तियाँ इसलिए उलट गयीं कि उनके बादबान (पाल) पुराने हो चुके थे। मकान इसलिए गिर गये कि उनकी बुनियादों

(नीवों) में घुन लग चुका था। पौदोंसे पत्तियाँ और पत्तियोंसे फूल टूटकर ख़ाकमें इसलिए मिल गये कि उनकी कोमलता तूफ़ानकी शक्तिसे टक्कर नहीं ले सकती थी और पेड़ इसलिए गिर गये कि उनकी जड़ें ज़मीनमें गहरी नहीं थीं।

"तूफ़ान ज़िन्दगीपर एक समालोचनात्मक नज़र है? एक नये बनाव (निर्माण) का सन्देश है। एक नियम है, एक नया आन्दोलन है ताकि हम अपनी ज़िन्दगीकी कमज़ोरियोंपर ठीक निगाह डाल सकें।

हिन्दुस्तानकी तक़सीम

"जिस तरह समुन्दरोंमें तूफ़ान आते हैं, वायुमें अन्धड़ आते हैं, ज़मीन ज़लज़लों (भूकम्पों) के झटकोंसे फट जाती है, उसी तरह क़ौमोंके जीवनमें भी तूफ़ान आते हैं। आम तूफ़ानोंकी तरह 'बटवारा' (भारत-विभाजन) भी एक तूफ़ान था, ख़ौफ़नाक, भयंकर और ख़ूनी। प्रकृतिके तूफ़ान बे-जाने-बूझे होते हैं, यह इंसानोंका जाना-बूझा अपना उठाया हुआ तूफ़ान था, जो हमारी ज़िन्दगीकी ख़ुशी बहा ले गया। इसकी हर लहर अपनी जगह तूफ़ान थी, जिसके थपेड़ोंमें इतिहास हमेशा हिचकोले खाता रहेगा।

"इस तूफ़ानने संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, धर्म और हमारी समूची आत्मिक और नैतिक शक्तिको झकझोरकर रख दिया। उसकी मौजोंने हमारी ज़बान-ओ-अदब (भाषा और साहित्य) की रही सही पवित्रताको तह-ओ-बाला (उलट-पलट) कर दिया। यह तो वे चीज़ें हैं, जिन्हें हम गिन सकते हैं, लेकिन अनगिनत दौलत ऐसी है, जिसकी बरबादीका हमें कोई अन्दाज़ा नहीं।

"इस तूफ़ानके एक नहीं, हज़ार करवट भरे (व्यथापूर्ण) पहलू हैं, लेकिन सोचनेके बाद तो उसके कुछ मज़बूत पहलू (कारण) भी हमें साफ़ नज़र आ सकते हैं। पहली नज़रमें जिस पहलूपर निगाह जमती है, वह हमारे क़ौमी-संघर्षका पहलू है। इस तूफ़ानने हमारे राष्ट्रीय-आन्दोलनकी ख़ामियों और पिछले ज़माने-की अक्सर ग़लतियोंको बे-परदा कर दिया है। जो लोग इस्लामी तहज़ीब, अदब और गुज़रे हुए ज़मानों और हालके सारे वरसा (धरोहर) की हिफ़ाज़तके दावेदार थे, उनके हर दावेको इस तूफ़ानने झूठा कर दिया है। और जो लोग एक मिली-जुली सभ्यता, मिली-जुली क़ौमियत और राष्ट्रीय-एकताके निर्माता थे, उन सबने अपनी इमारतोंको अपने ही हाथों तूफ़ानमें ग़र्क़ कर दिया है और ख़ुद न जाने किन अनजान सिमतोंमें बह गये।

"इस पार (भारत) का ज़िक्र नहीं, उस पार (पाकिस्तान) के दो क़ौमी ख़्याल रखनेवालोंपर बटवारेके नतीजोंने साबित कर दिया कि उनका रास्ता ग़लत था। बटवारेके बाद उन्हें भी इल्म हो गया कि वे इन तरीक़ोंसे अपने किसी तहज़ीबी सरमाये (सांस्कृतिक निधि) की हिफ़ाज़त नहीं कर सकते।

बटवारेके नतीजे

"बटवारेका पहला नतीजा आबादीका तबादिला और उसकी तबाहियोंकी सूरतमें हमारे सामने आया। जिसने यह सच्चाई रोशन कर दी कि बटवारेसे कहीं ज़्यादा मेल-मुहब्बतकी ज़रूरत थी और इन्हींमें हिन्दुस्तानियों-की भलाई छिपी हुई थी। न हिन्दुस्तानसे पाकिस्तान जानेवालोंको मन और आत्माका चैन नसीब हुआ

और न पाकिस्तानसे हिन्दुस्तान आनेवालोंको आत्मिक शान्ति मिली।

"जैसे-जैसे ज़ख़्म भर रहे हैं, हमें अन्दाज़ा हो रहा है कि हमने अपने ही नाख़ूनोंसे अपना मुँह नोचा है। मनुष्यताके कोमल कपोलोंपर जितनी ख़राशें हैं, वह हमारे ही पागलपनके पंजेने डाली हैं। लेकिन हम एक-दूसरेसे अलग होनेके बाद भी 'एक' होनेकी ज़रूरतसे इनकार नहीं कर सकते। हम एक ख़ून, एक शरीर, एक आत्मा हैं। बटवारेके बाद जो सबसे अजीब सच्चाई सामने आई है, वह अटल इत्तिहाद (एकता) है, जिससे इनकार करनेका नतीजा बटवारेकी सूरतमें ज़ाहिर हुआ।

मिली-जुली क़ौमियतका ख़्वाब

"मिली-जुली क़ौमियतका ख़याल एक ख़्वाब नहीं, बल्कि एक अटल सच्चाई था, एशियाकी क़ौमें नास्तिक नहीं, वे आत्मा और परमात्माको मानती हैं। यानी एशिया-की तहज़ीबी मेलकी असली बुनियाद एक आत्मिक चेतना है, जो सारे एशियाई धर्मोंमें किसी-न-किसी सूरतमें पाई जाती है। इस आत्मिक रिश्ते-को सामने रखते हुए एशियाकी सारी क़ौमें एक ही क़ौम समझी जासकती हैं। क्योंकि वह एक ही धर्मको मानती हैं। अगर मिली-जुली क़ौमियतकी कोशिश करनेवाले यह कहते कि हिन्दू और मुसल्मान एक ही क़ौम हैं तो उनकी दलील कमज़ोर नहीं थी। दोनों क़ौमें अभी तक आत्मिक सम्बन्धों और आस्मानी क़ूवतोंको मानती हैं और दोनों एक ख़ुदाकी इबादत करती हैं।

"तूफ़ान क्यों आया! एक बहुत लम्बा और ज़बर्दस्त सवाल है। इसका जवाब देनेके लिए तारीख़ (इतिहास) और वक़्तके

पहलुओंसे फूटनेवाले क़ुदरती हालात और वाक़ेआतकी छान-बीन करनी पड़ेगी।

"यूरोपके तिजारती इन्क़िलाबके बाद हमारे देशमें बरतानवी साम्राज्यके मनहूस क़दम आये। इण्डस्ट्रियल इन्क़िलाबने ज़िन्दगीमें तब्दीली पैदा की और अंग्रेज़ी हुकूमतने हिन्दुस्तानमें पुरानी जागीरदारीका ख़ात्मा कर दिया। हम एक जेलसे निकाले जाकर दूसरे क़ैदख़ानेमें डाल दिये गये। जिसका आँगन ज़रा खुला हुआ था। लेकिन बरतानवी-साम्राज्यकी ग़ुलामीका असर हिन्दू-मुसलमानोंपर इस चेतनाके साथ नहीं हुआ कि वह एक बन्धनसे आज़ाद होकर दूसरे बन्धनमें दाख़िल हो रहे हैं। पहला जाल ज़्यादा सख़्त था, जिसे तरक़्क़ी और तब्दीलीके हाथोंने तोड़ दिया है और नया जाल उसके मुक़ाबिलेमें कमज़ोर है, जिसे वह आसानीसे तोड़ सकते हैं। बल्कि इस क्रान्तिका असर हिन्दू-मुसलमानोंपर रजअ़ती (प्रतिक्रियावादी) सूरतमें हुआ। ग़ुलामीकी ज़ञ्जीरें तोड़नेकी जितनी भी कोशिशें की गईं, वह पुरानी ज़ञ्जीरोंकी यादमें की गयीं, जितनी तहरीकें आईं, वह पीछे वापस जानेके लिए थीं, आगे बढ़नेके लिए नहीं। अ़वाम (जनता) का ज़ेहन जो बेदार (जागृत) और पुख़्ता नहीं था, वह हिन्दू-सभ्यता और हिन्दू-धर्मके Revival (पुनरुत्थान) और इस्लामके एहया Renaissance (नवजीवन) देनेवाले नतीजों तक न पहुँच सका और हमारे राजनीतिक नेता और सोचनेवालोंके पास (जो ख़ुद पुराने ख़्यालात, पुरानी राजनीति और पुराने रिवाजोंसे आज़ाद नहीं थे) ले देकर सिर्फ़ एक नुस्ख़ा था कि वह जनता

को पिछले ज़मानोंके नामपर ख़्वाबसे जगायें। 'नुस्ख़ए-कीमिया' जिन सामानोंसे तैयार हुआ था, उनमें सबसे बड़ा अंश 'धर्म' का था। जिसका नाम लेकर ग़ुलामीके ख़िलाफ़ जनताका मोरचा लगाया गया।

"सच पूछिए तो हमारे राजनीतिक और धार्मिक हकीमोंकी तश्ख़ीश (निदान) ही ग़लत थी। उन्होंने रोगकी असली इल्लत ही को नहीं समझा, जो जागीरदारीसे लेकर सरमायादारी तक अ़वाम (जनता) की आत्माको घुन लगाती रही थी। अंग्रेज़ी-ग़ुलामीकी ज़ंजीरें तोड़नेके लिए जनताके धार्मिक भावोंको जगाया गया। बरतानवी ग़ुलामीको इस्लामी तहज़ीब और मुसलमानोंके धर्म और कर्तव्यके ज़वालकी बुनियाद बताया गया। राजनीतिक नेताओंसे लेकर कवि और साहित्यकारों तकने एक ही राग अलापा कि हमारी मुक्ति मुसलमानोंके दरमियानी शान्दार ज़मानेके वापस लानेमें छिपी हुई है। और इस मक़सदको हासिल करनेके लिए बरतानवी ग़ुलामीकी ज़ंजीरें तोड़ देना ज़रूरी है।

"इस तरह मुस्लिम अ़वामके ज़ेहनपर यह छाप पड़ी कि आज़ादीके मानी इस्लामी हुकूमत क़ाइम करनेके हैं, और हिन्दुस्तानमें मुस्लिम हुकूमतके हैं।

"इसी तरह हिन्दू नेताओंने जिन रास्तोंपर हिन्दू जनताको लड़ाईके लिए तैयार किया, उनके डाँडे भी प्राचीन सभ्यता, हिन्दू संस्कृति और ६ हज़ार साल पहलेकी तमाम हिन्दू परम्पराओंसे जा मिलते हैं और उन्हींके दुबारा ज़िन्दा करनेके वादोंपर सारी जनताके दिमाग़ोंको उभारा गया।

"इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता हिन्दू-मुसलमानोंके सोचने और काम करनेमें लगातार एक तज़ाद (विरोधी भाव) उभरता चला गया और वह उस वक्त फूटा, जब आज़ादीकी मंज़िल हमारे क़दमोंसे टकराने लगी। इसमें कोई शक नहीं कि इस तज़ाद (Contrast) मतभेदकी बैंक ग्राउण्ड बहुत विस्तृत है। इस मत-भिन्नताका सम्बन्ध हमारे देशमें सरमायादारीकी अव्यवस्था और सामाजिक बुराइयोंसे भी है। यह हमारे राजनीतिक नेताओं और सोचनेवालोंकी ख़ामी थी कि उन्होंने क़ौमियतकी अस्ल बुनियाद-पर हिन्दुस्तानी जनताकी तरबियत नहीं की। बस उनके कामोंमें और उनके सोच-विचारमें इतनी ही तरक़्क़ी-पसन्दी थी कि वे आज़ादी चाहते थे। बाक़ी तो सब पुरानी लकीरका पीटना था। और यह एक भँवर था, जिसमें यह फँसकर रह गये। जिस मुसलमान और हिन्दू जनताको लगभग डेढ़सौ साल आज़ादीका यह मतलब बताया गया कि 'राजशाही' फिर लौट आयेगी और आज़ादीकी बुनियादपर मुसलमान हुकूमत क़ाइम होगी या पुराने आर्यावर्तकी आर्य-सभ्यता हिन्दुओं-को हासिल हो जायगी, और वह रामराजकी पवित्रतासे माला-माल हो जायेंगे। बहकायी हुई जनताके दिमाग़ आज़ादीके आनेको इस तरह कैसे समझ सकते थे कि सच्ची आज़ादीका मक़सद एक नये और अछूते आदर्शकी बुनियादपर मिली-जुली क़ौमियतकी नींव रखना और एक नयी क़ौमकी मज़बूत इमारत बनाना है।

"इधर हिन्दू और मुसलमान नेता गुज़रे हुए ज़मानेकी दक़ि-यानूसी धार्मिक सभ्यताके नामपर जनताको अंग्रेज़से टकरा रहे थे,

"उधर अंग्रेज़ भी इन ज़हरीले नुस्ख़ोंसे ग़ाफ़िल नहीं था जो हमारे राजनीतिक और धार्मिक वैद्य ग़ुलामीके कीड़ोंको भस्म करनेके लिए तजवीज़ कर चुके थे। काइयाँ अंग्रेज़ने इस ज़हरका तिर्याक़ (विष-नाशक) उन्हींके ज़हरसे हासिल किया। उसने इस एकताको जो अधूरी धार्मिक-राजनीतिक-चेतनाकी बुनियादपर पैदा की जा रही थी, धर्म ही के नामपर नष्ट करनेका प्लान बनाया और उन फ़िरक़ों (सम्प्रदायों और वर्गों) को धड़ल्लेसे इस्तेमाल किया, जो क़ौमी-आन्दोलनके तरकीबी अजज़ा (उद्देश्यों और तरीकों) में पहले ही से मौजूद थे। धर्मोंके छोटे-छोटे इख़्तिलाफ़ों (मतभेदों) के नामपर बरतानवी साम्राज्य और देशके ग़द्दारोंने क़ौमी-आन्दोलनका हर मुम्किन तोड़ किया और उसे भरपूर कामयाबी इसलिए हुई कि हिन्दू-मुस्लिम जनतामें आजतक जिस भावनाको उभारा गया था, वह दीन-धर्मकी ग़लत तारीफ़पर क़ाइम था।

ज़हरसे ज़हरका इलाज

"इस भावनाके दो धारे एक दूसरेके तहतुश्शऊरी तख़ालुफ़ (Controversy of sub conscence) (धार्मिक और सामाजिक मतभेदोंकी दुर्बलता) से लापरवाह होकर आज़ादीकी लगनमें ग़ुलामीकी दीवारोंसे टकरा रहे थे। अंग्रेज़ने पहले उन धारोंका बाँध बाँधा और फिर उन्हें दो मुख़ालिफ़ सिमतों (विरोधी दिशाओं) में मोड़ दिया। देखते-ही-देखते यह धारे भयावह बाढ़ोंमें बदल गये और देशमें साम्प्रदायिक वाद-विवादों और पारस्परिक विरोधोंके कारण हाहाकार मच गया।

"हिन्दू मत और इस्लामके नामपर देशमें जो आग लगाई

गई, वह आग 'क्लाइव' और 'हेस्टिंग्ज़'के अहदसे लेकर 'माउण्टबेटन'के ज़मानेतक हमारे धर्म, कर्तव्य और इंसानियतको फूँकती रही।

"जैसे-जैसे अंग्रेज़को आज़ादीके तूफ़ानकी सख़्ती और फैलाव (दृढ़ता और व्यापकता) का अन्दाज़ा होता गया, वह नये-नये बाँध बाँधता गया। उसने हिन्दुस्तानकी तारीख़ (इतिहास) में अदल-बदल किया। उसने अपने अन्तरंगकी सुप्त चेतनाओंको ज़िंदा किया और मिली-जुली क़ौमियतकी दाग़बेलको मिटानेकी हर मुम्किन कोशिश की और राजनीतिके पेटसे आख़िर फ़िरक़ापरस्ती (सम्प्रदायवाद) की वह शरीर नस्ल (उपद्रवी नटखट-सन्तति) पैदा हुई, जिसने हिन्दुस्तानको तमाम दुनियामें रुस्वा और बदनाम करके छोड़ा।

"ग़ुलामीके ख़िलाफ़ लड़ाईमें क़ौम-परस्त (राष्ट्रीय-विचारधाराके) मुसल्मानोंको वह सारे मज़ालिम (अत्याचार) सहने पड़े, जो हुकूमत, ब्युरोक्रेसी (नौकरशाही) फ़िरक़ापरस्ती (सम्प्रदायवादियों) और वतनकी दुश्मन पार्टियोंकी तरफ़से उनपर तोड़े गये। और वह अंग्रेज़ी डेप्लोमेसी (कुटिल नीति) की भड़काई हुई आग न बुझा सके। उन्हें मान लेना चाहिए कि इत्तिहाद (एकता) को मिटानेवाली क़ूवतों (शक्तियों) के मुक़ाबिलेमें कोई फ़ौरन और असर करनेवाला क़दम उठाना, उनके बसकी बात न थी। वह कोई ऐसा आन्दोलन शुरू न कर सके जो साइण्टिफ़िक तरीक़ों (वैज्ञानिक ढंग) पर मज़हबके मारे हुए अवामके ज़ेहनों (जनताके विचारों) को बना सकता, या

उन्हें यह बता सकता कि धर्मोंकी मिली-जुली सच्चाइयाँ एक ही हैं।

"मेरे ख़्यालमें आज़ादीकी लड़ाईका वह ज़माना जो बरतानवी साम्राज्यके नये-नये दाँव-पेचके चक्करोंमें गुज़रा, हमारी ज़िन्दगीकी निचली तहोंमें बहुत दुःख भरे आसार पैदा करता रहा। मज़हबके मारे हुए आमलोग अनजाने तौरपर कुछ ज़मानेके लिए साम्राज्य-से टकराये। लेकिन उनके ज़ेहन (मस्तिष्क, विचार) साफ़ नहीं थे। मक़सद (उद्देश्य) की तस्वीर धुँधली थी और मंज़िलकी निशानियाँ मिटी-मिटी, और उसका असल सबब यह था कि हिन्दू-मुस्लिम जनता आपसकी मुहब्बत और प्रेमके आधारपर नहीं, बल्कि दुश्मनके मुक़ाबिलेमें परस्पर मतभेदों और अविश्वासोंको लिये हुए खड़ी थी। उस कमज़ोर बन्धनको हमारा दुश्मन जब चाहता कमज़ोर कर देता था। जैसे ही देशमें मज़हबी तज़ादों (Religious Differences) के नामपर बेमानी तहरीकें उठीं, हिन्दू-मुस्लिम-इत्तिहाद (ऐक्य) टुकड़े-टुकड़े हो गया और इस हारकी गूँजमें लोग असली रिश्तों और सम्बन्धकी लज़्ज़तोंको भी भूल गये, यहाँ तक कि हमारी देशकी ज़िन्दगी कड़ुवाहटका मातम बन गयी और इसका सख़्त दुःख है कि इस मातममें हमारे नेताओंका ग़ैर ज़रूरी जोश सबसे ज़्यादा बढ़-चढ़कर था।"

'साग़र' खरे देशभक्त हैं। आपके यहाँ दिखावा और आडम्बर नहीं। देशके दुःखमें दुःखी और सुखमें सुखी होते हैं।

साग़रपर हमले

दस-पाँच रोज़की सज़ा काटनेवाले महानुभावोंकी तरह Political sufferer होनेका न आप दावा करते हैं और न अपनी सेवाओंके लिए कोई तमन्ना रखते हैं।

आप समाजवादी और प्रगतिशील होते हुए भी बुज़ुर्ग शाइ-रोंको बुर्जुआ या orthodox कहकर उनका मज़ाक़ नहीं उड़ाते, बल्कि जो आदरके योग्य हैं, उनका आप अदब करते है और हम उम्र शाइरोंसे मुहब्बतसे पेश आते हैं। आप विश्व प्रेम और समाजवादके समर्थक होते हुए भी किसी विदेशी राजनीतिके संकेतपर चलना हेय समझते हैं। उग्र और विद्रोही शाइर होते हुए भी तोड़-फोड़ और विध्वंस-नीतिके क़ायल नहीं। आपकी शाइरीमें दहकती हुई आग मिलेगी, परन्तु वह आग ऐसी नहीं जो किसीको राख करके रख दे। आपके यहाँ वह आग है, जिससे भोजन भी बनाया जा सकता है और अन्धकारमें प्रकाश भी मिलता है।

आपपर कानपुर और इलाहाबादमें मज़हबी मुसलमानोंने इसलिए हमले किये कि आप राष्ट्रवादी थे और बम्बईमें हिन्दू गुण्डोंने इसलिए आक्रमण किया कि आप जन्मसे मुसलमान थे।

मज़हबी दीवानों-द्वारा ही नहीं, आपपर तरक़्क़ी पसन्द कहे जानेवाले कुछ अदीबोंने भी हमले किये। चूँकि आप तरक़्क़ीपसन्द होते हुए भी साम्यवादी विचार-धारा वालोंसे मतभेद रखते थे और उनकी राष्ट्रविरोधी नीतिका समर्थन तो दरकिनार मुक्तकंठसे विरोध भी करते थे। अतः तरक़्क़ीपसन्द मुसन्नफ़ीनके कम्युनिष्ट ग्रुपको यह कैसे सहन हो सकता था। ३ जुलाई १९४९ को बम्बईमें अंजुमन तरक़्क़ीपसन्द मुसन्नफ़ीनके जल्सेमें आपपर चारों तरफ़से एक साथ हमला बोला गया। इधर-उधर दायें-बायें हरसिम्त बाक़ायदे मोर्चे बनाये गये। गालियाँ, तालियाँ, आवाज़ें, ठट्ठे,

सीटियाँ, तबर्रा ग़रज कि किसी पस्त-से-पस्त और ज़लील-से-ज़लील बात कहनेसे तकल्लुफ़ नहीं किया गया। घूँसे तानकर हमलेकी कोशिश की गई।

इस आक्रमणका तत्कालीन कारण तो केवल यह था कि आपने अपने 'एशिया' मासिक पत्रमें कुछ राष्ट्रवादियोंके सन्देश भी प्रकाशित कर दिये थे, जिन्हें कम्युनिस्ट ग्रुप अपनी राष्ट्रविरोधी विचार-धाराके अनुकूल नहीं समझता था, किन्तु इस विचार-धारा-की खाई साग़र साहब और साम्यवादी दलके बीचमें काफ़ी लम्बे अर्सेसे बढ़ती जा रही थी। यह हमला उन्हीं सब मतभेदोंकी आड़में हुआ था। इस हमलेके सम्बन्धमें साग़र साहबने विस्तृत लेख प्रकाशित किया था। जिसका तनिक-सा अंश यहाँ दिया जा रहा है—

"जब तरक़्क़ीपसन्द अदीब १९४२ ई० की तहरीके-आज़ादी (स्वतन्त्रता-आन्दोलन) के ख़िलाफ़ काम कर रहे थे, मैं उनकी ताईद (समर्थन) नहीं करता था। इसके बाद उन्होंने मुसल-मानोंपर अपनी सियासत (राजनीति) का असर जमानेके लिए नेशनल कॉंग्रेस, क़ौमपरस्त मुस्लिम, सोशलिस्ट पार्टी, फ़ारवर्ड ब्लाक, ग़रज़ कि हर क़ौमपरस्त जमाअत और तमाम हिन्दुस्तानी अवाम (जनता) की मर्ज़ीके ख़िलाफ़ तक़सीमे-हिन्द (भारत-विभाजन) की ताईदमें अदब पैदा (साहित्य निर्माण) करो का नारा बुलन्द किया, उस वक़्त भी मैंने उनकी ताईद नहीं की। हालाँ कि उस वक़्तकी ताईदके माअ़नी करोड़ों मुसलमानोंकी पुश्त-पनाही (अनुयायी होने) के थे।

"अपने सियासी मक़ासिदकी तक़मील (राजनीतिक उद्देश्यों-

की पूर्ति) के लिए अंजुमनके ग़ालिब ग्रुप (समतिपर छाये हुए दल) ने एण्टीफ़ासिस्ट तह्रीकके नामपर अंगरेज़ोंकी प्रजातन्त्र नीतिके गीत गाये। बरतानवी-रूसी ऐक्यके लिए हर नाजाइज़को जाइज़ कर लिया। मैंने उस वक़्त भी उनकी ताईद नहीं की।

"१५ अगस्त १९४७ ई० से पहले तरक़्क़ीपसन्द अदीब माउण्टबैटन प्लानकी सख़्त मुख़ालफ़त करते रहे। लेकिन एकाएक ग़ैबकी आवाज़ सुनकर उनकी जद्दोजहद (संघर्षनीति) का रुख़ बदल गया और उन्होंने १५ अगस्त १९४७ को हिन्दुस्तानका जश्ने-आज़ादी मनाया। सड़कोंपर नाचते और हाशिया बरदारोंको नचाते हुए निकले। इसके बाद यकायक उन्हें इलहाम (ईश्वरीय सन्देश प्राप्त) हुआ कि उनसे ग़लती हुई है। आज़ादीको पहचान नहीं सके हैं और यकायक उन्हें आकाशवाणी हुई कि पाकिस्तानकी ताईद (समर्थन) में उनकी जद्दो-जहद (आन्दोलन-की नीति) ग़लत थी[1]।"

'साग़र' साहब अपने राजनीतिक विचारोंके सम्बन्धमें स्पष्टीकरण करते हुए फ़र्माते हैं—

"मैं किसी सियासी पार्टी (राजनीतिक दल) का मेम्बर नहीं। लेकिन सियासत दानोंसे कहीं ज़्यादा एक रासिख़सियासी एतक़ाद (दृढ़ राजनीतिक विश्वास) रखता हूँ और इस एतक़ादपर ३५ बरससे अटल हूँ। इस अक़ीदे (विश्वास) को मैं दो लफ़्ज़ोंमें बयान कर सकता हूँ। वतन और इंसानियत, इंसानियत और वतन। यह तसव्वुरे-वतन (देशभक्तिका दृष्टिकोण) महदूद या

---

१. एशिया जुलाई १९४९ पृ० ७।

माद्दी तसव्वुर (सीमित या क्षणिक उत्साह) नहीं। इस मुल्क-के दरिया-पहाड़, जंगल-बस्तियाँ, दरो-बाम, या उनके संगो-ख़िश्त नहीं। यह तसव्वुरे-वतन उस इंसानियतको अहाता (देश-प्रेम उस मानवताको लक्ष्य) किये हुए है, जो इस मुल्कमें साँस लेती है यानी इस मुल्कके अवाम (जनता)।

"मैं एक ग़रीब घरमें पैदा हुआ हूँ। मैं ठेठ अवामके क़ल्ब (जनताकी आत्मा) की उछली हुई एक आर्ज़ू हूँ। जिसे अवाम-ने अपनी सच्ची मुहब्बतमें परवरिश किया है। मैंने अपनी छ्या-लीस साला ज़िन्दगी इक आम महनतकश इंसानकी तरह गुज़ारी है और अपने दस्तो-बाज़ू (बाहू-बल) के बलपर अवामके लिए काम किया है। मैंने अपनी उसूलपरस्ती (नैतिकता) को कभी बरबाद नहीं होने दिया और आज भी मेरी वही राह है। मैं न किसी रियासतसे वज़ीफ़ा (मासिकवृत्ति) पाता हूँ न किसी पार्टीसे। मेरे कामोंकी बुनियादमें मेरा अपना ख़ून-पसीना है[1]।"

परिचय

'साग़र' साहबको १९२९ ई० में पहली मर्तबा दूरसे देखने और सुननेका अवसर प्राप्त हुआ। आप बिजनौरके एक मुशाअ़रेमें तशरीफ़ लाये थे। संयोगसे मैं भी ब-हैसियत श्रोताके वहाँ गया था। साग़र साहबकी सज-धज और व्यक्तित्वका क्या कहना। सफ़ेद लक़-दक़ चूड़ीदार पायजामेपर काली शेरवानी बहुत फब रही थी। रूप-रंग और नक़्शो-निगारका क्या कहना, हज़ारोंमें एक। २३-२४ वर्षका अलबेला, छैल-छबीला, बाँका-तिर्च्छा सजीला 'साग़र' जब मंचपर

---

१. एशिया जुलाई १९४९ ई० पृ० १२।

अपने मख़सूस तरन्नुममें नग़मासरा हुआ तो मुशाअ़रेका मुशाअ़रा वज्दमें झूमने लगा। मालूम होता था, समस्त राग-रागनियाँ एकत्र होकर झूला झूल रही हैं। श्रोता कभी साग़रकी नज़्मोंके आग्नेय और प्रेरणाप्रद मिसरोंपर कलेजे थाम लेते थे और कभी उनकी जादू-बयानीपर आत्मविभोर हो उठते थे। 'जिगर'के इस शे'रका-सा आलम था—

उन लबोंकी जाँ-नवाज़ी देखना
मुँहसे बोल उठनेको है जामे-शराब

उक्त मुशाअ़रेके बाद दिल्लीके कई मुशाअ़रोंमें देखने-सुनने और ३ बार अपने यहाँके मुशाअ़रोंमें निमंत्रित करनेके अवसर प्राप्त हुए। फिर कलकत्तेमें सहृदय साहित्य-प्रेमी साहू शान्तिप्रसादजी के विशाल साहू-निलयमें (जून १९५८ ई० में) एक ही कमरेमें दो रोज़ साथ रहनेका भी संयोग मिला। इन दो-तीन वर्षोंमें ५-६ बार दिल्ली जाकर आपके दरे-दौलतपर आपसे और आपकी बेगम मोहतरिमा नवाब ज़किया सुलताना साहिबासे और छोटे भाईसे जो इण्टरव्यू लिये गये, उन्हींके आधारपर यह परिचय प्रस्तुत किया गया है। मेरी प्रबल इच्छा थी कि साग़र साहबकी ज़ाहिरा-ज़िन्दगीके बजाय उनके घरेलू-जीवनपर रोशनी डाली जाये। आप अपने परिवार, बच्चे, पत्नी, इष्टमित्र और नौकर-चाकरोंसे कैसा व्यवहार करते हैं? आपका स्वभाव और आदात क्या हैं? कौन-कौनसे शौक़ रखते हैं? किन दुर्गुणोंको छिपाये हुए हैं? कथनी और करनीमें कितना अन्तर है वग़ैरह-वग़ैरह! मुझे हर्ष है कि साग़रने, उनकी विदुषी पत्नीने और उनके शिष्ट भाईने मेरे हर प्रश्नका उत्तर निःसंकोच और मुक्तकंठसे दिया।

सागरका जन्म और वंश—सागरका पूरा नाम सरदार मुहम्मद समदयार ख़ाँ और उपनाम 'सागर' है। आप महमन्द यूसुफ़ज़ई अफ़ग़ान हैं। आपका जन्म अलीगढ़में २१ दिसम्बर १९०५ ई० में हुआ। आपके पूर्वज सरदार शहबाज़ ख़ाँ झज्जरके नवाबकी फौजके कमाण्डर-इन-चीफ़ थे। १८५७ ई० की जंगे-आज़ादीमें आप बहादुरशाह 'ज़फ़र' की तरफ़से अंग्रेज़ोंसे लड़े और अंग्रेज़ोंने आपको और आपके ख़ान्दानके सदस्योंको फ़ाँसी-पर लटका दिया। केवल सागर निज़ामीके दादा सरदार मुहम्मद यार ख़ाँ बालक होनेके नातेसे बच सके। वे मेडिकल कालेज आगरेके उन होनहार विद्यार्थियोंमें थे, जो कॉलेजकी स्थापनाके बाद प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हुए थे। वे प्रथम भारतीय थे, जिन्हें अंग्रेज़ सरकारने पहले-पहल सिविल सर्जनका पद दिया।

शिक्षा-दीक्षा—सागरकी फ़ारसी-अरबीकी शिक्षा घरपर ही सम्पन्न हुई। हाईस्कूल अलीगढ़में अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद अपनी व्यक्तिगत रुचि और परिश्रमके बलपर अपने अध्ययनको विस्तृत करते गये। आपका बचपन अलीगढ़के समीप 'सोमना' गाँवमें व्यतीत हुआ। वहाँके हिन्दू-मुसलमानोंका परस्पर प्रेम-व्यवहार, उनके बहुत-से मिले-जुले रीति-रिवाज, एक-दूसरेके दुःख-सुखमें मौजूदगी, गाँवकी देहाती छटा, वहाँके हँसते हुए खेत, महकते हुए बाग़, गीत गाते हुए पनघट, अल्हड़ पनि-हारियों, भोली-भाली छोरियों और मासूम युवतियोंके गीत, रेतेमें घर बनाते हुए मासूम बच्चोंकी अदाएँ, खेतसे लौटनेपर चौड़े चकले सीनेवाले नौजवानोंका चौपालमें बैठकर अलग़ोज़ा बजाना, ढोलकीकी तालपर थिरक उठना, बड़े-बूढ़ोंकी परस्पर हँसी-ठठोल

और संजीदगी सभी कुछ सागरको देखनेका अवसर मिला। उनके हृदयपर यह सब वातावरण अंकित होता रहा और समय पाकर वह आपकी शाइरीमें प्रस्फुटित हो गया।

शाइरीका जुनून—सागरको तेरह बरसकी उम्रमें ही शाइरी का चस्का लग गया था। इसे चस्का न कहकर उन्माद कहना अधिक उपयुक्त होगा। इस उन्मादका परिणाम यह हुआ कि २०-२२ बरसकी उम्रमें ही आपको अखिल भारतीय ख्याति मिल गई। सागरकी शाइरीका प्रारम्भ तो ग़ज़लगोईसे हुआ, लेकिन आप बहुत जल्द नज़्मगोईकी तरफ़ बढ़ गये और देश-प्रेम, स्वराज्य, हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य, मानवता, प्राकृतिक-सौन्दर्य आदिपर चित्ताकर्षक नज़्म कहने लगे। एक तो सुरीली आवाज़ दूसरे देश-भक्ति और मानव-प्रेममें भींगी हुई अछूती नज़्म और गीत। सोनेमें सुगन्ध आने लगी। मुशाअ़रोंके अतिरिक्त राष्ट्रीय मंचोंपर आपकी तूती बोलने लगा।

साहित्यिक-रुचि—अपने मनोभावोंको व्यक्त करनेमें शाइरीके क्षेत्रको सीमित पाया तो आपने १९२३ ई० यानी १८ वर्षकी आयुमें आगरेसे 'पैमाना' मासिक पत्र प्रकाशित किया। १९२६ई०में अलीगढ़से 'रिसालए-मुस्तक़बिल' १९२९में साप्ताहिक 'इस्तक़लाल' और १९३४ ई० में मेरठसे 'एशिया' मासिक-पत्र निकाला। जिसके प्रकाशनका सिलसिला १९५१ ई० तक रहा। इन पत्रोंमें आपने अन्धविश्वासों, सड़े-गले रीति-रिवाजों, दक़ियानूसी ख़यालातों, मज़हबी दीवानगी, तंगदिली, जात-पात, छूत-छात और अंग्रेज़ी हुकूमतके विरोधमें हृदयस्पर्शी और आग्नेय लेख लिखे। मुस्लिम-लीगके कट्टर हिमायती मौलाना शौक़त

अलीके ख़िलाफ़ आपने २५ हज़ारके मजमेमें जानपर खेलकर दन्दान शिकन स्पीच दी।

प्रकाशित गद्य-पद्य साहित्य—सागर-द्वारा रचित निम्न-लिखित साहित्य प्रकाशित हो चुका है—

१. सबूही—(ग़ज़लोंका संकलन) पृ० १०० और १९३२में मुद्रित
२. कहकशाँ-(कहानियोंका ,,) पृ० ३०० और १९३४ में मुद्रित
३. बादए-मशरिक़—(नज़्मों,ग़ज़लों और गीतोंका मज्मूआ) ६४० पृ० १९३५ में मुद्रित।
४. नागरी लिपिमें रस-सागर—(नज़्मों-गीतोंका मज्मूआ) २०० पृष्ठ १९३८ ई० में मुद्रित।
५. रंगे-महल—(नज़्मों-ग़ज़लोंका मज्मूआ)२५०पृ० १९४३ई०में मुद्रित
६. मौजो-साहिल—(नज़्मोंका संकलन) ११९पृ० १९५१ई०में मुद्रित

अप्रकाशित साहित्य

१. धरतीके गीत—(वतनी नज़्मोंका मज्मूआ) २५० पृष्ठ
२. शकुन्तला—(कालिदासकी शकुन्तलाका कवितामें अनुवाद) ४०० पृष्ठ।
३. अनारकली— (मंज़ूम ड्रामा) २५० पृष्ठ।
४. रानी झाँसी और दूसरे ड्रामे ,, ,,
५. कोहकनसे आगे ! (नस्री ड्रामे) ,, ,,
६. मक़ालाते-'साग़र' (मज़ामीन) ,, ,,
७. दीवाने-ग़ज़लियात (ग़ज़लें) ,, ,,
८. 'साग़र'के गीत ,, ,,
९. कुल्लियाते—नज़्मो-ग़ज़ल (सन् ४३ ई० से सन् ५९ ई० तक की नज़्में और ग़ज़लें)

सागर-प्रेस—सन् १९३२ ई० में आपने मेरठमें सागर-प्रेस और 'मक्तबे-सागर' की नींव डाली। यहींसे एशिया मासिक पत्र प्रकाशित किया। आपने सुरुचिपूर्ण आदर्श मुद्रण और प्रकाशन किया।

फ़िल्म क्षेत्रमें प्रवेश—दिन-रातकी आर्थिक परेशानियोंसे बाध्य होकर आपने शालीमार पिक्चर्ज़के मालिक ज़ेड अहमदके आग्रहपर फिल्म-क्षेत्रमें प्रवेश किया और १९४३ ई० में मेरठसे पूना चले गये। फिल्मी क्षेत्रमें जानेका प्रधान कारण तो आर्थिक चिन्ताओंसे निजात पाना था, लेकिन निराकुलतापूर्वक साहित्य-सेवा करनेका पूरा-पूरा सुयोग मिलेगा, इस आकांक्षाने भी फिल्मी लाइनमें जानेको उत्साहित किया। एक साल पूना रहकर १९४४ से १९५४ तक आप बम्बईमें रहकर फिल्मोंकी कहानियाँ, संवाद और गीत लिखते रहे।

आल इण्डिया रेडियो दिल्लीसे सम्बन्ध—भारतके प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलालजीकी इच्छानुसार बम्बई छोड़कर आप १९५४ ई० में आल इण्डिया रेडियो दिल्लीमें ब-हैसियत उर्दू ऐडवाइज़र प्रोड्यूसरके शामिल हो गये। जहाँ आपके सुपुर्द उर्दूका ब्राड कास्टिंग सेक्शन सुपुर्द किया गया। तबसे आप वहीं सफलता पूर्वक कार्य-सम्पादन कर रहे हैं।

विदेश-यात्रा—१९५५ ई०में भारत सरकारने 'सागर'को उर्दूके प्रतिनिधिकी हैसियतसे पोलेण्ड भेजा। जहाँपर ४१ देशों-की भाषाओंके प्रतिनिधि शाइर पोलेण्डके महाकवि 'आदम मित्सके विच'की स्मृतिमें किये गये शताब्दी महोत्सवमें सम्मिलित हुए थे। वहाँ आपके तरन्नुमको और नज़्मको ख़ूब सराहा गया।

जीवन-संगिनी—'साग़र' बहुत ही सौभाग्यशाली हैं, जो उन्हें नवाब ज़किया सुल्ताना-जैसी रूप लावण्यवती, सुशील, विदुषी, मधुरभाषिणी, सेवापरायण, गृह-कार्योंमें दक्ष, धीर-गम्भीर स्वभावी जीवन-संगिनी मिल सकी। बेगम साग़र समालोचक और लेखिका होनेके अतिरिक्त 'नैय्यिर' उपनामसे बहुत अच्छी शाइरी भी करती हैं। हर दुःख-सुखकी डगरपर साग़रके क़दम-से-क़दम मिलाकर चली हैं। साहित्यिक-कार्योंमें दोश-ब-दोश साथ दिया है। यह भाग्य ही की बात है कि साग़र साहबको ऐसी अनमोल हीरेकी कनी नसीब हो सकी। अन्यथा साग़र तो महज़ शाइर और अदीब थे।

न किसी जागीरके मालिक, न किसी दरबारसे वाबस्ता, न कोई डिगरी, न कोई सरकारी नौकरी और न कोई आजीविकाके स्थायी साधन। और शाइर-ओ-अदीब भी ऐसे, जो अपने कलाम और लेखोंसे अंग्रेज़ सरकारके ख़िलाफ़ आग उगल रहा हो।

जब दहकती आगपर मुझको लिटाया जायगा
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा
तेरे नग़मे गाऊँगा और आगपर सो जाऊँगा
ऐ वतन! जब तुझपै दुश्मन गोलियाँ बरसायेंगे
सुर्ख़ बादल जब फ़सीलोंपर[1] तेरी छा जायेंगे
जब समन्दर आगके बुर्जोंसे टक्कर खायेंगे
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा
तेग़की झंकार बनकर मिस्ले-तूफ़ाँ आऊँगा
गोलियाँ चारों तरफ़से घेर लेंगी जब मुझे
और तनहा छोड़ देगा जब मेरा मरकब[2] मुझे

१. प्राचीरोंपर, २. घोड़ा।

और संगीनोंपै चाहेंगे उठाना सब मुझे
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़्मे गाऊँगा

या

बनके दुश्मन तेरा जो उठेगा यहाँ
उसको तहतुस्सरामें[1] गिरा देंगे हम
और तहतुस्सराको फ़नाके समन्दरमें
अर्थी बनाके बहा देंगे हम[2]

जो व्यक्ति इस तरहकी नज़्में कहकर मुसीबतोंसे खिलवाड़ कर रहा हो, भला उसे कौन बुद्धिमान अपने कलेजेका टुकड़ा सौंपनेको प्रस्तुत होता ? अरे भई 'साग़र' अच्छे ख़ुशगुल्लू शाइर हैं तो मुशाअ़रोंमें गला फाड़-फाड़कर दाद दे दी। अपने यहाँ मुशाअ़रोंका आयोजन किया तो सबसे पहले साग़रको दावतनामा भेज दिया और दूसरोंसे कुछ ज्यादा मेहनताना दे दिया। अख़बार निकाला तो उसके ख़रीदार बन गये। इससे अधिक एक शाइर और अदीबकी और क्या इज़्ज़त-अफ़ज़ाई हो सकती है ? अतः साग़र जिधर भी जाते 'प्रशंसकोंके ग़ौल-के-ग़ौल उन्हें घेर लेते; किन्तु उनके सूने जीवनमें झाँकनेकी ज़रूरत कोई महसूस न करता। गुलाबका फूल चाहतके अभावमें टहनीपर मुर्झाया जा रहा है, और लोग-बाग़ पानीके बजाय उसे इत्रों और सेण्टोंसे सींच रहे हैं।

१. पातालमें, २. यह दोनों नज़्में 'शेरो-शाइरी' पृ० ४४८ से ४५५ में मुद्रित हैं।

सा़ग़र अपने अधूरे जीवनमें एक अभाव अनुभव करते थे। यूँ 'साग़र' जैसे शकील, ख़ुशरू और ख़ुशपोश जवानपर डोरे डालने और इश्क़ लड़ाने वालियोंकी कमी न थी, परन्तु 'साग़र' माशूक़ नहीं, शरीके-हयात (जीवन-संगिनी) चाहते थे। आप ऐसी अर्द्धाङ्गिनी चाहते थे जो उनमें एकाकार होकर उनके रोम-रोम और स्वाँस-स्वाँसकी प्रतिध्वनि हो जाये। साग़र और बेगम साग़रमें कोई अन्तर न रहे।

मोहतरिमा ज़किया सुलताना साहिबासे शादी करनेसे पूर्व अपने उक्त मनोभाव[1] साग़रने व्यक्त किये होते तो कुछ लोग उनपर हँसते, कुछ शाइराना तख़ैय्युल (कवि-कल्पना) समझते और कुछ हितैषी उन्हें बरेली-लाहौर भेजनेका भी इरादा करते। लेकिन इस ख़ुशक़िस्मतीको क्या कहिए कि माँगने जायें आग मिल जाये पैग़म्बरी।

साग़र मुरादाबादके स्टेशनपर ट्रेन बदलनेको उतरे तो संयोग-से ऐसे बुज़ुर्गसे मुलाक़ात हो गई जो कुमारी ज़किया सुलताना साहिबाके मायकेमें अक्सर जाता रहता था। जिसने इनको बचपनसे जवानीकी चौखटपर पाँव रखते हुए देखा था। उसने ज़किया सुलताना साहिबाके रूप-गुणोंका और उनके प्रतिष्ठित, सभ्य, सुसंस्कृत परिवारका कुछ ऐसा वास्तविक और आकर्षक चित्र खींचा कि साग़रका अपना मनोभिलषित स्वप्न साकार हो उठा और आपने मन ही मनमें निर्णय कर लिया कि शरीके-हयात बनायेंगे तो ज़किया सुलतानाको, वर्ना ज़िन्दगी यूँही गुज़ार देंगे।

---

१. साग़र साहबने कुछ इस तरहके भाव इसी पुस्तकमें पृ० ६९ पर मुद्रित 'आदर्श' में नज़्म किये हैं।

साग़रके संकेतपर आपके वालिद बुज़ुर्गवार ज़किया सुलताना साहिबाके यहाँ शादीका पैग़ाम लेकर पहुँचे। मगर वहाँ पैग़ामका वही हश्र हुआ जो पहली वर्षाका रेगिस्तानमें होता है। लेकिन साग़र भी अपने इरादेके धनी। ख़तूत और सिफ़ारिशोंका ताँता बाँध दिया।

कुछ हितैषियोंने साग़रको समझाया कि "मियाँ! जूए-शीरका लाना तो आसान, मगर ज़कियाको हासिल करना मुमकिन नहीं। क्यों उसके पीछे अपनी जान हलाक करते हो! हम एक-से-एक बढ़कर अच्छी बीवी दिलायेंगे।" मगर साग़र किसीकी कब सुनने वाले थे? वे तो बक़ौल मीर ज़कियाका कलमा पढ़ने लगे थे—

फूल, गुल, शम्सो-क़मर सारे ही थे।
पर हमें उनमें वही भाये बहुत॥

साग़रको उद्विग्न और खोया-खोया-सा देखकर उनके एक दोस्त जज़ने सबब पूछा और हक़ीक़त मालूम होनेपर फ़र्माया— "अमाँ सिर्फ़ इतनी-सी बातके लिए परेशान हो। यह काम तो मैं चुटकियोंमें करा दूँगा। आपकी दिलो-जानकी मलिकाके वालिद मोहतरिमके मुक़द्मे मेरी अदालतमें अक्सर रहते हैं। मेरी बातको टालना तो दरकिनार, उल्टा एहसान मानेंगे कि जज़ साहबने किसी ख़िदमतके लायक़ समझा।"

जज़ साहबके आश्वासनपर साग़रको कुछ सफलता झाँकती-सी नज़र आई। मगर कुमारी ज़किया सुलतानाके रूप-गुणकी प्रशंसा सुनकर जज़ साहबमें रक़ाबतकी आग भड़क उठी। और रक़ाबतकी आगमें झुलसते हुए उन्होंने ज़किया साहिबाके वालिद बुज़ुर्गवारके ऐसे कान भरे कि वे आपेसे बाहर हो गये। वे मकान

पर पहुँचते ही अपनी बेगमको सम्बोधन करते हुए तैशमें बोले—"अजी सुनती हो, वे आये थे ना, क्या नाम था उनका, ज़कियाकी शादीके लिए पैग़ाम भेजा था ! हज़रत खूब मै-नोशी और रंग-रेलियाँ करते हैं। चले थे शादीका पैग़ाम देने ! यह मुँह और मसूरकी दाल। भई वाह चींटीने भी ख़ूब पर निकाले।"

ज़किया सुलताना वहीं खड़ी थीं। नीची नज़रें किये बाअदब बोलीं—"अब्बा हुज़ूर ! आपको याद होगा, आपने एक वादा किया था।" "हाँ, हमें ख़ूब याद है। तुम्हारी अमानत महफ़ूज़ है। तुम हमारे इमकानके अन्दर हर चीज़ माँग सकती हो।" वालिदका जबाव सुना तो ज़कियाका गुलाबी चेहरा अर्क़-अर्क़ हो गया। बक़ौल असर लखनवी—

फूल डूब हुआ गुलाबमें था
उफ़ ! वह चेहरा हिजाब-आलूदा[1]

अपनेको किसी तरह सम्भाल कर सिर्फ़ इतना कह पाईं—"तब तो 'साग़रको मेरी अज़हद ज़रूरत है"। ज़किया नीची नज़रें किये ज़नानेमें चली गईं और वालिद बुज़ुर्गवार सकतेमें आगये। एक सप्ताहमें ही शादी हो गई और साग़रकी सार-सम्भाल रखनेको ज़किया सुलताना साहिबा साग़रके साथ पूना चली गईं। जहाँ कि फ़िल्म कम्पनीमें ब-हैसियत कहानी, संवाद और गीत-लेखकके साग़र मुलाज़िम थे। साग़र ऐसी अर्द्धाङ्गिनी पाकर निहाल हो गये जो उनकी 'आदर्श' शीर्षक नज़्मकी प्रियतमाके अनुरूप केवल प्रेमकी इच्छुक और मुसीबतोंसे निर्भय थी।

---

१. लाजमें पसीनोंसे भीगा हुआ।

१९४२ ई० में शादी हुई। इस समय आपके बहुत प्यारे-प्यारे चार बच्चे—१ बेटी ३ बेटे हैं। २५ दिसम्बर १९५६ की शामको नई दिल्लीमें हुमायूँ रोड स्थित आपके बँगलेपर मोहतरिमा बेगम साग़रसे पहली बार नियाज़ हासिल हुआ। उसके बाद इन तीन वर्षोंमें ४–५ बार डालमियानगरसे दिल्ली जाकर आपसे वार्तालाप करनेका सौभाग्य पाता रहा। मेरे हर प्रश्नका उत्तर आपने निःसंकोच दिया और बहुत स्नेह और ममता-पूर्ण व्यवहार किया। ख़ातिर-तवाज़ा और ख़ुश अख़लाक़के क्या कहने ? मेरे आग्रहको मान देकर अत्यन्त व्यस्त रहते हुए भी साग़र साहबके घरेलू-जीवनपर जो प्रकाश डाला है, उसे आपकी ही भाषामें यहाँ दिया जा रहा है। केवल शीर्षक और कठिन शब्दोंके हिन्दी अर्थ अपनी ओरसे कोष्ठकमें हमने दिये हैं।

इरादोंकी मज़बूती—"यूँ तो साग़र नई आज़ूओं, नई उम्मीदों और नये इरादोंसे हरदम छलकते रहते हैं, लेकिन बाज़ इरादे और शौक़ ऐसे हैं, जिनकी तकमील (पूर्त्ति) हर हालत और हर अहदमें कर लेते हैं। सन् ४२ में यह एहसास शदीद सूरत इख़्तियार कर गया कि अब उनको शादी कर लेनी चाहिए। वे तनहाईकी ज़िन्दगी और मुसलसल तनहा काम करनेसे उकता गये थे। उनकी शादीकी दास्ताँ एक लम्बी कहानी है और ज़िन्दगीका एक अजीब वाक़या है। ख़ैर साग़रको चन्द ही दिनमें अन्दाज़ा हो गया कि वही सोसाइटी जो साग़रकी नज़्मोंपर सर धुनती है, मुशाअ़रोंमें आस्मान सरपर उठाती है। जोश और जज़्बेमें आकर शाइरपर रुपया निछावर करती है। उसी सोसाइटीसे जब अमली ज़िन्दगीमें कोई मुआमला पड़ता है तो वह पीछे हट

जाती है। इसका तजुर्बा (अनुभव) साग़रको १९४२ ई० में हुआ। जब उनकी शादीका पैग़ाम सिर्फ़ इसलिए ठुकरा दिया गया कि वे सरकारी मुलाज़िम नहीं थे और सिर्फ़ एक शाइर थे। पर यह सोसाइटी और ज़मानेसे हार न माननेवाला आहीनी इंसान (लौह-पुरुष) इस मुआमलेमें शिकस्ता कब खा सकता था? उसने शादी की और वहीं की, जहाँ उसने आर्ज़ की थी। मजबूर होकर ज़माने और सोसाइटीको उसके आगे सिपर अन्दाज़ होना पड़ा। लेकिन यह वह मोड़ था, जहाँसे साग़रके दिलो-दमाग़में ज़बर्दस्त तब्दीली पैदा हुई।

सुरुचि पूर्ण जीवन—"अपनी शादीके बाद मैंने देखा, साग़रकी रोज़ाना ज़िन्दगीमें सबसे नुमायाँ चीज़ जिस्म और रूह-की नफ़ासत है। उन्हें बहतरीन लिबास पहननेका बेहद शौक़ है। इस शौक़को वे हर हालतमें बाक़ी रखते हैं। कपड़ा ख़्वाह कितना ही मामूली हो, मगर इनके लिबासकी नफ़ासत और ताज़गीमें कोई फ़र्क़ नहीं आयगा। किसी जगह कोई दाग़, कोई सलवट ढूढनेसे भी नहीं मिलेगी। जो सबसे अच्छा लिबास इनके पास होगा, उसको सबसे पहले पहनेंगे। बग़ैर पालिशका जूता, जैसे उनके पैरमें काटता है। रोज़ाना जूतेपर पालिश होगी और यह काम हर सुबह वे ख़ुद ही करते हैं। किसी दूसरेकी हाथ की हुई पालिश उन्हें पसन्द नहीं आती। वे इसे शायद इंसानियतके ख़िलाफ़ भी समझते हैं। भाइयोंसे वे ऐसे कामके लिए कभी नहीं कहते। जूतेकी सफ़ाईके लिए हमेशा एक रूमाल उनकी बाईं जेबमें अलग रहता है। जब वे सुबह-सबेरे ख़्वाबसे बेदार (बिस्तरेसे जाग्रत) होते हैं तो फ़ौरन मुँह धोते हैं। साढ़े छह

बजे नाश्ता करते हैं फिर लपककर अपने हाथसे पान बनाते हैं। पानमें इलायची ज़रूर खाते हैं। पान खानेके बाद वे खुली जगहमें बैठकर रोज़ाना अख़बार पढ़ते हैं। अख़बार पढ़नेके बाद उनके चेहरेपर ऐसा असर होता है, जैसे वे ताड़ गये हों कि दुनिया किधर जा रही है ?

"बम्बईमें थे तो मकान सैकिण्ड फ़्लोरपर था। इसलिए सागरने क़ीमती बारज़ोंमें पौदे रक्खे थे। एक तरफ़से उन पौदोंपर नज़रसानी करते थे। क़ैंची उठाई, सब पीली और गली-सड़ी पत्तियाँ काट दीं। पौदोंको ग़ुस्ल दिया और यह देखकर मैं भी उनके साथ हो लेती और मुलाज़िम भी, जैसे नमाज़ बा-जमात अदा हो रही हो। देखते-देखते सारा घर निखर जाता। लिखनेकी मेज़ भी साफ़ हो जाती। अगरकी बत्तियाँ भी सुलग जातीं और दूदे-पेचाँको देखकर उनके दिलकी गिरहें खुल जातीं।

"इसी दौरानमें उनके बच्चे स्कूल चले जाते हैं और वे लिखनेके लिए बैठ जाते हैं। और जिस कामका जज़्बा होता है, वह काम करते हैं। कामका आग़ाज़ (प्रारम्भ) अक्सर ख़त लिखनेसे करते हैं और जब तबीयतमें रवानी पैदा हो जाती है तो दूसरे काम उठाते हैं।

"दिल्लीमें ग्राउण्डफ़्लोर फ़्लैट है, इसमें छोटा-सा लान भी है, जिसमें मौसमकी फुलवारी भी है। पान खाते ही वे इस लानपर नमूदार हो जाते हैं। एक तरफ़से देखते हैं, कौन-सी शाख़ मुसकराई, कौन-सी कली गुनगुनाई, कौन-सा फूल मुर्झाया और फिर ज़मीनपर गिरी हुई गुलाबकी पत्तियाँ और डेलियाके औराक़ (पत्ते) चुनकर उठा लाते हैं और उन्हें ड्राइंगरूमके ज़रूफ़में

रख देते हैं। जिस फ़स्लमें फूलोंकी फ़रावानी (बहुतायत) होती है, उस फ़स्लमें पहले फूल काटकर गुलदस्ते बनाते हैं और फिर क्यारियोंकी तरफ़से इस हालमें लौटते हैं, जैसे उनके पास चमनबन्दीके नये-नये नक़्शे हैं और फिर एक ख़ामोशी और एक मायूसी मैं उनके चेहरेपर देखती हूँ, जो कहती है 'ऐ काश एक दर्जन सरो होते; क़िस्म-क़िस्मके गुलाब होते, पूरे वराण्डेको हम सरोंका एक कुंज बना देते और फिर ऐसा मालूम होता है कि वे इन नक़्शोंको आहिस्ता-आहिस्ता चाक कर रहे हैं और एकाएक उनका चहरा एक नये अज़्म (इरादे) से जगमगा उठता है और वे लिखनेके लिए गहरे इस्तिग़राक (निमग्नता) में डूब जाते हैं। बम्बईमें वक़्त उनका ग़ुलाम था। कभी ख़ुशहालीकी वजहसे, कभी मुफ़लिसीकी वजहसे। देहलीमें वे दफ़्तरके पाबन्द हैं। लिखते-लिखते वे घड़ीको देखते हैं और घबराकर उठ बैठते हैं, पान खाते हैं, शेव करते हैं, फिर एक पलंगपर अपना लिबास और लिबासकी पूरी जुज़यात (चीज़ें) सलीक़े-से रख देते हैं और बाथरूममें चले जाते हैं।

"ग़ुस्लख़ानेको न जाने क्या बना देना चाहते हैं। वहाँ भी उनका तामीरी और फ़नकार ज़हन (निर्माणकर्त्ता और कलापूर्ण मस्तिष्क) नक़्शाबन्दी करता रहता है। 'यहाँ इतना बड़ा आईना होता, यहाँ एक ख़ूबसूरत अलमारी होती, यहाँ एक गुलदस्ता रखा होता।' ग़ुस्लके बाद जिस्म ख़ुश्क करनेके लिए दो तौलिये होते हैं। एक तौलियेसे वे सर, मुँह और सीना साफ़ करते हैं। दूसरे तौलियेसे जिस्मका ज़ेरीं हिस्सा (अधोभाग) और यह तौलिये दो रंगके होते हैं, ताकि तौलियोंका इम्तयाज़ी फ़र्क़ उनकी रहबरी

करता रहे और इस निज़ाम (व्यवस्था) में कभी फ़र्क़ नहीं आता। ग़ुस्ल करनेके बाद वे बहुत जल्द लिबास पहन लेते हैं और अगर मौजूद हो तो इत्र भी लगाते हैं और तीरकी तरह अपनी लिखनेकी मेज़पर जाते हैं और उन ख़यालातको फ़ौरन ज़ब्ते-तहरीर (लिखित रूप) में ले आते हैं, जो नहाते वक़्त पैदा होते हैं। उनमें अक्सर नज़्मोंके उनवान (शीर्षक) और मौज़ूँ (विषय) होते हैं। बेशतर स्कीमें (बहुधा योजनाएँ) होती हैं और सबसे ज़्यादे आर्ज़ूएँ होती हैं। उन्हें अपनी आर्ज़ूएँ भी याद नहीं रहतीं, इस लिए लिख लेते हैं। और फैसला करते हैं कि उन आर्ज़ूओंमें पहले किनको पूरा होना चाहिए और इसके बाद फ़ौरन खानेकी मेज़पर आकर बैठ जाते हैं। प्याज़को सेबसे बहतर फल कहते हैं। फलोंमें सन्तरा और पपीता बेहद पसन्द करते हैं। रोग़नी रोटीके भी दिलदादा हैं। पुदीनेकी चटनीको तमाम अचारोंसे बहतर समझते हैं और शलग़मके नमकीन अचारसे पूरा लंच खा सकते हैं और खाना ज़रा भी ऐसा-वैसा हो तो वे दिल खोलकर ख़ुदाकी नाशुक्रगुज़ारी करते हैं, और पसन्द आता है तो बा-आवाज़ बुलन्द मुलाज़िमको दाद देते हैं। खाना खानेके बाद सोफ़ेपर इत्मीनानसे बैठ जाते हैं और ख़ामोशीसे एक सिगरेट पीते हैं। इसके बाद आई हुई डाक पढ़ते हैं, उर्दूके रोज़ाना अख़बार पढ़ते हैं और इसके बाद उनके चेहरेपर ऐसा रंग आता है, जैसे वे कह रहे हों कि दुनिया किधर जा रही है, मैं जानता हूँ। फिर वे अपने पोर्टफ़ोलियोका जाइज़ा लेते हैं और एक रूमालसे उसकी गर्द झाड़ते हैं। बटुवेको एक मोमी काग़ज़में लपेटते हैं, ताकि उसकी जिल्द गर्द-आलूद न हो। डिबिया धुली न हो तो तेवर चढ़

जाते हैं, फ़ौरन मुलाज़िमको पठान-लहज़ेमें आवाज़ देते हैं और मेरे सुनानेको कहते हैं—"यह भी कोई 'जोश' मलीहाबादीकी डिबिया है कि दो-दो हफ़्ते नहीं धुलती। जैसे इसका कोई वाली-वारिस न हो" और फिर ग़ुस्सेमें ख़ुद ही उस डिबियाको धोते हैं। फिर क़रहकुलीकी टोपी ऊनी मफ़लर पोर्टफोलियोमें रखते हैं और अपने छोटे बच्चे बाबरसे हँसते हुए ख़ुदा हाफ़िज़ कहकर दफ़्तर चले जाते हैं। उनका इरादा होता है कि बसमें जायें, मगर सड़कपर पहुँचते ही जैसे ही पहली टैक्सी या स्कूटर नज़र आता है, रोक लेते हैं और रवाना हो जाते हैं।

व्यस्त जीवन—"दफ़्तरसे अक्सर कबीदा(खिन्न-चित्त) लौटते हैं, मुझे याद है वे प्राईवेट दफ़्तरोंसे भी कबीदा ही लौटे और सरकारी दफ़्तरसे भी। साग़र किसी क़िस्मकी पाबन्दी पसन्द नहीं करते। कैसे पसन्द करें? साग़रने हमेशा आज़ाद ज़िन्दगी बसर की है। उनका अपना दफ़्तर रहा है, और उसके मीरे-दफ़्तर (सर्वस्व) वे ख़ुद रहे हैं। उन्हें दफ़्तरकी यह बात भी नागवार है कि लोग अपना और साथियोंका वक़्त ग़पमें बरबाद करते हैं। साग़रको वक़्तकी बरबादीका सबसे ज़्यादा रञ्ज होता है। साग़र एक ज़ाबित (अच्छे प्रबन्धक) मशग़ूल (व्यस्त) और बाफ़िक्र (जागरूक) इंसान हैं। दफ़्तर इन तमाम बातोंकी ज़िद (प्रतिकूल, विरोधी) है। साग़र ख़ामोश फ़ज़ा (शान्त वातावरण) गहरे तवग़ुल (धुन) के साथ काम करनेको इबादत ख़याल करते हैं और जो फ़र्ज़ वक़्तने उनपर आइद (नियत) किया है, जब तक वह अदा न हों, उन्हें सकून (चैन) नहीं मिलता।

"दफ़्तरसे वे कभी जल्दी नहीं आते। आमतौरपर ७ बजे शाम तक आते हैं। आते ही वे आई हुई डाक देखते हैं। रिसालों और किताबोंका मताअ़ला (अध्ययन) करते हैं। इसके बाद रातका लिबास तब्दील करते हैं और फिर लिबासके एक-एक जुज़येको उसकी जगह रख देते हैं।

"रातका खाना वे ९ बजेके बाद खाते हैं और काम करनेकी वजहसे कम खाते हैं। वे अक्सर सुबह ६ बजे तक और आमतौर-पर रातके तीन बजे तक काम करते हैं। काम करते वक्त पानके अलावा कोई चीज़ इस्तेमाल नहीं करते।

मदिरा-पान—"अक्सरीनका ख़याल यह है कि साग़र बड़े बादानोश भी हैं। लेकिन यह महज़ अफ़वाह है। हाँ यह ज़रूर है कि वे शराबका दिलसे एहतराम (सत्कार) करते हैं और उससे गहरा ज़ौक़ रखते हैं। और जब पीते हैं तो बड़े एहतमाम और हुस्नके साथ पीते हैं। उस दिन पूरे ड्राइंगरूमपर नज़रसानी की जाती है। दरवज़ोंमें रँगा-रँग फूल सजाये जाते हैं। दावतीखाना तैयार होता है, एक-दो क़रीबी दोस्त मेहमान आते हैं। कट-गिलासके मीनामें जान हैग भरी जाती है। गुलाबी मीनाओंमें सोडा रखा जाता है। बेहतरीन सिगरेट, बेहतरीन पान, बेहतरीन माहौल (वातावरण), बेहतरीन नुक़्ल (खानेकी चीज़ें)।

"इस आलममें 'साग़र' एक दूसरे ही साग़र होते हैं। उनका सारा वजूद मुसकरा उठता है। हर ज़ख़्म फूल बनकर खिलखिला उठता है। सब इस महफ़िलमें इस तरह बैठ जाते हैं, जैसे किसी मअ़बिद (उपासना-गृह) में। हँसी, क़हक़हे, शेरख़्वानी, नग़मा-

रेज़ी, रातके बारह बजे तक यह महफ़िल बरपा रहती है, इसके बाद बारह बजे डिनर होता है और फिर मुकम्मिल मसर्रतोंके साथ यह महफ़िल ख़त्म हो जाती है। ऐसे मौक़ोंपर रातके वक़्त सागर एक मोटी स्टिक लेकर और करहकुलीकी टोपी ओढ़कर और बड़ा चोग़ा पहनकर दोस्तोंको सड़क तक पहुँचाने जाते हैं और वापिस आकर बची-खुची मिठाई मुलाज़िमोंको खिला देते हैं। उनके मकानमें मुलाज़मीनके लिए अलग खाना नहीं पकता। जो वह खाते हैं वही नौकर खाते हैं। मुलाज़मीनको ख़ुश देखकर उनकी ख़ुशी दुबाला हो जाती है। इस मसर्रत और सरूरके आलममें वह तहरीरके काम नहीं करते। एक-दो पान खानेके वक़्फ़े तक जागते हैं और फिर सो जाते हैं।

"लेकिन यह मसर्रत (ख़ुशी) उन्हें कम नसीब होती है। इस मसर्रतको हासिल करनेके उनके निज़ामे-अख़लाक़में निहायत कड़े शरायत हैं। उनका क़ौल है कि दरम्यानी तबक़ेका कोई फ़र्द (व्यक्ति) शराबसे दोस्ती नहीं निबाह सकता। शराब-नोशीके लिए जिस मेयारे-तमद्दुन (शिष्टाचारकी उच्चता) जिस तहज़ीबी (सभ्यताकी) बुलन्दी और जिस फ़ारग़ुलबाली (सम्पन्नता) की ज़रूरत है, वह मिडिल क्लासके अफ़राद (मध्यवर्त्ती श्रेणीके व्यक्तियों) को नसीब नहीं। 'साग़र' अपने माहौलकी नफ़ासत (वातावरणकी सुरुचिता) जिस्मोलिबासकी पाक़ीज़गी, ख़ुर्दोनोश (खान-पान) की ज़रूरियात, बच्चोंकी तालीम और इन्सानोंके हक़ूक़के मुक़ाबिलेमें शराबको पहला दर्जा नहीं देते। लिहाज़ा शराबकी तमन्ना तो कर सकते हैं, पी नहीं सकते, और जब वे ख़ुश हाल थे, उस वक़्त भी साग़रने शराबको अपनी ज़िन्दगीमें

दाख़िल नहीं किया। हमारे घरमें कभी दवाके तौरपर भी बराण्डी नहीं रही, और न कभी रहती है।

"हाँ शराबसे रिवायती तास्सुबात (परम्परासे चली आई नफ़रत) को साग़र अहमियत (महत्त्व) नहीं देते। उनका ख़्याल है ज़मानासाज़ी, मक्कारी, इब्नुल वक्ती (अवसरवादिता), झूठ, चोरी, ग़ीबत (चुग़ली), मुनाफ़रत, (ईर्ष्या-द्वेष) चोर बाज़ारी और सरमायादारी ऐसे गुनाह हैं, जिनसे इन्सानको बचना चाहिए। जो इन गुनाहोंका इरतिकाब (अपराध) करते हैं, उन्हें शराब-जैसी मामूली शैको बुरा कहनेका हक़ नहीं।

वे कहते हैं समाजका पूरा ढच्चर जिस बदअख़लाक़ी (असदाचरण) के जालमें जकड़ा हुआ है, उसमें शराबका हाथ नहीं। मुँदर्जे बाला जरायम और मआसी (उपर्युक्त अपराधों और आर्थिक दुरवस्था) का हाथ है। और इनका यह भी ख़्याल है कि इसके इस्तेमालके लिए, दौलते-ज़र्फ और ख़ुशहाली शर्त है। यह दौलत जिसे हासिल नहीं, उसपर शराब हराम है। इनका क़ौल है कि मैनोशी ज़िन्दगीसे जागती हुई रातें छीन लेती है और जो वक्त फ़िक्रो-मेहनतमें सर्फ़ (व्यतीत) होना चाहिए, उसे यह ले लेती है और बहरहाल सुस्ती पैदा करती है। और इसका ग़ुलाम होना क़ुदरत-की बेबहा नेमतोंसे महरूम (प्रकृतिकी अनुपम देनसे रिक्त) हो जाना है। आला शाइरीकी तख़लीक़ (निर्माण) के लिए सख़्त रियाज़त (अभ्यास) और त्यागकी ज़रूरत है। जो शख़्स शराब-का आदी होता है, वह इन सिफ़ातसे महरूम होता जाता है। फिर भी वे समाजपर किसी जब्र करने (बन्धन लगाने) के क़ायल नहीं और किसी तरफ़से भी खाने-पीनेकी चीज़ोंपर बन्दिशें आइद करनेके

सख़्त ख़िलाफ़ हैं। हरचंद कि उनके माहाना अख़राजात (मासिक व्यय) के बजटमें शराबका कोई ख़ाना नहीं है।

सहृदयता और स्वच्छता—"सागरके मिज़ाजमें नफ़ासत और सफ़ाई जुनूनकी हद तक है। उनका ज़हन, उनका दिमाग़, उनकी रूह, उनके लिबास-ओ-जिस्मकी तरह नफ़ीस और साफ़ हैं। वे किसी शख़्ससे कीना (रंजिश) नहीं रखते। किसीपर जवाबी हमला नहीं करते। किसीकी रोटीपर हमला नहीं करते। किसीकी अच्छाइयोंसे इनकार नहीं करते। मुझे वे दिन याद हैं, जब वे हर शख़्सको अपने सीनेमें छुपा लेना और दिलमें बिठा लेना चाहते थे, और इससे भी पहले दिन अक्सर 'साग़र' याद दिलाया करते हैं, जब वे एक आम मुहब्बतके जज़्बेसे मग़लूब (ओत-प्रोत) थे। और ज़मानेने उस मुहब्बतको हर मोड़पर ठुकराया।

"ज़ाहिर है कि उनकी सोसायटी शाइरों और अहले क़लमकी है। इस सोसाइटीकी गन्दगी और गन्दादिलीसे वे आजिज़ आ गये हैं। लेकिन रूहकी नफ़ासत (दिलकी स्वच्छता) उनकी ख़ुदी (स्वाभिमानिता) उनकी आला तहज़ीब (उच्च सभ्यता) कभी इस गन्दगी और गन्दादिलीके सामने सिपर अन्दाज़ (पराजित) नहीं हुई। शायद उर्दू-शाइरोंमें वे पहले शाइर हैं, जिनकी ज़िन्दगी उस पहाड़ी झरनेकी तरह शुरू हुई जो राहके तमाम पेचोख़म और बुलन्दोपस्त अबूर करता हुआ मैदानमें एक बड़ा दरिया बन जाता है, और उसे चोटियाँ और वादियाँ (घाटियाँ) नहीं रोक सकतीं। साग़रको राह सैकड़ोंने रोकी, मगर वह सबको अबूर

कर गये। यह उनकी रूहकी सच्चाई, नफ़ासत और ख़ुद एतमादी (सुरुचि और आत्म निर्भरता) थी। जो आज तक ग़ैर मफ़तूह (अविजित) है। और हमेशा ग़ैर मफ़तूह रहेगी। उनकी उम्र ५४ वर्षकी हो चुकी है। लेकिन उनकी क़ूबतेइरादी (दृढ़ता) अभी तक शादाब (प्रफुल्ल) और नौजवाँ हैं। उनके हरीफ़ (स्पर्द्धी) हर कमीनगी कर सकते हैं। लेकिन उन्हें रातोंको जागने और सख़्त मेहनतसे नहीं रोक सकते। रात-रात भर उनका सफ़ेद ओ-शफ़्फ़ाफ़ बिस्तर पलंग-पोशसे ढका पड़ा रहता है। और वे अपनी मेज़पर बैठे काम करते रहते हैं। और जैसे ही सपीद-ए-सहर (प्रातःकालीन सूर्य) मुसकराता है। वे फिर एक सिपाहीकी तरह तैयार हो जाते हैं। और दिन चढ़े मामूलके मुताबिक़ अपनी मुलाज़मतपर जाते हैं। इस सख़्त मुजाहिदे (व्यस्त दिनचर्या) में माहोल (वातावरण) और लिबासकी नफ़ासत उनकी शराब होती है। अगर हाथ पड़ जाये तो बिस्तरको इत्रसे बसा देंगे। वे घरके किसी फ़र्द (व्यक्ति) को मैला नहीं देख सकते। मुलाज़िमका लिबास ज़रा भी अगर मैला है तो चुपके-से उठेंगे और अलमारी खोलकर अपने पहननेका जोड़ा उसे दे देंगे। "जाओ पहले ग़ुस्ल करो, और फिर कामको हाथ लगाना" और नफ़ासतका यह ज़ौक़ यहीं ख़त्म नहीं हो जाता। जब वे दमाग़से काम नहीं लेना चाहते तो ढूँढ़-ढूँढ़कर घरकी तमाम चीज़ें साफ़ करते हैं, जिनकी सफ़ाई होनी चाहिए। बम्बईमें आज़ाद थे तो यह अम्ल हफ़्तेमें दो-तीन बार ज़रूर होता था। देहलीमें पाबन्द और सख़्त मसरूफ़ (व्यस्त) हैं तो शनीचर-इतवार ही को यह शौक़ पूरा करते हैं। सुबह जागनेके बाद वे तारीकी, फ़सुर्दगी और गन्दगीका एक ज़रा

भी अपने घरमें बाक़ी नहीं रखते। बहुत सुबह जाग जाते हैं, और अगर मुलाज़िम दूसरी तरफ़ है तो वे उसे आवाज़ नहीं देते और न मुझे जगाते हैं। ख़ुद ही ब्रुश लेकर घरको साफ़ कर लेते हैं। वे यह बर्दाश्त नहीं कर सकते कि काग़ज़ या सिगरेटका कोई टुकड़ा फ़र्शपर पड़ा रहे। उनकी २४ घंटेकी मसरूफ़ियतों (व्यस्तता) के साथ यह मसरूफ़ियत देखकर मुझे तरस आता है, और मैं नहीं चाहती कि इतने मामूली काम आप ख़ुद करें। अब मैं क्या करती हूँ? सोनेसे पहले रात हीको तमाम घरकी सफ़ाई करा देती हूँ, ताकि सुबह-ही-सुबह सिगरेट या काग़ज़का कोई टुकड़ा फ़र्शपर पड़ा देखकर उनके अहसास (चेतनमन) में ज़ख़्म न पड़े। हाय कोई उस वक़्त साग़रके चेहरेको देखे, जब कोई सिगरेटका टुकड़ा ज़मीनपर फेंककर जूतेसे मसलता है। ऐसे शख़्ससे एक बार मिलकर वे दुबारा नहीं मिलते। रखी हुई चीज़ोंमें अगर तरतीब नहीं है तो वे बेचैन हो जाते हैं। उनके हाथ ख़ुद-ब-ख़ुद उठ जाते हैं। इसे उठाकर उधर रखा, उसे उठाकर इधर रखा, और सचमुच ऐसा लगता है कि अब चीज़ें अपने सही मुक़ामपर पहुँच गई हैं। उनकी निगाहें हर-वक़्त टूटी-फूटी पुरानी और बेकार चीज़ोंकी ताकमें रहती हैं। देखते हैं और फ़ौरन फिंकवा देते हैं, और यह कहकर फिंकवा देते हैं कि उनका ज़ाया (नष्ट) कर देना मेरे लिए सबक़ है। ज़िन्दा वही रह सकता है जो हर वक़्त अपनी ज़रूरत साबित करे। लेकिन काग़ज़का एक-एक पुर्ज़ा वे इस तरह सँभाल कर रखते हैं "जैसे कोई हज़ार-हज़ारके नोटोंको सँभालता हो।

व्यवस्थित जीवन—"आये हुए ख़तूतके फ़ाइल अलग हैं,

जवाब दिये हुए ख़तूतकी फ़ाइल अलग हैं। डाकका रजिस्टर पूरे दस ख़ानोंके साथ। हर ख़त रजिस्टरमें दर्ज होकर पोस्ट होता है। डाक्टरके नुस्ख़ोंका फ़ाइल अलहदा है। मकानके किरायेकी रसीदों-का फ़ाइल अलहदा है। नज़्मोंके मसवदोंका फ़ाइल जुदा है। मज़ामीनका फ़ाइल अलग, याददाश्तकी किताब अलहदा है। इरादोंकी किताब अलहदा है और जो इरादा पूरा हो गया, उस पर सुर्ख़ निशान।

"२०–२०, ३०-३० सालके ख़त उनके पास महफ़ूज़ हैं। किसी बड़े-से बड़े दफ़्तरका निज़ाम (प्रबन्ध) भी शायद ऐसा न होगा, जैसा उनके घरेलू दफ़्तरका निज़ाम है। दयानतदारी (ईमानदारी) के साथ वे चाहते हैं कि हरएक ख़तका जवाब दें। हरएककी ख़िदमत करें। मगर वे तमाम ख़तूतका जवाब नहीं दे सकते। फिर भी उनकी आमदनीका अच्छा ख़ासा हिस्सा डाकपर ख़र्च होता है। दिन-रातके किसी हिस्सेमें जब भी फ़ुर्सत मिलती है, वे अदीबों (साहित्य-सेवियों) शाइरों और अपने दोस्तोंके ख़तूतका जवाब देते हैं। मगर यह एहसास उन्हें डसता ही रहता है कि वे हज़ारोंका जवाब नहीं दे सकते। इस कामके लिए बड़ी आसूदगीकी ज़रूरत है।

साग़र और जोश मलीहाबादी—"मुझे याद है जब (१९४३ ई०) ताहिर पैलिस पूनामें हम और 'जोश' साहब मलीहा-बादी मय अपने ख़ान्दानोंके रहते थे। जोश साहब इस महलके सहनमें छोटी मेज़ लगाये ड्रिंक करते रहते और साग़र शालीमार पिक्चरसे आकर डिनरके वक्त तक 'एशिया' का काम करते रहते

तो 'जोश' साहब आते और कहते 'पागल हो जाओगे। कोई इतना काम करता है' ? और तशवीक़ दिलाते (उकसाते) कि 'तुम्हारी इतनी बड़ी तनख़्वाह है और तुम अब भी डेली ड्रिंक नहीं करते' और वजह पूछते—'मुझे यह बताओ कि तुम ख़ुदकशी क्यों करते हो, तुम्हें हसूले-मसर्रतसे क्यों बैर है ?' साग़रका जवाब मुझे याद है, वे मुसकराये और बोले—'जोश साहब, मेरे बड़े फ़राइज़ (कर्तव्य) हैं। छः भाइयोंकी तालीम और तरबीयत (शिक्षा-दीक्षा) मेरे ज़िम्मे है। मेरठका पूरा ख़ान्दान मेरी ख़िदमत-का मुस्तहक़ (अधिकारी) है। कोई मन्तक़ नहीं कि ह्विस्कीसे अपनी प्यास बुझाऊँ और वोह भूखा रहे, जाहिल रहे और बर्बाद हो जाय'। और एक दिन साग़रने कह ही दिया 'मैं सिर्फ़ इसलिए रोज़ाना नहीं पीता कि आप ऐसा चाहते हैं'। इसपर तल्ख़ी बढ़ गई। वे बड़े सादा दिल और शरीफ़ हैं। बदएतमाद (अविश्वसनीय) दोस्तोंपर एतमाद (विश्वास) करते हैं। बैठे-बिठाये उन्होंने शालीमार पिक्चर्सकी मुलाज़मतसे जोश साहबके मशवरेपर इस्तीफ़ा दे दिया। और जब मैंने कहा कि 'यह आपने क्या किया' ? तो बोले 'भई, यहाँपर कौन है जिससे मश्विरा लूँ। 'जोश' जैसे दोस्तपर एतमाद (भरोसा) न करूँ तो किसपर एतमाद करूँ ?' जोश साहब ने ख़ुद इस्तीफ़ेका मसवद्दा (मज़मून) बनाया, साग़रने उसे नक़ल किया और फिर ज़ैड अहमद मालिक कम्पनीके सामने जोश साहबने अपनी ही तहरीरको सख़्त क़ाबिले एतराज़ कहा। सुबहको कृशनचन्दरने मुझे बताया कि रातको यह हुआ। कृशनचन्दर भी उन दिनों शालीमारमें मुलाज़िम थे। मैं जब नयी-नयी ब्याही गई तो मैंने महसूस किया कि साग़रको अपने

अज़ीज़ों, दोस्तों और हर मुलाक़ातीसे ऐसा लगाव है, जैसे हर कोई उनके दिलका टुकड़ा है।

अतिथि-सत्कार—"आनेवालोंकी मुदारात (आवभगत) पर अपनी तौफ़ीक़ (हैसियत) से बढ़कर ख़र्च करते हैं। साग़र घरकी ज़रा-ज़रा-सी बातके लिए सोचते हैं, हिसाब लगाते हैं और इसके चंद घंटेके बाद ही कोई आजाय तो सारा हिसाब-किताब ख़त्म और जब तक वह शख़्स चला न जाय, इन्हें फ़िक्रे-फ़र्दा (भविष्यकी चिन्ता) नहीं रहती। हर शख़्ससे खुले दिलसे मिलते हैं। हरएकसे अपने दिलकी बात कह देते हैं। घरमें जगह हो या न हो, किसीको मकानकी तकलीफ़ है तो फ़ौरन कहेंगे 'भई मेरा घर मौजूद है, आपको कुछ तकलीफ़ तो होगी, मगर जबतक मकान न मिले रहिए, और लोग चंद दिनको कहकर ठहरे और दो-दो, तीन-तीन साल रहे। ठहरने वालोंको अपना बैडरूम (शयनकक्ष) दे दिया, और ख़ुद बरांडेमें पड़ गये। आँखपर ज़रा मैल नहीं और रहनेवाले रातके बारह-बारह बजे, दो-दो बजे आ रहे हैं और यह उठ-उठकर दरवाज़ा खोल रहे हैं। और इसका भी ख़्याल है कि ज़किया (बेगम साग़र) की नींद ख़राब न हो। खानेसे लेकर कपड़ोंकी धुलाई तकके लिए उनके मैनेजर बने हुए हैं। ठहरनेवाले मैले कपड़े ड्राइंग रूमसे दफ़्तर तक बखेर रहे हैं। और यह उठाते फिर रहे हैं। लौण्डरीपर कपड़े भिजवा रहे हैं, उनके बिस्तर ख़ुद उठा रहे हैं और रख रहे हैं।

"हाय! मुझे एक वाक़या याद आया। हम बम्बईमें अँधेरीके पास अरेला गाँवके मकानमें रहते थे। यह महज़ दो रूमका एक

देहाती-सा मकान था। यह घोड़बन्दर रोडके किनारे था। यह एक लम्बी सड़क माहिमसे शुरू होकर जोगेश्वरी तक चली गई है। खानेके बाद टहलनेके लिए पुरफ़ज़ा सड़क है। किनारे-किनारे ख़ुशनुमा और शानदार कोठियाँ हैं। हर कोठी शादाब दरख़्तोंसे घिरी हुई। हम अक्सर इस सड़कपर शामको चहल-क़दमी करते थे। कभी मिलकर कभी साग़र तनहा निकल जाते। देखते क्या हैं मुसाफ़िर साहबका एक घरका सामान सड़कपर पड़ा है और उनके अज़ीज़ बेकसीके आलममें खड़े हुए हैं।

'बताइए अब इसे मैं कहाँ ले जाऊँ' वे बोले। साग़रने कड़ककर कहा 'मेरे मकानपर ले चलिए' यह लैंडलोर्ड बड़े संगदिल और ज़ालिम होते हैं। मगर इस अहदके शाइर ऐसे नहीं।' सामान आ गया, और मेरा दिल पसीज गया। मैंने उनकी नेक-दिलीकी तारीफ़ की, दो कमरोंमें उनका पूरा सामान रखा गया। दोनों कमरे गोदाम बन गये। मगर साग़र इस गोदामसे ख़ुश थे। जैसे उन्होंने मालिकाने-मकानकी पूरी क़ौमसे इन्तक़ाम ले लिया है। यह हज़रत दो-तीन दिनको आये थे, मगर एक सालसे पहले नहीं गये। दूसरोंपर साग़रके एतमाद (भरोसा) करनेका एक और दिलचस्प क़िस्सा। पूनामें साग़र अपनी लाइब्रेरी, दफ़्तरका सामान और अपने एक भाईके ख़ान्दानका सामान ले गये थे। यह एक तरहका तर्केवतन था, और जब शादी हुई तो सारा जहेज़ भी ले गये। पूनामें मुलाज़िम जो थे। मुझे याद है जब पूनासे बम्बई आये तो हमने साठमनका किराया अदा किया था। साग़रने सूबे बिहारके एक मौलवीको बम्बईमें 'एशिया' का नुमा-इन्दा (संवाददाता) बनाया था। वे उसे ५० रु० तनख़्वाह देते

थे। इसीके सुपुर्द मकानकी तलाश हुई और उसने इन्हें लिख दिया कि मकान मिल गया, आ जाइए। और हम पूरे दो ट्रकका सामान लेकर ख़िलाफ़त हाऊसमें जा पहुँचे। ज़ाहिद शौकतअली ने हाथों-हाथ लिया मगर ज़ेरे-लब मुसकराये। साग़रने पूछा क्यों? वे बोले—'साग़र साहब, बम्बईमें ज़ेरे-ज़मीन तो जगह है बालाए-ज़मीन नहीं। मकान मिलना मुमकिन नहीं। मौलवीने मकान नहीं लिया है, वह झूठा है।'

"आख़िर उन्होंने हमें बीमार बनाया और बडाला सेनीटोरियममें एक पूरा ब्लाक इस तरीक़ेसे दिलाया और हम वहाँ रहने लगे। इतनेमें ही एक अनजान शख़्सका ख़त आया। ऐसे ख़त साग़रके पास बहुत आते हैं। जिनमें लोग मुलाज़मतकी ख़्वाहिश करते हैं। इस ख़तमें लिखा था मैं मैट्रिक पास हूँ, मुलाज़मत नहीं मिलती। फ़ँला तारीख़को हाज़िर हो रहा हूँ। और एक दिन वह तशरीफ़ ले आये। मुलाज़मत तो जब मिलेगी-मिलेगी लेकिन रहें कहाँ? मुलाज़िम तो वह जल्द हो गये, मगर महीनों उन्हें घर नहीं मिला। वह भी हमारे साथ रहे। अब उन्हें कपड़े और बिस्तरसे लेकर हर चीज़की छूट थी और जो कुछ उन्हें पसन्द आया वे अपने ट्रंकमें महफ़ूज़ (सुरक्षित) करते गये।

इस वाक़येके बाद हम दस बरस बम्बईमें रहे, मगर यह हज़रत नज़र न आये। साग़र अफ़गान मिज़ाजके एक मुकम्मिल नमूने हैं। मेहमाँनवाज़ी इन्हें विरसे (उत्तराधिकार) में मिली है। दरियादिली (उदारता) ख़ान्दानी सिफ़त है और उनके अख़लाक (व्यवहार) की बाक़ी तमाम ख़ूबियाँ उनके फ़ितरी (स्वाभाविक) जौहर हैं।

शाइरोंसे हमदर्दी—"बुज़ुर्ग और मुअ़मिर शाइरोंसे क्या उनका बर्ताव है, मुझे ऐसा भी एक वाक़या याद है। मुहम्मद अली रोड बम्बईके मुसलमानोंकी तरफ़से एक मुशाअ़रा हो रहा है। तमाम शाइर आ चुके हैं। हाल सेठों, हुक्काम, उमरा और मुक़ामी लीडरोंसे भरा हुआ है। कुर्सियोंकी निशस्त है। कि 'साग़र' मेरे साथ मुशाअ़रेमें दाख़िल हुए। सारा हाल तालियों-से गूँज उठा। हम दो ख़ाली कुर्सियोंकी तरफ़ बढ़े, और साग़र उनमें-से एकपर बैठ गये, और लोगोंके सलामों-आदाबका जवाब देते रहे कि यकायक उन्होंने एक शख़्सको देखा और तीरकी तरह उसकी तरफ़ दौड़े। 'अरे आप कहाँ।'[1] वे इनका हाथ दबाते रहे। मैंने देखा एक छरहरे बदनके बुज़ुर्ग हैं, जिनके चेहरेपर फ़िक्रकी झुर्रियाँ हैं। मगर चाक़ो-चौबन्द, लिबास साफ़-सुथरा है। साग़रकी तरह कोई शख़्स उनकी तरफ़ नहीं बढ़ा। मुशाअ़रा शुरू हुआ, दरम्यान ही में मामूली तौरपर उनका नाम मीरे-मुशाअ़रेने पुकारा तो लपककर साग़र माइकके सामने थे। उन्होंने कहना शुरू किया और उन साहबकी तारीफ़में लम्बी-चौड़ी तक़रीर कर दी और उस दिनसे···साहब बम्बईके हर अदब-नवाज़की ज़बानपर थे। साग़रने उन्हें मुझसे मिलवाया। घरपर मदऊ (निमंत्रित) किया। उनके मक़सदमें उनकी मदद की। सर मुहम्मद यूसूफ़के यहाँ मुलाज़मतका इन्तज़ाम किया। मगर···साहब कम तनख़्वाहकी वजहसे राज़ी न हुए। इस दौरानमें

१. यह बहुत ख्याति प्राप्त बुज़ुर्ग शाइर थे अब इन्तक़ाल फ़र्मा चुके हैं। नाम देना मुनासिब नहीं समझा।—गोयलीय

महीना भर हमारे यहाँ आते रहे। फ़िर यकायक उन्होंने आना छोड़ दिया। एक दिन साग़र लौटे तो, उनका चेहरा सख़्त अफ़सुर्दा (कुम्हलाया हुआ) था। और आँखोंकी शोख़ी व सुर्ख़ी एक सपाट सफ़ेदीमें बदल गई थी। यह हमारी सख़्त माली परेशानीका ज़माना था। मैंने इस हालतको इस परेशानीका शाख़ाना (कारण) समझा और पूछा ख़ैर तो है, क्या काम नहीं हुआ? 'कामके लिए तो मैं गया ही न था। एक बातसे इतना धक्का लगा कि सड़कपर चल नहीं सका। आख़िर घर लौट आया।' 'क्या बात हुई' मैंने पूछा 'साहब स्पेन रोडके चौराहेपर मिल गये थे। मैंने कहा—क़िबला आपने तो आना भी छोड़ दिया।' 'अब क्या ज़रूरत थी आने की···साहबने जवाब दिया' और इस जवाबसे मेरी आँखोंके नीचे अँधेरा आ गया।'

"साग़रके उरूजे-शोहरत (१९३५ ई०) के बादसे उर्दू शाइरोंकी जो नई नस्ल उभरी, वह दरअस्ल साग़र, जोश, इक़-बाल और जिगरकी औलाद हैं। इस औलादके खद्दोख़ाल अपने बुज़ुर्गोंके खद्दोख़ालके अक्स हैं। और हमारे एशियाई अख़लाक़में इस रिश्ते और विरसेकी ख़सूसियतकी बड़ी क़द्रो-क़ीमत है। लेकिन इस नस्लके हर फ़र्दसे साग़रने बुज़ुर्गाना रिश्ता नहीं रखा, दोस्ती की। बुज़ुर्ग बनकर उनपर रौब नहीं जमाया। बेतकल्लुफ़ उनकी सलाहइयतोंको तस्लीम किया। उनकी अहलियतोंकी क़द्र की, उनके अदबसे मुहब्बत की, उनकी ज़ातसे मुहब्बत की।

"एक दिन हम सी० सी० आईसे लौट रहे थे कि इत्तफ़ाक़से सड़कपर एक दुबले-पतले नौजवानको बेहोश पड़े देखा। साग़रने कार रुकवाई और इस नौजवाँको घर ले आये। बेहोशीकी

हालतमें गन्दे कपड़े बदलवाये। सरपर पानी डाला, मुँह धुलवाया। पैर धुलवाये, बड़ी देरतक उसका सीना सहलाते रहे और जबतक वह न सो गया। ख़ुद न सोये। सुबह आँख खुली कि एक नादीदिनी मंज़र (न देखने योग्य दृश्य) पेश-नज़र था। साग़रने मुझसे छिपकर, फिर कपड़े तबदील कराये। मुझसे आँख बचाकर कि दोस्तकी कमज़ोरी मेरे इल्ममें न आये। यह सब कुछ करते रहे। मैं भी उसी तरह मसरूफ़ रही, जैसे देख ही नहीं रही हूँ। और ऐसा अक्सर होने लगा तो बात मुझपर भी खुल गई। मगर साग़रकी पेशानीपर बल नहीं आया। वे इस बातसे ख़ुश थे, कि उनकी सेहत पहलेसे बेहतर हो रही है। दफ़्तर जानेसे पहले उन्हें ग़ुस्ल कराना, नाश्ता कराना, नीबू रस और नमक पिलाना, इनका काम था। फ़ज़ली फ़िलिम्स जाते हुए, मुझे ख़ास हिदायत करते कि मैं उनका ख़याल रखूँ। साग़रके जानेके बाद वह नौजवाँ एक ममीकी तरह कुर्सीपर बैठा रहता। मैं घबरा जाती तो कहती आइए रमी खेलें। ममी बग़ैर जवाब दिये रमी खेलने लगती। खानेके लिए कहती तो ममी खाने लगती। सोनेके लिए कहती तो ममी सो जाती। शामको साग़र आते तो बड़े एहतमाम (यत्नपूर्वक) के साथ ममीको ··· पैग देते, तब ममी बोलने लगती, गुलअफ़शानी करती और उसकी दिलचस्प बातोंपर साग़र बाग़-बाग़ होते। हँसते-हँसते दोहरे हो जाते। एक दिन हम दोनों घरपर नहीं थे कि ममी घरसे निकल गई। साग़रको उनके जानेका बहुत दुःख हुआ। बोले—'मुझे डर है कि यह विचारा किसी दिन खिलौनेकी तरह किसी हादसे (दुर्घटना) से चूर-चूर हो जायगा। कौन उसकी हिफ़ाज़त करे।' कुछ दिनोंके बाद ख़बर

आई कि '......दोबारा पागल हो गये हैं'। और फिर वही हुआ जो साग़रने कहा था।

"सन् १९५० में साग़रके एक शाइर दोस्तको कैन्सरका मर्ज़ हो गया। यह सुनकर इनके पाँवतलेकी ज़मीन ही तो निकल गई। बम्बईका एक ग़रीब अख़बार-नवीस, बीमार और बेकार। साग़रके लिए यह ज़माना भी आसूदगीका न था। कोई रस्ता इस दोस्त की मददका न निकल सका। उन्हीं दिनों एक मुशाअ़रा हुआ। मुशाअ़रेके सदर साग़र थे। अपना कलाम सुनानेसे पहले साग़रने अपने शाइर दोस्तके लिए तक़रीर की और ख़ुद अपनी टोपी हाथमें लेकर चंदा करने लगे। दूसरोंने देखा तो वे भी चंदा करनेके लिए उठ खड़े हुए। देखते-देखते कई-सौ रुपया जमा हो गया, और इस तरह शाइर दोस्तकी माली मदद हो सकी।

स्वाभिमान और चरित्रकी दृढ़ता—साग़रने समाजके आला, दरमियानी और अदना, तीनों तबक़ोंको मुतास्सिर (प्रभावित) किया है। सारे हिन्दोस्तानमें साग़रके जितने जागीरदार और सरमायेदार दोस्त हैं, बहुत कम दूसरोंके हैं। लेकिन उन दोस्तोंसे जिस क़दर साग़रने परहेज़ किया, उसकी मिसाल भी कम मिलती है। जहाँ साग़रको रवायत-परस्त लोगों (परम्परा भक्तों) की सोहबतसे कोफ़्त होती है, वहाँ सरमायेदार-की सोहबतसे भी सख़्त कोफ़्त होती है। रवायत-परस्त लोगोंकी रफ़्तारसे साग़रकी ज़हनी रफ़्तार इतनी तेज़ है कि यह दोनों एक मरक़ज़पर जमा हो ही नहीं सकते। सरमायेदारोंमें ख़लूस नहीं, ज़हानत नहीं और एहसास नहीं, इसलिए इनसे भागते हैं। इन-

पर यह रोशन हो चुका है कि मौजूदा समाज और शाइरका कोई सम्बन्ध नहीं। ग़रीब और अमीरकी ज़ाती दोस्ती नहीं हो सकती। आला तबक़ा अदबको नहीं समझता। फिर भैंसके आगे बीन बजानेसे हासिल ?

"बम्बईका यह रिवाज इन्हें सख़्त नापसन्द था कि सरमायेदार और सेठ डिनरपर शाइरोंको बुलाते हैं, और डिनरके बाद शाइर गाकर अपना कलाम सुनाते हैं। उन्हें सुनाते हैं जिन्हें शाइरीसे कोई ज़ौक़ नहीं होता। जो शेरी बारीकियोंको नहीं समझ सकते। बम्बईमें बड़े-बड़े सेठ और सरमायेदार आरज़ू करते थे कि साग़र शाम हमारे साथ गुज़ारें। मगर साग़रने कभी इस बातको दिलसे पसन्द नहीं किया। जहाँ गये, मारे बाँधे गये।

"निज़ाम दकनके छोटे साहबज़ादे मुअज़्ज़िमजाह बहादुर बम्बई आये। साग़रको डिनरपर बुलाया, दूसरे दिन साग़र सुबह आठ बजे लौटे। शामको फ़िर ब्यूक आई, फिर शाहिद सद्दीक़ी इसरार करके ले गये। फिर तीसरे दिन भी आठ बजे वापिस आये। तीसरे दिन फिर शाहिद सद्दीक़ी आये। साग़रने कहा—"बाबा! यह कोई ज़िन्दगी है। रातभर जागो, रमी खेलो, शेर सुनो, गला फाड़-फाड़कर दाद दो, नींद आये तो नींद न आनेकी गोलियाँ खाओ। नींद न आये तो ख़्वाब-आवर गोलियाँ निगलो। यह आदमीकी तौहीन है। यह सख़्त कर्बकी बात है, यह मेरे बसकी बात नहीं।"

राजा साहब धनराज गिर, साग़रके बेतकल्लुफ़ दोस्तों और मद्दाहों (प्रशंसकों) में से हैं। वे अक्सर शिकायत करते—"तुम मेरे गहरे दोस्त हो, मगर सबसे कम मेरे यहाँ आते हो।"

"गुस्ताख़ी माफ़ ! मैं महीनेमें एक ही बार आपको ज़हमत दे (खानेपर बुला) सकता हूँ"—सागर जवाब देते—"इसीलिए महीनेमें एक ही बार आता हूँ।" उनके इसरारपर अपनी ग़ज़ल सुनाते। एक रातकी बात है कि वे अपने जोशे-तरन्नुममें गूँज रहे थे, और यह शेर उनकी ज़बानपर था:—

सावन आया फूल खिले इक दीवाना बोल उठा।
जिसमें दिल खिल जाते हैं, वोह बरखा कब होती है ?

"वाह ! क्या फ़लसफ़ा है ?" राजा साहबने दाद दी। तरन्नुमकी धारा इक साथ रुक गयी और सागरने हँसकर कहा—"राजा साहब, आप शेर नहीं समझते। मैं इसीलिए तो आपके पास नहीं आता।" "कैसे नहीं आयगा मेरा भाई है"—राजा-साहबने फ़ख़्र और मसर्रतके साथ कहा, रात गई बात गई। उन लोगोंके लिए जो मेहनतकशोंके तबक़ेसे उठे हैं। राजाओं, नवाबों, जागीरदारों और सरमायेदारोंकी महफ़िलमें पहुँचना, बादी उलनज़र-में ज़िन्दगीकी मैराज थी। मौजूदा निज़ाममें जो नुमाया बुलन्दी और पस्ती (वर्त्तमान समाज-व्यवस्थामें जो ऊँच-नीच या बड़े-छोटे-का भेद) है, उसके होते यह अजूबा (विचित्र) सी बात मालूम होती है, और सागर इस अहद (युग) की पैदावार हैं। जब यह बात बिल्कुल ही अजूबा समझी जाती थी, पर सागरने कभी इस अजूबेको अजूबा न समझा। कभी इन महफ़िलों और इन सोहबतोंपर फ़ख़्र नहीं किया।

"उनमें ख़ुद इक शाहज़ादगी थी, जो इन महफ़िलों और सुह-बतोंकी रौनक़ थी। लेकिन ३५ सालकी पूरी तारीख़ मौजूद है। क़दम-क़दमपर इमकानात (संभावना) पैदा हुए, मगर वे किसी

दरबारसे वाबस्ता नहीं हुए, और सारी उम्र एक मेहनतकशकी ज़िन्दगी बसर की। सख़्तियोंका मुक़ाबला किया। मुसीबतें सहीं। मगर अपनी ज़हनी आज़ादीको बाक़ी रखा। कभी अहसासेकमतरी (हीन मनोभावनाओं) का शिकार नहीं हुए। अगर किसी अमीरके घर गये तो उसे भी अपने घर बुलाकर खिला-पिला दिया। वे इस हक़ीक़तको जानते हैं कि बुलन्दी और पस्तीके दरम्यान इम्तयाज़ी शान सिर्फ़ ग़रज़मन्दी है। और जो ग़रज़ नहीं रखता, उसके सामने एक हमवार सतह (समान स्तर) है, उसके लिए कोई बुलन्दोपस्त नहीं।

मरहूम जागीरदारों और ज़िन्दा सरमायेदारोंपर ही क्या इन्ह-सार है। उनकी ख़ुदी तो उनसे भी मरऊब और मुतास्सिर (प्रभावित) नहीं हुई। जो जागीरदारों और सरमायेदारोंसे भी ऊँची सतह रखते हैं।

मेरा मतलब उन क़ौमी रहनुमाओं (नेताओं) से है, जिनकी सोसाइटीके वोह एक फ़र्द (सदस्य) हैं, और जिनसे साग़रने एक हद तक असर लिया है।

"उनका फ़िल्ममें जाना, उनकी ख़ुद्दारीका ही एक क़दम था। अगर वह मौक़ेबाज़ होते तो क़ौमी हलक़ोंको छोड़कर काले कोसों क्यों जाते। उन्होंने जोश मलीहाबादीकी तरह कांग्रेस और कम्यु-निष्ट पार्टीसे माली जलवे मुन्तफ़अ (आर्थिक समझौता) नहीं किया। औरअपने फ़ानूसे-ख़ुदीको चराग़े-तहेदामाकी तरह बादे मुख़ालिफ़से बचाकर दक्कन चले गये। और जब उनके बुज़ुर्ग, दोस्तों और साथियोंके हाथमें हिन्दोस्तानकी ज़मामे-हुकूमत (शासनकी बागडोर) आई, तो छः साल तक उनसे नहीं मिले। मौलाना

अब्दुल क़लाम आज़ाद, पं० जवाहरलाल नेहरू, और डा० राजेन्द्रप्रसादसे ही नहीं, वे अपनी मुँहबोली माँ सरोजिनी नायडूसे भी नहीं मिले। जो उत्तर प्रदेशकी गवर्नर थीं, और जिन्हें साग़रकी ख़ुदी (स्वाभिमान) का अन्दाज़ था[1]। यह वोह नाज़ुक ज़माना था, जब तक़सीमके बाद दिल्लीका हादसा क़त्लोग़ारत हुआ, और एक ही दिनमें फ़ज़ली फ़िलिम्स और के० आसफ़से मिले मुआहदे टूट गये। और दो हज़ार माहानाकी दो मुलाज़मतें मिनटोंमें ख़त्म हो गईं। हर तरफ़ एक फ़रारकी फ़ज़ाँ (भागनेकी हवा) पैदा हो गई। वे बम्बईमें सख़्त मुश्किलातका मर्दानाबार मुक़ाबला करते रहे। वे कहते रहे, जो कुछ हमने किया, वह हमारा पैदाइशी फ़र्ज़ था। और हमें इतमीनान (विश्वास) है कि हमने हिन्दोस्तानको आज़ाद करा लिया है। सन् ३५ से पहले डा० सैय्यद महमूदने अपनी ज़मीदारीमें खेती-बारी करनेके लिए ज़मीनकी पेशकश की।

१. साग़रसाहबसे सुश्री सरोजिनी नायडू कितना अधिक स्नेह रखतीं थीं, इसका कुछ आभास इससे भी मिलता है कि १९३५में प्रकाशित साग़रके कलामके संकलन 'रस-सागर' की आपने प्रस्तावना लिखी थी और स्वराज्य मिलनेके बाद उत्तर प्रदेशकी गवर्नर बननेपर जब आपसे हज़रत 'जोश' मलीहाबादी और श्री जगन्नाथ आज़ाद मुलाक़ातको गये तो आपने पूछा—"साग़रसाहब कहाँ हैं आजकल और क्या हाल है उनका?" ज़वाब मिलनेपर आपने फ़र्माया—"मैं साग़रसाहबके लिए कोई मुस्तक़िल (स्थायी) सूरत पैदा करना चाहती हूँ।" फिर आपने अपने सेक्रेटरीको कहा—"लखनऊ चलकर मुझे दो बातें याद दिलाइए। एक साग़रसाहबका काम, दूसरा 'आजकल'के लिए नज़्म"। —गोयलीय

मगर साग़रने उसे मंज़ूर नहीं किया। मैंने पूछा 'क्यों! इसमें क्या बुरी बात थी।' बोले—'ज़हनके फ़ितरी बलूग़को वह सारी ज़मीन उसी तरह दबा देती, जैसे नौख़ेज़ (नवअंकुरित) पौदोंको झड़ी हुई मट्टी दबा देती है।' मैं उनसे कभी-कभी कहती कि 'आपकी ख़ुद्दारी अगर एक मुनासिब दायरेमें रहती तो शायद आप ज़िन्दगी ख़ुशहाल बिता सकते थे। आपकी ख़ुदी और ख़ुद्दारी हदसे गुज़र गई है। इसीलिए ज़िन्दगीसे आपका जोड़ नहीं होता।' 'इस जोड़की कोई ज़रूरत ही नहीं।' बड़े इत्मीनानसे वह जवाब देते—'ख़ुदीका मिज़ाज सिर्फ़ ख़ुदी है। ख़ुद्दारी अपनी फ़ितरतमें बुनियादी तौरपर हद्दसे गुज़रा हुआ जज़्बा है। समाजके मफ़रूज़ा अख़लाक़ (कल्पित आचरण) और नामुन्सिफ़ाना निज़ामसे टकरानेके लिए इक बेकराँ ख़ुदी (इंसाफ़ रहित इन्तज़ाम)से बेख़ुद हो जाना ज़रूरी है। होशमन्दी और तवाज़ुन एतदाल और मस्लहतबीनीमें यह सकत नहीं कि दुनियासे निपट सकें।' यह बात माननी पड़ेगी कि साग़रका जौहरे किरदार (आचरण) इम्तहान और आज़माइशकी कसौटीपर एक बार चमका तो उसपर कभी कोई गर्द नहीं पड़ी। साग़रका किरदार फ़ितरी (स्वाभाविक) भी है और उन्होंने उसे मुस्तक़िल मज़हब-(आत्म-धर्म) की हैसियत भी दे दी है। साग़रने जब यह कहा कि—

जब तिलाई रंग सिक्कों को नचाया जायगा।
जब मेरी ग़ैरत को दौलत से लड़ाया जायगा॥
ऐ वतन! उस वक़्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊँगा।

तो इस अहद (प्रतिज्ञा) को पूरी ज़िम्मेदारीके साथ निभाया।

और आज भी निभा रहे हैं। साग़रने यह अह्द सिर्फ़ वतनसे ही नहीं किया। बल्कि बुलन्द अख़लाक़से किया है। वे ज़रूरत-मन्द हैं। मगर दौलतके ग़ुलाम नहीं, और ज़रूरतमें भी वे अपने किरदार (आचरण व्यक्तित्व) को दाग़दार होनेसे बचाते हैं। अपने किरदारके मुक़ाबलेमें वे दौलतको मट्टी समझते हैं। सारी ज़िन्दगी साग़रने रुपयेके मुक़ाबलेमें किरदार (चरित्र केरेक्टर) को अहमियत (प्रधानता) दी। एक वाक़या तो मैं कभी नहीं भूलूँगी।

"नवाब मुअज़्ज़मजाह बहादुरने जोश और साग़रको शाहिद सद्दीक़ीके ज़रिये पूनासे निज़ाम पैलेस बम्बईमें बुलाया। वे अपना दीवान छपवाना चाहते थे, और चाहते थे कि इस अहदके दो बड़े शाइर उनके कलामको ब-नज़रे-इस्लाह देख लें। चुनाँचे साग़र और जोश साहब बम्बई गये और जब उस कामसे फ़ारिग़ होकर रुख़सत हुए तो मुअज़्ज़मजाह बहादुरने रुख़सतानेके तौर पर ५०० रु० उन दोनोंको पेश किये। साग़र ख़ामोश रहे। लेकिन जोश साहब बरहम (क्रुद्ध) हो गये और लेनेसे इनकार कर दिया। मुअज़्ज़मजाह बहादुरने साग़रको बुलाया और पूछा क्या बात है ? साग़रने शहज़ादेको समझाया कि 'ग़ालबिन जोश साहब इस रक़मको नाकाफ़ी समझते हैं, और यह नहीं चाहते कि कोई उसमें हिस्सागीर हो। इसलिए यह रक़म उन्हींको दे दें। मुझे ज़रूरत नहीं है'। और इस जवाबपर शहज़ादा देरतक हैरतसे साग़रका मुँह ताकतारहा, और फिर हुक्म दिया कि ५०० रु० की रक़म जोश साहबको दे दी जाय, और शाहिद-ने मेरे सामने जोश साहबको दे दी।

जोश साहबने ५ नोट लेकर अपनी जेबमें रख लिये।

साग़र उसी तरह ख़ामोश थे। जैसे कोई बात ही नहीं हुई हो। लेकिन इस वाक़येके दो नतीजे ज़हूरमें आये। नवाब मुअज़्ज़मजाह बहादुरने दुगनी रक़म साग़रको भेजी और जोश साहबसे उनके ताल्लुक़ात बिलकुल टूट गये।

तहरीके-अम्न (साम्यवादियोंके कथित शान्ति-आन्दोलन) के एक बहुत कड़े लीडरने साग़रसे कहा कि 'वे चीन और रूससे उन्हें बहुत माली इमदाद दिला सकते हैं, अगर साग़र क़बूल करें। इस ज़मानेमें हमारी परेशानियोंकी कोई इन्तिहा न थी। लेकिन इस बड़े लीडरसे साग़रने कहा—"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि कभी कांग्रेससे मैंने माली इमदाद ली है ?"

लीडर—कभी नहीं।

साग़र—"तो फिर आप ऐसी पेशकश क्यों करते हैं ? मेरे नज़दीक वह मुल्कका ग़द्दार है जो हिन्दोस्तानमें बैठकर किसी बेरूनी मुल्कसे मालीइमदाद हासिल करता है।" रिसाला एशिया बंद हो चुका था। सन् १९५३ में उसके फिरसे जारी करनेके लिए, सरमाया नहीं था, एक सोशलिस्ट लीडरने साग़रको बहुत बड़े सरमायेकी पेशकश की। मगर एक शर्तके साथ कि एशियामें पार्टीका प्रोपेगण्डा उसकी पालिसीके मातहत करना होगा।

"यह ज़मीर-फ़रोशी है", साग़रने ग़ुस्सेमें कहा। रुपयाके बदले पालिसी फ़रोख़्त कर देना, अख़बारनवीसीकी दयानतके ख़िलाफ़ है। इससे बेहतर है कि 'एशिया' शाया (प्रकाशित) न हो"। और एशिया जारी न हो सका। मुस्लिम लीगकी तहरीकके ज़माने में...फ़ज़लीने ५० हज़ार रु० की पेशकश की, और कहा—

पालिसी मेरी होगी। साग़रने कहा—"शुक्रिया मैं क़लम बेचनेके मुक़ाबिलेमें अपनी उँगलियाँ काटकर फेंक देना पसंद करूँगा।"

"सियासत और उसकी किसी पालिसी ही पर मुनहस्सिर नहीं, साग़रने ज़िन्दगीके किसी मोड़पर, अपने किरदारको दौलतपर क़ुर्बान नहीं किया। ज़िन्दगीमें ऐसे कई मोड़ आये कि वे चाहते तो रातको साग़रकी हैसियतसे सोते और सुबह नव्वाब समदयार-ख़ाँकी हैसियतसे जागते।"

साग़रकी शाइरी

•

सागर अभी १३ वर्षके भी न हो पाये थे कि आप शाइरीके .जुल्फ़े-पेचाँमें असीर हो गये। आपके मामूजान शेर कहते थे।

शाइरीका प्रारम्भ

शिक्षा-प्राप्तिके लिए आप अपनी ननिहाल—अलीगढ़में रहते थे। वहाँका वातावरण शाइराना था। अतः आप भी शौक़ फ़र्माने लगे। सबसे पहली ग़ज़ल जो टूण्डलेके मुशाअ़रेमें पढ़ी थी, उसके दो शेर ये हैं—

बचपन ही में किया मुझे ग़मने शिकस्ता पा
तै होंगी कैसे मंज़िलें यारब! शबाब की?
गर्दिश रहीं नसीबमें यारब! तमाम उम्र
'साग़र' बनाके क्यों मेरी मिट्टी ख़राब की?

१३ वर्षकी उम्रमें—ग़मके हिचकौले खाना, शबाबकी बातें करना, गर्दिशोंसे तमाम उम्र चिमटे रहना—वग़ैरह अशआ़रमें बाँधना कितना उपहासास्पद और बिचित्र-सा लगता है? लेकिन ग़ज़लके लिए यह सब बातें जरूरी हैं। चाहे अभी दूधके दाँत भी न टूटे हों। मुसीबतोंकी झलक स्वप्नमें भी दिखाई न दी हो। हुस्नो-इश्क़से दूरका भी वास्ता न हो। औरत-मर्दके क्या सम्बन्ध होते हैं, इसकी समझ तक न हो, बातचीत करने तकका शऊर न हो। मगर कूचए-शाइरीमें क़दम रखते ही वह सब कुछ कहना पड़ता है, जिससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं।

छोटी उम्रमें शाइरी करनेवाले अपने वास्तविक जीवनमें चाहे खिलौनोंके लिए मचलते हों, परन्तु उन्हें ग़मे-हिज्रे-यारमें

आँसुओंकी बाढ़ लानी पड़ती है। माँ-बापके धमकानेपर नाईसे जबरन बाल बनवानेकी वजहसे रो-झींक रहे हैं, मगर माहौले-शाइरीमें यारकी ज़ुल्फ़े-पेचाँमें फँसे हुए हैं। अभी अपने दिली दोस्तके साथ स्कूलसे वापिस लौटे हैं, कबड्डी खेलते हुए उसके साथ पकड़-धकड़ हुई है। दरियामें हँस-हँसकर ख़ूब कुलेलें की हैं, मगर शेर कहते वक़्त न यारकी कमर दिखाई देती है, न वह मुँहसे बोलता है, न वह ख़तका जवाब देता है, और नाज़ुक इतना कि चोटीपर फूलोंके हार लपेटे तो कमरमें लचका आजाये, काजलके भारसे आँखें झुक जायें। यूँ अकेलअँधेरे-उजालेमें जाते हुए भी चीख़ निकले, लेकिन शाइरीमें दरिया-पर्वत, जंगल और रेगिस्तानका रौंदना लाज़िमी।

ऐसी अप्राकृतिक, अस्वाभाविक और कृत्रिम शाइरीके दल-दलमें साग़रने पाँव ही रखा था कि आपके उग्र और क्रान्तिकारी विचारोंने ऐसा झटका दिया कि आप फँसनेसे बाल-बाल बच गये। अपने उन्नत विचारोंको उजागर करनेके लिए नज़्मको अपना लिया। अपनी मधुर स्वरलहरी और क्रान्तिकारी मौलिक नज़्मोंके कारण आपको एक वर्षमें ही भारतवर्षीय ख्याति मिलने लगी। यहाँ तक कि मुशाअ़रोंके लगातार निमंत्रणोंके कारण आप अपनी शिक्षा भी जारी न रख सके और १९२० में एफ० ए० से ही कॉलेज छोड़ देना पड़ा। १९२२ ई० में गया काँग्रेस अधिवेशनके अवसरपर हुए मुशाअ़रेमें आप इतने लोक-प्रिय हुए कि अधिवेशनके बाद भी २० रोज़ तक रोककर लोगोंने आपका कलाम सुना।

साग़र शाइरीके क्षेत्रमें लगभग १९१९ ई० में आये। उन दिनों अँग्रेज़-जर्मन विश्वव्यापी प्रथम युद्ध समाप्त ही हुआ था

और इस युद्धके कारण संसारका मानचित्र ही नहीं बदला, अपितु मनुष्योंके स्वभावों और धारणाओंमें अनेक परिवर्त्तन हुए। कई

तत्कालीन वातावरण

स्वतन्त्र देश परतन्त्रता-पाशमें फँस गये और कई परतन्त्र देश स्वतन्त्र हो गये। इस युद्धमें अँग्रेज़ोंके लिए अपार धन-जनकी आहुति देनेपर भी भारतको स्वतन्त्र नहीं किया गया, बल्कि इस सोनेकी चिड़ियाको फँसाये रखनेके लिए पिंजरेकी तीलियोंको और भी सुदृढ़ बनानेके लिए 'रौलटऐक्ट' का आविष्कार किया गया। शासक-वर्गकी इस हरकतसे समस्त भारतमें रोष छा गया और ६ अप्रैल १९१९ को राष्ट्रपिता बापूके नेतृत्वमें समूचे भारतने कारोबार बन्द करके, उपवास किया और जल्सोंमें उक्त ऐक्टको वापिस लेनेकी ज़ोरदार माँग की। अँग्रेज़ोंने निहत्थी और शान्त जनतापर गोलियाँ बरसाकर उसे और भी क्षुब्ध और मर्माहत कर दिया। परिणामस्वरूप स्वराज्य - आन्दोलन उग्र-से-उग्रतर होता गया। हिन्दू-मुस्लिम संगठित होकर स्वराज्य-आन्दोलनमें जुट गये।

इतने बड़े क्रान्तिकारी संघर्षसे साहित्यिक कैसे निर्लिप्त रह सकते थे। भारतके अन्य साहित्यिकोंकी तरह उर्दूके अदीब और शाइर भी जनताके उद्गारोंका प्रस्फुटन करने लगे। अपने लेखों और नज़्मोंसे जनतामें स्फूर्ति, उत्साह, उमंग और प्रेरणाके भाव भरने लगे। यूँ तो सैकड़ों शाइर इस मैदानमें उतरे, परन्तु अपने जीवनके अन्ततक पं० बृजनारायण 'चकबस्त' जिस वीरता-धीरताके साथ डटे रहे और जो अभूतपूर्व जौहर उन्होंने दिखाये, उससे उनका नाम जंगे-आज़ादीके शाइरोंमें सर्वोपरि रहेगा। दुःख है कि उनका भरी जवानीमें १९२६ ई० में निधन हो गया।

हमारे देशमें स्वतन्त्रता-आन्दोलनका जो उबाल आया था, वह बहुत शीघ्र ठण्डा पड़ गया। उत्तरप्रदेशीय चौरी-चौरा गाँवकी क्षुब्ध जनता-द्वारा कुछ पुलिसके सिपाही जीवित जला दिये जानेके कारण ५ फ़रवरी १९२२ को महात्मा गान्धीने असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया। आन्दोलन बन्द कर दिये जानेसे देशकी वही स्थिति हुई जो पूर्णवेगसे जाती हुई ट्रेनको अकस्मात् रोक देनेपर होती है। स्वराज्यके लिए जो जोश और अँग्रेज़ी शासनके प्रति जो क्षोभ था, वह अपनोंको ही उमड़-घुमड़कर उसी तरह कचोटने लगा, जिस तरह जिस्मके स्वस्थ कीटाणु रोगी कीटाणुओंके अभावमें शरीरको क्षीण करने लगते हैं। आन्दोलनके समाप्त होते ही हिन्दू-मुस्लिम परस्पर भिड़ गये। ग़ुलाम होते हुए भी बहुत-से हिन्दू, अरबमें ओमका झण्डा फ़हरानेका स्वप्न ही नहीं देखने लगे; अपितु बा-आवाज़ बुलन्द घोषणा भी करने लगे। अपने सरोंपर चुटिया है या नहीं, इसकी चिन्ता किये बग़ैर ही मौपलोंके सरपर चुटिया रखवानेको कटिबद्ध हो गये। स्वयं जात-पातमें विभक्त होते हुए भी और अपने सहधर्मी और सजातीय भाई-बहनोंको दिन-रात बहिष्कृत करते हुए भी मुसलमानोंको हिन्दू बनानेके लिए उतावले हो उठे।

इसी तरह मुसलमानोंने भी लड़ाई-झगड़ेके अनेक ढंग ईजाद किये। मुस्लिम रंडी-भडुवोंको तरग़ीब दी गई कि वे किस तरह हिन्दू तमाशबीनोंको फाँसकर मुसलमान बनायें। हिन्दू औरतोंको अग़वा करनेके लिए फ़क़ीरों और शोहदोंके हौसले बढ़ाये गये। ज़िबह करनेके लिए गायोंके हिन्दू-मुहल्लोंसे जूलूस निकाले गये। नमाज़ियोंने नमाज़ें छोड़-छोड़कर हिन्दू-बारातोंपर पत्थर बरसाये।

भारतव्यापी इस संघर्षको शान्त करनेके लिए महात्मा गान्धीको १९२५ ई० में २१ दिनका उपवास करना पड़ा। जिससे बाह्य-रूपमें तो कुछ शान्ति हुई, परन्तु अन्तरंगमें आग सुलगती रही।

देश-प्रेम और हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य

ऐसे ही वातावरणमें साग़रकी शाइरी परवान चढ़ रही थी। 'चकबस्त'—जैसे सपूत भारतके नग़मे गाते-गाते वैकुण्ठवासी हो गये थे। डा० 'इक़बाल' हिन्द और हिमालयसे मुँह फेरकर हिजाज़का कलमा पढ़ने लगे थे। उनकी शाइरीकी धारा इस्लामयतकी तरफ़ मुड़ गई थी। उन्हींके अनुकरणमें किसीने मिलाद-नामा, किसीने शाहनामा और किसीने इस्लामी तमद्दुनपर नज़्में लिखीं। मगर साग़रका क़ौमी रंग कच्चा न था, जो कि ऐसी साम्प्रदायिक बाढ़में पड़कर कच्चा निकल जाता। 'तुलसी कारी कामरी चढ़े न दूजौ रंग' के अनुसार आप अपने रंगसे बेरंग न हुए और जो डगर आपने पकड़ ली थी, उसपर दृढताके साथ चलते रहे। जिन दिनों इस्लामिया-शाइरीकी बाढ़ ज़ोरोंपर थी, उन दिनों भी आप ऐसी नज़्म कहनेसे बाज़ न आये—

नया आदम तराशूँगा, नई हव्वा[1] बनाऊँगा
नया माबूद[2] ढालूँगा, नया बन्दा[3] बनाऊँगा
इसी मिट्टीसे इक हँसती हुई दुनिया बनाऊँगा[4]

१. मातृ-जाति, २. उपासनाके योग्य देवता, ३. उपासक, पुजारी, ४. पूरी नज़्मके लिए देखें शेरो-शाइरी।

जब सम्प्रदायवादकी आँधी पूरे वेगपर थी और फ़िरक़ा-परस्ती लोगोंकी दीन और ईमान बनी हुई थी। तब भी साग़र बेझिझक फ़र्माते रहे—

देस में प्रीत और प्यारको भरदें, प्रेमसे कुल संसारको भरदें
प्रेमका रस दौड़े रग-रगमें, हो इक प्रेमकी पूजा जगमें[1]

जिन दिनों बहुत-से हिन्दू, हिन्दू-महासभाके झण्डेके नीचे एकत्र हो रहे थे और मुसलमान मुस्लिम-लीगको काबए-मक़सूद समझ रहे थे, उन दिनों भी साग़र अपने शिवालयमें निमग्न थे—

वतन वह वतन महकता शिवाला
वह राहत का मन्दिर, मुहब्बतका काबा
वह मन्दिर है मेरा वतन जिसके अन्दर
हज़ारों ख़ुदा हैं तो लाखों कलीसा
मैं 'साग़र' हूँ अपने वतनका पुजारी[2]

'मनमें और, वचनमें कुछ और'के 'साग़र' क़ायल नहीं। इसे आप गुनाह समझते हैं। जो दिलमें होता है, वही ज़बानपर और फिर नोके-क़लमसे काग़ज़पर उतरता है। भारत-विभाजनके दिनोंमें जब आप अपनी बेग़म और छोटी बच्चीके साथ शरणार्थी कैम्पमें मुसीबतोंके दिन गुज़ार रहे थे। तब एक रोज़ 'जोश' मलीहाबादी आये और उन्होंने आपको इत्तला दी कि 'हमने अपनी मुसीबतोंके बारेमें

अंतरंग और बाह्य

१. यह नज़्म इसी भागमें पृ० ८२ पर दी गई है। २. यह नज़्म इसी भागमें पृ० २४ पर दी गई है।

पं० जवाहरलाल नेहरूको भी ख़त लिखा है और ग़ुलाम मुहम्मद वज़ीरेख़ज़ाना पाकिस्तानको भी।' 'भई पाकिस्तान क्यों लिखा है ?' सागरने पूछा। फ़र्माया—'दोनों तालाबोंमें काँटे डाल दिये हैं, जिस तालाबमें पहले मछली आयगी, वहीं चले जायेंगे।' सुनकर सागर साहबकी ख़मोशी एक सवालिया निशान बनकर रह गई।

सागर चाहते तो मुस्लिम लीगियोंका साथ देकर पाकिस्तानमें अच्छा ओहदा और बड़ा मर्त्तबा हासिल कर सकते थे। 'इस्लाम ख़तरेमें है' का नारा बुलन्द करके ऐशो-आरामकी ज़िन्दगीके साधन जुटा सकते थे। लेकिन उन्होंने मुसलमानोंको मज़हबके जालमें फँसाना धोका और फ़रेब समझा। मुस्लिम-लीगसे प्रभावित अपने ही सगे-सम्बन्धियोंसे तिरस्कृत होते रहे, दुश्नाम सुनते रहे, अपमानके घूँट पीते रहे, धमकियाँ बर्दाश्त करते रहे, प्रलोभनोंको ठुकराते रहे, परन्तु एक पलको भी विचलित न हुए। सागर-जैसे इरादेके मज़बूत और बातके धनीको विचलित करना सम्भव नहीं। जो अपने दुश्मनको कमज़ोर होते देखकर ख़ुश होनेके बजाय कफ़े-अफ़सोस मलते हुए यह कह सकता है—

मलता हूँ हाथ आह कि जब लग रही थी आग
क्यों उस घड़ी मैं भूलके घरमें नहीं रहा

दुनियासे जो पंजाकश होकर जीनेका बढ़ावा देती थी
वह रूहे-सितम[1] दुश्मनमें नहीं, वह ख़ूए-वफ़ा[2] दयारोंमें नहीं

१. अत्याचारी आत्मा, २. प्रत्यपकारकी भावना।

जिसे तूफ़ानोंसे खेलनेमें ही मज़ा आता हो—

वह मेरी जौलाँगाह[1] नहीं, वह मेरा फ़र्शे-ख़्वाब[2] नहीं
जिस दरियामें तूफ़ान नहीं, जिन मौजोंमें गरदाब[3] नहीं

जिसका जीवन ही संघर्षमय हो—

किश्तीको भँवरमें घिरने दे, मौजोंके थपेड़े सहने दे
ज़िन्दोंमें अगर जीना है तुझे, तूफ़ानकी हलचल रहने दे
धारेके मुआफ़िक़ बहना क्या, तौहीने-दस्तो-बाज़ू[4] है
परवर्दए-तूफ़ाँ[5] किश्तीको धारेके मुख़ालिफ़ बहने दे

जो इस तरहका कलाम कहनेका आदी हो—

करता है जुनूने शौक़[6] मेरा महराबे-तलातुममें[7] सज्दे
तूफ़ाँ यह अक़ीदा रखता है, साहिलके परिस्तारोंमें[8] नहीं

इरादेकी मज़बूतीका जब यह आलम हो—

मुझे उठना है इस आतिशकदेसे[9] सरगराँ[10] होकर
हवादिसने[11] बुझाया भी तो फैलूँगा धुआँ होकर

वोह बहार आई, वोह तिनके आशियाँके काँप उठे
शाख़पर पैमानए–बर्क़ो-बला रखता हूँ मैं

---

१. क्रीड़ास्थल, २. शयनकक्ष, ३. लहरोंमें भँवर, ४. बाहुओं और हाथोंका अपमान, ५. तूफ़ानमें पले हुए, ६. उत्साह रूपी उन्माद, ७-८. बाढ़ रूपी मस्जिदोंमें जो सज्दे करता है, वह किनारेको सज्दा नहीं देगा, यानी जो बाढ़ोंसे खेलता है, उसे किनारेपर रहना पसन्द न आयेगा, ९. अग्निस्थानसे, १०. सर ऊँचा करके, ११. मुसीबतोंकी हवाने ।

जो मेरे आशियाँको बनाता था आशियाँ
वह इज़्तराब[1] बर्क़ो-शररमें[2] नहीं रहा

फ़ितरत[3] तेरी तूफ़ान, तबियत तेरी सैलाब[4]
हर गोशए-पैमाना-ओ-साग़रसे[5] गुज़र जा

क़ैदे-हस्तीकी[6] भी तारीफ़ बदल दूँ तो सही
खेल समझे हो मेरा दाख़िले-ज़िन्दाँ[7] होना

मेरी फ़ितरत[8] है तूफ़ाँ और मैं आशोबे-फ़ितरत[9] हूँ
तसव्वुर[10] में भी दामन तर नहीं करता मैं साहिलसे[11]

ऐसा दृढ, संघर्षशील और आपदाओंसे आँखमिचौनी खेलनेवाला 'साग़र' साम्प्रदायिक आततायियोंके आक्रमणोंसे क्यों आतंकित होता और क्यों अपनी देशभक्ति और मानव-प्रेममें बाल आने देता ? जो अपना सर मन्दिर और मस्जिदमें झुकाना भी उचित नहीं समझता, वह वतन-फ़रोशों और मानव-शत्रुओंके समक्ष अपना सर ख़म करता। असम्भव, क़तई नामुमकिन—

दैरो-हरममें[12] सर झुके, सरके लिए यह नंग[13] है
झुकता है अपना सर जहाँ, वह दरो-आस्ताँ[14] है और

१. तड़प, २. बिजली-अंगारोंमें, ३. स्वभाव ४. बहाव, ५. मैख़ानेके हर कोनेसे, ६. जीवनके बन्धनकी, ७. कारागार-प्रवेश, ८. स्वभाव, प्रकृति, ९. स्वभावतः विप्लवी, १०. कल्पनामें, स्वप्नमें, ११. किनारे परके पानीसे, १२. मन्दिर-मस्जिदमें, १३. अपमानजनक, १४. दरवाज़ा और चौखट।

राह जुदा, सफ़र जुदा, रहज़नो-राहबर जुदा[१]
मेरे जुनूने-शौक़[२] की, मंज़िले-बे-निशाँ है और
लज़्ज़ते-दर्दके एवज़, दौलते-दो जहाँ न लूँ
दिलका सकून[३] और है, दौलते-दो जहाँ है और

'साग़र' बड़ी-से-बड़ी मुसीबतमें निराश होना नहीं जानते। आप ख़तरेके वक्त हाथ-पाँव तोड़कर और दिलको निढाल करके नहीं बैठते। आपका जीवन सदैव संघर्षशील रहा है। नैराश्यपूर्ण स्थितियोंमें भी अकर्मण्य होकर बैठ जानेके बदले दुगुने-चौगुने उत्साह और श्रमसे कार्य किया है। भारत-विभाजनके पश्चात् जो मुसलमान यहाँ रह गये थे। अधिकांशमें एक विचित्र प्रकारकी हीनताके भाव उभरने लगे थे। अपने वतनमें रहते हुए भी अपनेको ख़ानाबदोश समझने लगे थे। वे कुछ ऐसे निराश, अकर्मण्य, भयभीत, किंकर्तव्य-विमूढ़ और संज्ञा-हीन-से हो गये थे कि कर्तव्य-अकर्तव्यका बोध तक नहीं रह गया था। साग़रने उन्हें झिंझोड़ते हुए सावधान किया—

आशापूर्ण एवं संघर्षशील

मछलीकी तरह तड़पायेगा, एहसास तुझे पायाबीका[४]
जीना है तो अपने दरियामें इमकाने-तलातुम रहने दे[५]

गुल अपने, ग़ुञ्चे[६] अपने, गुलसिताँ[७] अपना, बहार अपनी
गवारा[८] क्यों चमनमें रहके ज़ुल्मे-बाग़बाँ करलें ?

---

१. लुटेरे और पथ-प्रदर्शक, २. उत्साह रूपी उन्मादकी, ३. चैन, ४. थोड़े पानीका ज्ञान, ५. बाढ़ और तूफ़ान आनेकी सम्भावनाएँ, ६. कलियाँ, ७. वाटिका, ८. सहन।

है रात तो इसके बाद सहर[1], अनवार[2] भी लेकर आयेगी
है सुबह तो, शब[3] तारोंके चमकते हार भी लेकर आयेगी
फिर .ज़ुल्मते-गाहे-आलमपर[4] अनवारका परचम[5] चमकेगा
फिर धूप चढ़ेगी कोठोंपर, फिर नैय्यरे-आज़म[6] चमकेगा

असफलताओंसे निराश होनेवालोंको 'साग़र' उत्साह और प्रेरणा देते हुए फ़र्माते हैं—

जो .ज़र्रे[7] आज तपीदा[8] हैं, इन रेतीले मैदानोंमें
वे सूरज बनकर चमकेंगे आज़ादीके बुस्तानोंमें[9]

नहीं यह नग़मए-शोरे-सलासिल[10]
बहारे-नौके[11] क़दमोंकी सदा[12] है

मुज़्दा[13] ऐ तूफ़ाँके मारे!
वोह झाँके मौजोंसे किनारे

शिकस्ते-दिलको[14] शिकस्ते-हयात[15] क्यों समझें?
है मैकदा[16] जो सलामत हज़ार पैमाने
बुलन्द नग़मए-आदम[17] है बज़्मे-अंजुममें[18]
कब इक सितारए-नौ हँस पड़े ख़ुदा जाने

---

१. सुबह, २. प्रकाश, ३. रात्रि, ४. अंधकारमय विश्वमें, ५. प्रकाशकी ध्वजा, ६. महान् सूर्य, ७. कण, ८. तपे हुए, ९. उद्यानोंमें, १०. बेड़ियोंकी झंकार, ११. नवीन बहार, वसन्त-आगमन, १२. ध्वनि, आवाज़, १३. शुभ समाचार, १४. दिल टूटनेको, १५. जीवनकी हार, १६. मदिरालय, १७. मानव-गीत व्याप्त है, १८. नक्षत्र-मण्डलमें ।

हयात[१] अभी है फ़क़त इक हयातका परतव[२]
अभी हयातको समझा ही क्या है दुनियाने

शबे - तूफ़ाँके[३] घटाटोप अँधेरेकी क़सम
मौज गिरदाब[४] है, गहवारए - अनवारे - सहर[५]
ता-बके[६] आह यह रौंदी हुई राहोंका तवाफ़[७]
इक नया ज़ौक़े-जेहाद[८], एक नया अज़्मे-सफ़र[९]
कर्बे-अफ़लाक[१०] है ऐ दोस्त ! सितारोंका हुजूम
इसी अनवारके गिरदाबसे[११] छूटेगी सहर[१२]
फ़ितरते-बहरने[१३] सदियोंमें तराशा है जिसे
गोशे-क़ुदरतका वोह आवेज़ए-नादिर है गुहर[१४]
तल्ख़ो-नाबीना हक़ायक़[१५] से गराँबार[१६] न हो
यही नाबीना हक़ायक़ तुझे बख़्शेंगे नज़र
ख़ूने-आदम[१७] का यह सैलाब[१८], यह ग़मका महशर[१९]
इसी महशरसे उभरनेको है इक राहगुज़ार[२०]

बीते हुए अच्छे दिनोंके लिए शोक करनेका नाम ज़िन्दगी नहीं। व्यथा-वेदनाको नासूर बना लेना अक़्लमन्दी नहीं—

---

१. जिन्दगी, २. परछाई, ३. तूफ़ानकी रातके, ४. लहर,भँवर हैं, ५. प्रातःकालके प्रकाशका पालना, ६. कबतक, ७. परिक्रमा, ८. सत्यके लिए युद्ध, ९. भ्रमणका इरादा, १०. आकाशकी पीड़ा, ११. प्रकाशके भँवरसे, १२, सुबह, १३. लहरकी प्रकृतिने, १४. क़ीमती मोती ६. कड़वी और अन्धी वास्तविकतासे, १६. निराश, १७. मानव-रक्त, १८. बाढ़, १९. प्रलय, २०. मार्ग।

हे कुफ़्रो-शर[1] तबियतमें मेरी टूटे हुए साज़ोंका मातम
मुतरिबे-फ़र्दा[2] हूँ 'साग़र' माज़ीके अज़ादारोंमें[3] नहीं

बिजली जो गिरे तो ग़म न कीजिए
सौ बार बनेगा आशियाना
परवाज़ कर[4] ऐ असीरे-गुलशन[5] !
हर शाख़ है तेरा आशियाना

मृत्यु अपनी गोदमें ले ले तब भी उम्मीदका दामन छोड़ना मर्दोंको उचित नहीं—

मेरी ख़ाकपर साज़े-यकतार लेकर
उम्मीद अब भी इक गीत-सा-गा रही है

'साग़र' के आत्म-विश्वासके क्या कहने—

मरहबा[6] ऐ जज़्बए-ख़ुद ऐतमादी[7] मरहबा
वो हिला तूफ़ाँ का दिल, किश्ती रवाँ[8] होने लगी

इन्हीं बजते हुए पत्तोंसे गुलशन फूट निकलेंगे
बहारोंका यह मातम सिर्फ़ अंजामे-ख़िज़ाँ तक है

१. अधर्म-पाप, २. भविष्य कालका गायक, प्रतीक्षक, ३. भूतकालके लिए रोने-झींकनेवालोंमें नहीं, ४. उड़ानभर, ५. वाटिकाके बन्दी, ६. शाबास, मुबारकबाद, ७. आत्म-विश्वासकी दृढ़ता, ८. चलने लगी ।

शऊरे-इन्साँ में रफ़्ता-रफ़्ता नई कमानी-सी खुल रही है
मिसाले-ख़ुर्शीद[1] उभर रहा है निराला अफ़सूँ[2] नया फ़साना[3]
जुनूने-तामीर[4] है सलामत तो बर्क़ो-बाराँ[5] का हमको क्या ग़म
कि हम बना लेंगे बर्क़ो-बाराँ के दोशपर[6] अपना आशियाना
न अहदे-माज़ीकी यह रवायत[7] न आज और कलकी यह हिकायत
हयात[8] है हर क़दम पै 'साग़र' नई हक़ीक़त नया फ़साना

साग़रका सुरुचिपूर्ण रहन-सहन, व्यवस्थित जीवन, हर कार्य नियमित, व्यवहारमें सहृदयता एवं सावधानता, और जिन्दगीके प्रत्येक मोड़पर दक्षता-जागरूकता देखकर मुझे कुछ ऐसा आभास हुआ कि 'साग़र' सिर्फ़ शाइर और अदीब ही नहीं, चतुर दुनियादार भी हैं। वे हर घर-घाटसे वाक़िफ़ मालूम होते हैं। शाइरी और अदबमें तो नाम कमाया ही, दुनियावी ऐशो-आरामके लिए भी अच्छे ख़ासे हाथ-मारे हैं। मैंने अपना अभिप्राय बेगम साग़रपर निःसंकोच प्रकट किया तो आप बोलीं—"मैं फ़ख्रके साथ कह सकती हूँ कि मेरे शौहर इतने बड़े आदर्शवादी और इतने बड़े बाग़ी (विप्लवी) इनसान हैं कि वे उन तरीक़ोंको इख़्तियार ही नहीं कर सकते, जिनसे हाल (वर्तमानकाल) सँवारता है और फ़र्दा (भविष्य) के मुखड़ेपर नूर आता है। जिन बातोंसे दुनिया बन सकती थी, उस तरफ़ उन्होंने आँख उठाकर भी नहीं देखा।

अवसरवादी नहीं

१. सूर्यके समान, २. जादू, ३. क़िस्सा, ४. निर्माणकी धुन, ५. बिजली-वर्षाका, ६. कन्धेपर, ७. भूतकालीन युगकी किंवदन्तियाँ, ८. जीवन, ज़िन्दगी।

जिस तरफ़ कश-म-कश थी, आँधियाँ थीं, तूफ़ान थे, ख़ारो-ज़ार थे वे उसी तरफ़ दीवानावार बढ़ते रहे। जब हिन्दुस्तान तक़सीम हो गया, तहज़ीब, ज़बान, अजसाम और रूहें (शरीर और आत्माएँ) बँट गईं तो ग़ैर मुस्लिम शाइरे-इस्लाम बन गये। वे लोग मुसलमानोंकी तहज़ीबो-अदबके मुहाफ़िज़ (रक्षक) बन गये, जो अपने अक़ीदे और अम्ल (विश्वास और चरित्र) किसी लिहाज़से कोई तआल्लुक़ इस्लाम और उसकी रवायात (परम्परा) से नहीं रखते थे। इस बहरूपमे उनकी शख़्सियत बन गई, दुनिया बन गई, ज़िन्दगी बन गई। लेकिन इस मरहलेपर भी मेरे शौहर मुसलमानोंको धोका न दे सके। इस वक़्त भी वे दुनिया न कमा सके।" तब भी उन्होंने यही कहा—

रिन्द हूँ कब दूसरेका आसरा रखता हूँ मैं
आँखमें साग़र नज़रमें मैकदा रखता हूँ मैं

सागर साहब प्रकटमें तो बहुत मधुर, सहृदय, हँसमुख और मिलनसार मालूम होते हैं। माफ़ कीजिएगा मैं यह जानना चाहता हूँ कि उनका आम बर्ताव सबके साथ कैसा रहता है? बेगम साग़र मेरे सामने फलोंकी तश्तरी रखते हुए कहने लगीं—

सहृदयता और स्वाभिमान

"साग़र बहुत ख़ुश इख़लाक़ और मिलनसार हैं। उनमें ख़ुदपरस्ती (अहम्) और घमण्ड नामको नहीं। मुझे मालूम है कि वे अपने दफ़्तरके चपरासियोंको भी सलाम करनेमें तकल्लुफ़ नहीं करते। वे घर और बाहर हँसमुख, मिलनसार, मुनक्सिर (नम्र), संजीदा, शरीफ़, बा-उसूल और बा-अदब इंसान हैं। उनमें पुरानी वज़-अदारी और ख़ुशएतवारी है। बराबरीके जज़्बेके साथ वे हिफ़्ज़े-

मरातिब (पद और श्रेणीके अनुसार व्यवहार) के भी क़ायल हैं। यह बात नहीं कि वे बड़ोंकी बड़ाईसे घबराते हैं या उसे मानते नहीं। दरअस्ल वे बड़ोंके छोटेपनसे ख़ौफ़ खाते हैं। कमज़र्फ़ी और हिमाक़तकी बातोंसे डरते हैं। छोटा हो या बड़ा, जिस किसीको वे ग़ैर संजीदा और बेअदब पाते हैं, उस वक़्त तो उसे सहन कर लेते हैं, लेकिन फिर उसे पास नहीं फटकने देते। वे दिलाज़ार और नख़वत पसन्द (हृदयको ठेस पहुँचानेवाले और घृणा करनेवाले) भी नहीं। इस क़िस्मके लोगोंसे वे अपनेको महफ़ूज़ (सुरक्षित, अलग) करनेकी कोशिश करते हैं, ताकि उनसे कोई ताल्लुक़ न रहे। मैं कभी-कभी सोचती हूँ तो इक सन्नाटा-सा मेरे हवासपर छा जाता है कि तहरीके-आज़ादीके दौरमें शाइरके चेहरेपर जो हाला (प्रकाशका घेरा) था, वह टूट चुका है और वही हाला अब हुक्काम और वज़ीरोंके चेहरोंपर नुमायाँ है। शाइर अपनी बुलन्दियोंसे गिर चुके हैं। आज ख़िताब, मनसब, (पद), ज़र-परस्ती (धन-लिप्सा) उनके फ़नका मक़सूद (कलाका उद्देश्य) है, और यह मक़सूद उन लोगोंका है, जो तहरीके-आज़ादीके ज़मानेमें नेशनलवारफ्रण्ट (द्वितीय महायुद्ध) के मुशाअरोंमें ग़ज़लें गाते-फिरते थे। या अंग्रेज़ोंकी फ़ाइलें उठाते-फिरते थे। जिनकी परछाईं भी उन मोर्चोंपर नहीं पड़ी, जहाँ हथकड़ियाँ थीं, बेड़ियाँ थीं, ज़ंजीरें थीं, फाँसियाँ थीं और सनसनाती गोलियाँ थीं। आज वही यह दावा करते हैं कि जंगे-आज़ादीके सफ़े-अव्वलके सूरमाँ हैं।"

साग़र साहब शामके सात बजे रेडियो स्टेशनसे तशरीफ़ ले आये थे। इसलिए बेगम साग़र तो नाश्ते वग़ैरहके इन्तज़ामके

लिए अन्दर चली गईं और मैं बैठा हुआ साग़र साहबकी ज़ज्बए-ख़ुद्दारीके यह शेर गुनगुनाने लगा—

फ़क्रको[1] मेरे बैर है जज़्बए-इंकसारसे[2]
जिंसे-जुनूँ भी हो तो मैं भीक न लूँ बहारसे[3]
कैफ़े-ख़ुदीने[4] मौजको[5] किश्ती बना दिया
फ़िक्रे-ख़ुदा है अब न ग़मे-नाख़ुदा[6] मुझे

जज़्बए-ख़ुद्दारीमें साग़र इतने आगे बढ़ जाते हैं कि वे शाइरी की परम्पराके अनुसार दरे-महबूबपर सज्दा करनेके बजाय, महबूबको अपने दरपर बा-तमन्ना देखना चाहते हैं—

अब नाज़े-आशिक़ीको है, उस दिनका इन्तज़ार
वोह आयें मेरे दर पै तमन्ना लिये हुए

शेर कहनेका ढंग

रेडियो-स्टेशनसे आते ही साग़र साहब मेरे बराबर कोचपर बैठ गये और मुसकराते हुए पूछा—"कहिए गोयलीय साहब ! आपका कुछ काम हुआ" मैंने अर्ज़ किया कि "मुझे मोहतरिमा भाभी साहिबा और भाईजानसे[7] काफ़ी जानकारी हासिल हुई है। आप दफ़्तरसे हारे-थके आये हैं। पहले ज़रूरियातसे फ़ारिग़ होलें तो वे फ़िक्रीसे बातें की जायें।" "बहुत बेहतर" कहकर साग़र साहब अन्दर

१. दरिद्रताको, निर्धनताको, २. हीन-भावनासे, भिक्षुक मनोवृत्तिसे, ३. आशिक़ोंकी उन्माद जैसी प्रिय वस्तु भी मैं बहारसे भीक लेनेको तैयार नहीं, ४. आत्मलीनताने, ५. लहरोंको, ६. मल्लाहके न होनेका दुःख, ७. साग़र साहबके छोटे भाई हज़रत शहरयारख़ाँ 'परवेज़' जो कि बहुत अच्छे शाइर और अदीब हैं।

चले गये और आध घण्टेमें ही तरो-ताज़ा होकर पायजामा और काश्मीरी चोग़ा पहने हुए तशरीफ़ ले आये। सामने रखे हुए कामदार पानदानसे एक पान खाया और सिगरेट जलाकर अपने मख़सूस अन्दाज़में मुसकराते हुए सामने कोचपर बैठ गये। मैंने अर्ज़ किया—"साग़र साहब, आप शेर किस आलममें कहते हैं और कैसे कहते हैं ?"

साग़र साहबने सिगरेटका कश खींचते हुए फ़र्माया—"मैं जब चाहूँ शेर कह सकता हूँ। नज़्म-ग़ज़ल कहने या मज़ामीन लिखनेके लिए तनहाई, पान और ठण्डे पानीके अलावा मुझे किसी एहतमामकी ज़रूरत महसूस नहीं होती। शेर कहने या मज़ामीन लिखनेका मेरा तरीक़ा बहुत आसान है। मैं ख़ाली कभी नहीं बैठ सकता, मैं या तो काम करता रहता हूँ या कुछ-न-कुछ सोचता रहता हूँ। यही सोचना जब अपनी सही मंज़िलपर पहुँच जाता है तो मैं उसे नज़्म या नस्रकी शक्लमें काग़ज़पर उतार लेता हूँ। अक्सर एक ही बैठकमें नज़्म, फ़ीचर, ग़ज़ल लिख लेता हूँ। काग़ज़पर उतारनेके बाद उसी रोज़ २-३ बार नज़रसानी कर लेता हूँ।"

वार्तालापमें बहुत-से दिलचस्प मौज़ू उभर आये, अभी आपके यहाँ किसीने डिनर नहीं लिया था, और रातके ११ बज गये थे। अतः इच्छा न होते हुए भी मैंने इजाज़त तलब की। बेगम साग़र साहबका आग्रह था कि मैं भी उन्हींके यहाँ रातका खाना खाऊँ, मगर रातको खानेसे परहेज़ होनेके कारण नम्रतापूर्वक असमर्थता प्रकट करते हुए विदा हुआ।

डालमियानगर-बिहार
२६ नवम्बर १९५९

उर्दू-शाइरीका प्रामाणिक

इतिहास, तुलनात्मक अध्ययन, साहित्यिक-विवेचन

और

प्रारम्भसे वर्त्तमान कालीन तकके शाइरोंका

सर्वश्रेष्ठ कलाम और परिचय

शेर-ओ-शाइरी [सर्वश्रेष्ठ ३१ शाइरोंका कलाम]

शेर-ओ-सुख़न पाँच भाग [प्रारम्भसे १९५९ तककी ग़ज़लपर अनुसन्धान]

शाइरीके नये दौर चार भाग [१९२० से १९५९ तककी नवीन शाइरी]

शाइरीके नये मोड़ चार भाग [प्रगतिशील और प्रयोगवादी शाइरी]

उक्त ग्रन्थोंके ४६०० पृष्ठोंमें जिन ख्यातिप्राप्त १८६ शाइरोंका परिचय एवं कलाम दिया गया है, उनकी वर्णानुक्रम सूची आगेके पृष्ठोंमें दी गई है ।

शाइरोंकी वर्णा-क्रम सूची

नाम शाइर	शेरो-शाइरी पृ०	शेरो-सुखन भाग	शाइरीके दौर	शाइरीके मोड़
[अ]				
अकबर इलाहाबादी	२९४			
अकबर हैदरी		चौथा		
अख़्तर		पहला		
अख़्तर वाजिद अलीशाह		पहला		
अख़्तर अन्सारी				दूसरा
अख़्तर शीरानी	५०३		चौथा	
अख़्तर जाँनिसार				तीसरा
अख़्तर हरीचन्द			दूसरा	
अज़ीज़ लखनवी		दूसरा		
अदम			चौथा	
अनवर		पहला		
अफ़सोस		पहला		
अफ़सर मेरठी			चौथा	
अब्दुल्ला क़ुतुबशाह		पहला		
अब्दुल हसन तानाशाह		पहला		
अमजद अलीशाह		पहला		
अमजद हैदराबादी		तीसरा		
अम्न लखनवी			दूसरा	

नाम शाइर	शेरो-शाइरी पृष्ठ	शेरो-सुख़न भाग	शाइरीके दौर	शाइरीके मोड़
दाऊद		पहला		
दाग़	२५३	,,		
,,		चौथा		
दिल शाहजहाँपुरी		दूसरा		
दीदम बेगम		पहला		
[न]				
नज़र लखनवी		दूसरा		
नज़्म तबातबाई		,,		
नज़ीर	१७७		दूसरा	
नदीम क़ासिमी				दूसरा
नसीम दयाशंकर		पहला		
नसीम असग़र अली ख़ाँ		,,		
नसीम भरतपुरी		चौथा		
नसीर		पहला		
नसीरुद्दीन हैदर		,,		
नाज़ी		,,		
नातिक़ लखनवी		दूसरा		
नातिक़ गुलावठी		चौथा		
नासिख़		पहला		
निज़ाम रामपुरी		,,		
नूह नारवी		चौथा		
[फ]				
फ़ाइज़		पहला		

नाम शाइर	शेरो-शाइरी पृष्ठ	शेरो-सुखन भाग	शाइरीके दौर	शाइरीके मोड़
सालिक क़ुरबान अली		पहला		
साहिर लुधियानवी	५५७			चौथा
साहिर अमरनाथ		तीसरा		
सिराज		पहला		
सीमाब अकबराबादी	४०५	चौथा		
सोज़		पहला		
सौदा		,,		
[ह]				
हफ़ीज़ जालन्धरी	४५६		दूसरा	
हफ़ीज़ जौनपुरी		दूसरा		
हविस		पहला		
हसन देहलवी		,,		
हसन बरेलवी		चौथा		
हसरत		पहला		
हसरत मोहानी	५८४	तीसरा		
हातिम		पहला		
हाली	२७४	,,		
हिजाब बेगम		,,		
हिदायत		,,		
हूर बेगम		,,		
हैदरी बेगम		,,		

●

विषय-सूची

शेरो-शाइरी, शेरो-सुख़नके पाँचों भागोंमें, शाइरीके नये दौर और नये मोड़में जिन महत्त्वपूर्ण-आवश्यक विषयोंपर विवेचन हुआ है, उनकी संक्षिप्त सूची यहाँ दी जा रही है। इस सूचीके अतिरिक्त बहुत-से उपयोगी अंगोंपर शाइरोंके परिचय एवं कलाममें भी व्याख्याएँ की गई हैं, उनकी सूची विस्तार-भयसे यहाँ नहीं दी जा रही है। वह प्रत्येक पुस्तकके प्रारम्भ-की विषय-सूचीमें देखी जा सकती है।

शेरो-शाइरी

शेरो-सुख़न

शाइरीके नये दौर

पहला दौर

दूसरा दौर

प्राथमिक

[नज़्मका इतिहास]

तीसरा दौर

चौथा दौर

शाइरीके नये मोड़

पहला मोड़

नई-लहर

नवीन धारा

बज़्मे-अदब

दूसरा मोड़

तीसरा और चौथा मोड़

[प्रेसमें]

श्री गोयलीयजीकी अन्य कृतियाँ

गहरे पानी पैठ • जिन खोजा तिन पाइयाँ • कुछ मोती कुछ सीप

पृ० २२४ मू० ढाई रु० पृ० २१६ मू० ढाई रु० पृ० १४४ (सचित्र) मू० ढाई रु०

गुरुजनोंके चरणोंमें बैठकर जो सुना
इतिहास और धर्मग्रन्थोंमें जो पढ़ा
और हियेकी आँखोंसे जो देखा

आज—श्री गोयलीयजीने जिन रत्नोंको हिन्दी संसारमें सुलभ किया है, निश्चय ही उनसे हमारा जीवन सुखी और सम्पन्न हो सकता है।

धर्मयुग—ऐसी कथाओंकी सबसे बड़ी विशेषता तो यह होती है कि वे बिना किसी इरादेके जीवनके अनुभवोंकी नोकसे अनायास चिनगारीकी तरह फूट पड़ती हैं। यह अनायासता ही ऐसी कथाओंकी सचाई और सफलताकी कसौटी है।

सम्मेलन-पत्रिका—जीवनकी छोटी-मोटी घटनाएँ, जिन्हें हम प्रायः उपेक्षित समझते हैं, इन कहानियोंके द्वारा हमें सजग और सचेत बनाती हुई, नई योजना, नई गति और नई राहकी ओर बरबस खींचती हैं।

जयहिन्द—सभी चित्रण मनोहर और मनोरंजक हैं। वास्तवमें संग्रहके लिए लेखक बधाईका पात्र है।

आल इण्डिया रेडियो, लखनऊ—रचनाओंमें ऐसी अनेक घटनाओंकी व्यक्ति हुई है जो मानवका शिष्टरूप पाठकोंके समक्ष व्यक्त करती हैं।

नया-समाज—गोयलीयजीकी भाषा टकसाली और शैली रोचक है। साथ ही विषयकी गहराईके कारण चित्र बड़े मार्मिक और उत्प्रेरक हुए हैं।

नई-धारा—जीवनमें इन उपदेशोंको जो उतार सके उसका क्या कहना, जो उसके लिए सचेष्ट रहे वह भी स्तुत्य है।

जैन-जागरणके अग्रदूत पृ० ६२० मूल्य ५ रु०

जीवन-परिचय, शब्द-चित्र और संस्मरण